धींधवाल पब्लिकेशन

DHP-01

Dhindhwal Publication

निःशुल्क नवीनतम राजस्थान मानचित्र

नवगठित जिलों के अनुसार

राजस्थान का भूगोल एवं अर्थव्यवस्था

(7 वां संशोधित संस्करण) 2024-25

- राजस्थान बजट– 2024-25
- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2023-24
- नवीनतम आंकड़े व योजनाएँ
- रंगीन मानचित्र
- गत परीक्षाओं के प्रश्नों सहित

होशियार सिंह
उप निरीक्षक, राजस्थान पुलिस

धींधवाल पब्लिकेशन

परीक्षा में सफलता हेतु इन पुस्तकों का अध्ययन करें

हमारे प्रकाशन की अन्य पुस्तकें

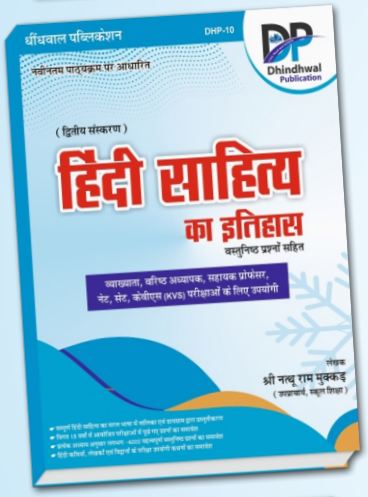

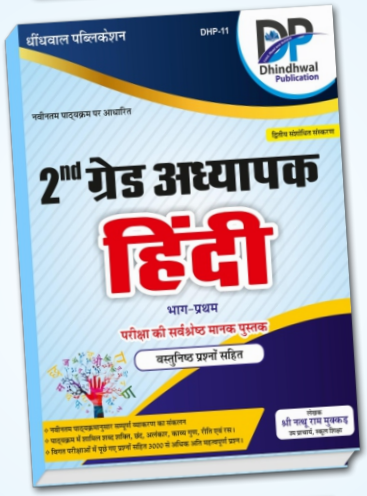

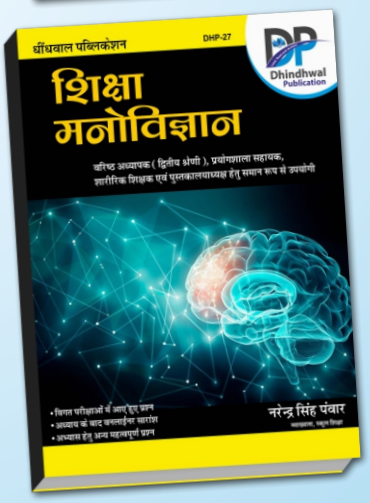

धींधवाल पब्लिकेशन

बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

धींधवाल पब्लिकेशन

परीक्षा में सफलता हेतु इन पुस्तकों का अध्ययन करें

हमारे प्रकाशन की अन्य पुस्तकें

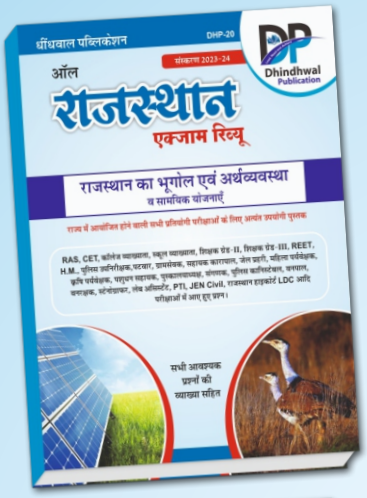

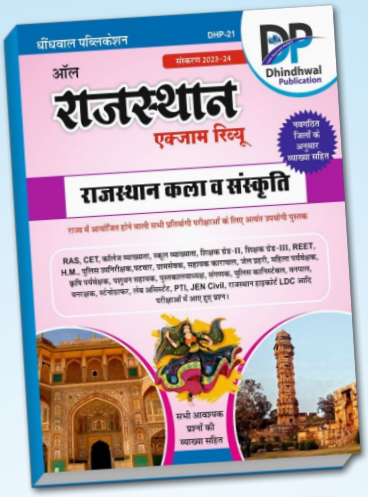

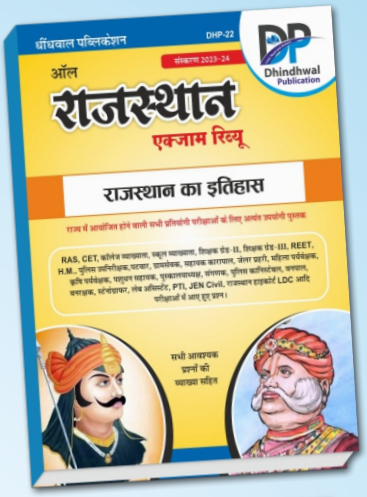

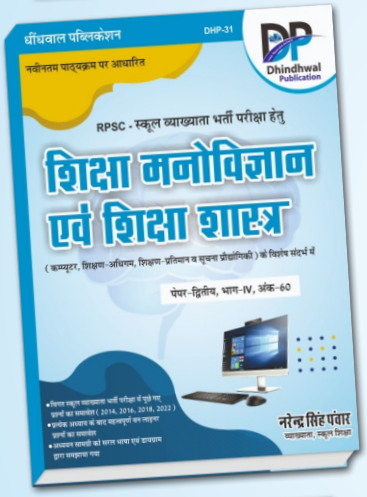

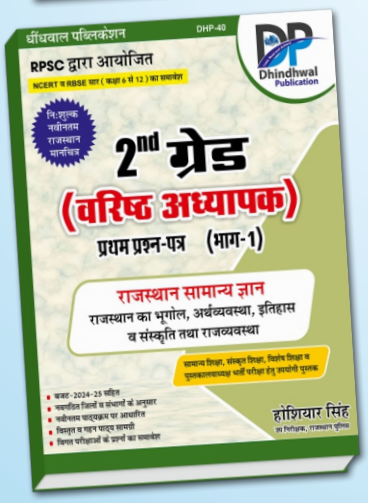

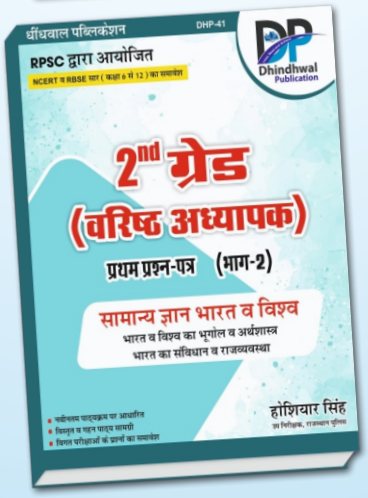

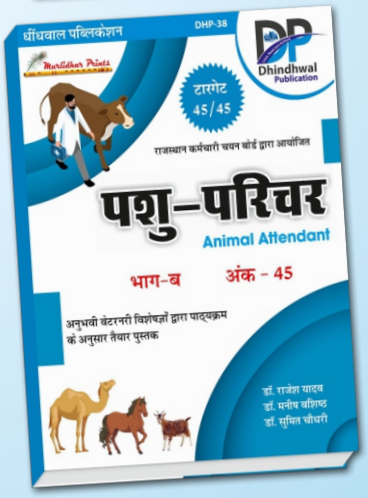

धींधवाल पब्लिकेशन

बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

Dhindhwal Publication

होशियार सिंह

उप निरीक्षक, राज. पुलिस

: लेखक परिचय :

होशियार सिंह का जन्म ग्राम रतनपुरा तहसील राजगढ़ जिला चुरू (राजस्थान) में हुआ। आपने स्नातक करने के दौरान ही वर्ष 2003 से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी आरम्भ की, राजस्थान पुलिस (जिला बीकानेर वर्ष 2008) में कानिस्टेबल के पद पर चयन के साथ ही 2008 में तृतीय श्रेणी अध्यापक के पद पर चयन हुआ। आपने 5 वर्ष तक जिला राजसमंद में तृतीय श्रेणी अध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दी, तत्पश्चात् द्वितीय श्रेणी शिक्षक (हिन्दी) 2013 में चयन होने पर आपने राजकीय माध्यमिक विद्यालय, कतरियासर (बीकानेर) में अपनी सेवाएँ दी, तत्पश्चात् राजस्थान पुलिस उपनिरीक्षक 2014 में चयन हुआ, वर्तमान में आप राजस्थान पुलिस में उप निरीक्षक हैं, आपको राजस्थान की विभिन्न प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थानों में अध्यापन व मार्गदर्शन का गहन अनुभव है।

लेखक की अन्य पुस्तकें

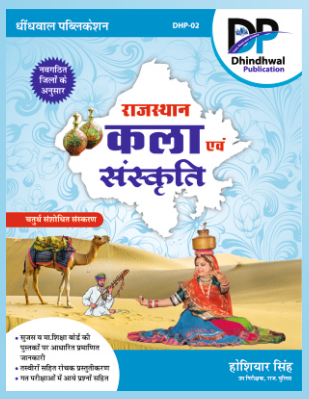

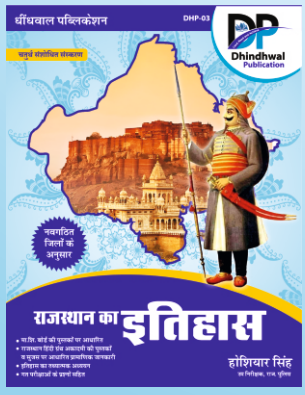

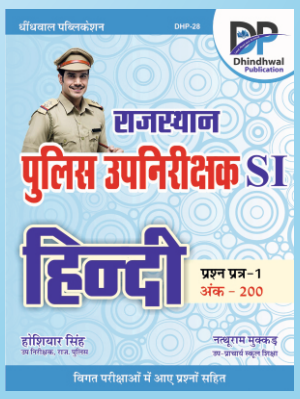

धींधवाल पब्लिकेशन
बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

धींधवाल पब्लिकेशन

प्रस्तुत करते हैं-

नवगठित जिलों के अनुसार

Dhindhwal Publication

राजस्थान का भूगोल

एवं अर्थव्यवस्था

- नवगठित जिलों के अनुसार
- नवीनतम आँकड़ों व रंगीन मानचित्रों सहित
- राजस्थान बजट-2024 व कृषि बजट-2024
- राजस्थान आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट : 2023-24 पर आधारित आँकड़े
- वर्ष 2023-24 की परीक्षाओं में आए हुए प्रश्नों का समावेश
- अध्यायवार व्यवस्थित पठन सामग्री

RAS, कॉलेज व्याख्याता, स्कूल व्याख्याता, शिक्षक IInd ग्रेड, शिक्षक IIIrd ग्रेड, REET, CET, H.M., पुलिस उपनिरीक्षक, पटवार, ग्रामसेवक, राजस्थान पुलिस कानिस्टेबल, राजस्थान हाइकोर्ट, वनरक्षक, वनपाल, पुस्तकालयाध्यक्ष व राजस्थान की अन्य सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए समान रूप से उपयोगी पुस्तक।

धींधवाल पब्लिकेशन
B-22, वैष्णो विहार, बीकानेर
मो.- 8306733800

लेखक :- होशियार सिंह
(उप निरीक्षक, राजस्थान पुलिस)

प्रकाशक:-

धींधवाल पब्लिकेशन

B-22, वैष्णो विहार, बीकानेर

मो.- 8306733800

- Dhindhwal Publication

- धींधवाल पब्लिकेशन

- Dhindhwal Classes

- @Publication-DP

- Dhindhwal Publication

बुक कोड- DHP-01

© सर्वाधिकार- लेखक

मूल्य- ₹ 580.00

सातवाँ संशोधित संस्करण

■ संस्करण : 2024-25

मुद्रक-

पिंकसिटी ऑफसेट, जयपुर

इस पुस्तक के किसी भी अंश का लेखक तथा प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना मुद्रित करना, कराना तथा इस पुस्तक की व इसके किसी भाग की फोटोकॉपी, स्केनिंग, इलेक्ट्रोस्टेट, मशीनी टंकण अथवा किसी भी तरीके से पुन: उपयोग करना, पी.डी.एफ बनाकर वाट्सअप या टेलीग्राम आदि पर प्रसारित करना पूर्णत: वर्जित है।

इस पुस्तक को तैयार करने में पूर्ण सावधानी बरती गई है पुस्तक में दिये गये तथ्य व विवरण उचित व विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त किये गये हैं, फिर भी इसमें किसी प्रकार की त्रुटि, गलती, कमी अथवा लोप रह जाना संभव है। अत: ऐसी किसी भी त्रुटि, गलती, कमी अथवा लोप के कारण हुई क्षति अथवा क्लेश के लिए लेखक, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक, विक्रेता व कर्मचारीगण का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा। आप उपर्युक्त सभी शर्तों को स्वीकार करते हुए स्वेच्छा से पुस्तक खरीद रहे हैं अत: दायित्व आपका स्वयं का होगा। सभी प्रकार के परिवादों का न्यायिक क्षेत्र बीकानेर होगा।

भूमिका

प्रिय परीक्षार्थियों,

राजस्थान का भूगोल एवं अर्थव्यवस्था के प्रथम छः संस्करणों की शानदार सफलता के बाद इस पुस्तक का 'सातवाँ नवीनतम संस्करण' आपके समक्ष प्रस्तुत है। प्रस्तुत पुस्तक राजस्थान की सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के पाठ्यक्रम को आधार बनाकर अद्यतन की गई है।

☞ पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ–

- पुस्तक को राजस्थान के नवगठित जिलों के अनुसार अद्यतन किया गया है।
- पुस्तक की भाषा शैली सरल, सहज और ग्राह्य बनायी गई है।
- राजस्थान बजट : 2024–25 व कृषि बजट : 2024–25
- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट : 2023–24 पर आधारित आँकड़ें
- सीमाओं, भौगोलिक विभाजन, नदियों, परिवहन व जलवायु प्रदेशों के रंगीन मानचित्र
- वर्ष 2023–24 में हुई विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में आए हुए प्रश्नों का समावेश
- प्रत्येक अध्याय के बाद सारगर्भित विवरण व सारणियाँ
- इस पुस्तक को पढ़ने के बाद राजस्थान का भूगोल के लिए किसी कोचिंग की आवश्यकता नहीं होगी।

मैं ईश्वर और अपने माता–पिता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। मैं अपने सहयोगियों मुकेश कुमावत, लालचन्द जाट, विक्रम सिंह, धर्मेन्द्र बिशु, महेश भादु, विष्णु पुरी (टाइपिस्ट), मोहम्मद रफीक (टाइपिस्ट), असलम अली (टाइपिस्ट), यशवंत (टाइपिस्ट) का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके अथक परिश्रम से पुस्तक को अद्यतन करना संभव हो पाया।

पुस्तक के आगामी संस्करणों में इसे और अधिक उपयोगी बनाने के लिए आपके अमूल्य सुझावों का हार्दिक स्वागत है।

''इंसान असफल तब नहीं होता जब वह हार जाता है,
असफल तब होता है जब वो ये सोच ले कि अब वो जीत नहीं सकता।''

होशियार सिंह
उप निरीक्षक, राजस्थान पुलिस
मो.– 8118833800

अनुक्रमणिका

1. राजस्थान: एक सामान्य परिचय पेज नं. 1–13

- राजस्थान का नामकरण
- राजस्थान की स्थिति
- सीमाएँ एवं विस्तार
- जिलों का निर्माण एवं सम्भागीय व्यवस्था
- जिलों का आकार
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

2. राजस्थान का भौतिक विभाजन पेज नं. 14–30

- पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश
  - शुष्क मरूस्थलीय प्रदेश
  - अर्द्धशुष्क मरूस्थलीय प्रदेश
  - मरूस्थलीय शब्दावली
- अरावली पर्वतीय प्रदेश
- पूर्वी मैदानी प्रदेश
- दक्षिणी पूर्वी पठारी प्रदेश
- राष्ट्रीय भूवैज्ञानिक स्मारक स्थल
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

3. प्राचीन नाम व भौगोलिक उपनाम पेज नं. 31–34

4. राजस्थान में जल संरक्षण एवं जल प्रबन्धन पेज नं. 35–37

5. राजस्थान की जलवायु पेज नं. 38–48

- राजस्थान की जलवायु की विशेषताएँ
- जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक
- ग्रीष्म ऋतु
- तापमान, वाष्पोत्सर्जन, हवाएँ
- वर्षा ऋतु
- दक्षिणी पश्चिमी मानसून
- बंगाल की खाड़ी शाखा
- अरब सागर की शाखा
- आर्द्रता
- शीत ऋतु, मावठ
- राजस्थान के जलवायु प्रदेश
- ब्लादिमीर कोपेन का जलवायु वर्गीकरण
- थॉर्नवेट का जलवायु वर्गीकरण
- ट्रिवार्था का जलवायु वर्गीकरण
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

6. राजस्थान में मिट्टियाँ, अपरदन व मरूस्थलीकरण पेज नं49–58

- राजस्थान की मिट्टियाँ
- मिट्टी से संबंधित समस्याएँ
- मृदा अपरदन, जल अपरदन, अवनालिका अपरदन
- सेम की समस्या, भूमि संरक्षण
- मरुस्थलीकरण, प्रमुख कारण व रोकने के उपाय
- भूमि से सम्बन्धित शब्दावली
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

7. राजस्थान में सूखा, अकाल व आपदा पेज नं. 59–60

- प्रमुख अकाल व टिड्डी आक्रमण
- सूखे व अकाल से सम्बन्धित सरकारी योजनाएँ
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

8. राजस्थान की वन सम्पदा एवं पर्यावरण पेज नं. 61–75

- वनों का प्रशासनिक वर्गीकरण
- ISFR रिपोर्ट 2021
- वनों का जलवायु के आधार पर वर्गीकरण
- प्रमुख वन उपजें
- वानिकी परियोजनाएँ
- वनों से सम्बन्धित संस्थाएँ
- प्रसिद्ध पार्क व उद्यान
- वानिकी पुरस्कार
- राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

9. जैव विविधता, वन्य जीव एंव अभयारण्य पेज नं.76–91

- जैव विविधता व रामसर अभिसमय स्थल
- वन्यजीव संरक्षण, चिंकारा व गोडावण
- राजस्थान के राष्ट्रीय उद्यान व टाइगर प्रोजेक्ट
- वन्य जीव अभयारण्य
- मृगवन, जन्तुआलय व जैविक उद्यान
- कन्जर्वेशन रिजर्व
- आखेट निषिद्ध क्षेत्र एवं जिलेवार वन्यजीव
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

10. राजस्थान में पशुपालन पेज नं 92–106

- 20वीं पशुगणना–आँकड़े
- प्रमुख पशु नस्लें
- पशु मेले
- दुग्ध व डेयरी विकास
- पशुपालन संस्थाएँ
- पशुधन विकास की योजनाएँ
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

11. राजस्थान में कृषि पेज नं. 107–132

- राजस्थान में कृषि की विशेषताएँ
- राजस्थान में कृषि सम्बन्धी नवीनतम आंकड़ें
- प्रमुख कृषि पद्धतियाँ
- राज्य की प्रमुख फसलें
- खाद्यान्न फसलें
- दलहनी फसलें
- तिलहनी फसलें
- वाणिज्यिक फसलें
- राजस्थान में कृषिगत संस्थाएँ
- राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालय
- कृषि विकास की योजनाएँ
- कृषि विकास हेतु किये गये नवीनतम प्रयास
- राजस्थान के कृषि जलवायु प्रदेश
- जैविक खेती, 10 वीं कृषि गणना
- राजस्थान में भू उपयोग, उर्वरक उपभोग
- विशिष्ट कृषि जिन्स मंडियाँ, कृषि क्रांतियाँ
- कृषि बजट–2024
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

12. राजस्थान में अपवाह व नदियाँ पेज नं. 133–151

- राजस्थान का अपवाह तंत्र
- बंगाल की खाड़ी का अपवाह तंत्र
- अरब सागर का अपवाह तंत्र
- आन्तरिक अपवाह तंत्र
- प्रमुख नदी प्रणाली और उनका जलग्रहण क्षेत्र
- त्रिवेणी संगम, जल प्रपात, नदियों किनारे शहर
- नदियों किनारे दुर्ग व सभ्यताएँ
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

13. राजस्थान की झीलें व बावड़ियाँ पेज नं. 152–162

- झीलों के प्रकार
- खारे पानी की झीलें
- मीठे पानी की झीलें (सम्भाग वार)
- राजस्थान की प्रमुख बावड़ियाँ
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

14. प्रमुख बाँध, सिंचाई परियोजनाएँ व जल संसाधन योजनाएँ पेज नं. 163–178

- राजस्थान में प्रमुख जल स्रोत, सिंचाई सम्बन्धी आँकड़ें
- बहुउद्देशीय सिंचाई परियोजनाएँ
- वृहद् एवं मध्यम सिंचाई परियोजनाएँ
- प्रमुख बाँध एवं तालाब
- जल संसाधन सम्बन्धी योजनाएँ
- प्रमुख संस्थाएँ एवं डार्क जोन
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

15. राजस्थान की नहरें पेज नं. 179–184

- इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना
- अन्य प्रमुख नहरें
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

16. राजस्थान के उद्योग पेज नं. 185–208

- राजस्थान का औद्योगिक परिदृश्य, निर्यात सम्बन्धी आंकड़ें, औद्योगिक नीतियाँ
- केन्द्रीय औद्योगिक उपक्रम
- राजस्थान के प्रमुख उद्योग
- प्रमुख औद्योगिक संस्थाएँ
- प्रमुख औद्योगिक बस्तियाँ व सहकारी उपक्रम
- विशेष औद्योगिक पार्क व कॉम्प्लेक्स
- पचपदरा रिफायनरी, भौगोलिक चिन्हीकरण
- उद्योगों को बढ़ावा देने वाली योजनाएँ
- दिल्ली मुम्बई इण्डस्ट्रीयल कॉरिडोर (DMIC)
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

17. राजस्थान के खनिज संसाधन पेज नं. 209–229

- खनिजों का वर्गीकरण
- धात्विक खनिज, अधात्विक खनिज
- ईंधन खनिज

- खनिज तेल व प्राकृतिक गैस की पाईप लाईन
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

18. राजस्थान में ऊर्जा संसाधन पेज नं. 230–245

- ऊर्जा के परम्परागत व गैर परम्परागत स्रोत
- राजस्थान की जल विद्युत परियोजनाएँ
- राजस्थान की ताप विद्युत परियोजनाएँ
- गैस व तरल ईंधन पर आधारित परियोजनाएँ
- राजस्थान की आण्विक विद्युत परियोजनाएँ
- विद्युत सम्बन्धी संस्थाएँ व प्रमुख नीतियाँ
- सौर ऊर्जा परियोजनाएँ
- पवन ऊर्जा
- बायोमास ऊर्जा
- ऊर्जा विकास की विभिन्न योजनाएँ
- नवीनतम ऊर्जा पुरस्कार
- प्रतियागी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

19. राजस्थान में पर्यटन पेज नं. 246–256

- पर्यटन परिपथ
- पर्यटन विकास की संस्थाएँ एवं योजनाएँ
- पर्यटन को बढ़ावा देने वाले स्थान
- पर्यटन क्षेत्र के पुरस्कार व सम्मान
- RTDC के होटल
- प्रमुख महोत्सव
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

20. राजस्थान में परिवहन संसाधन पेज नं. 257–274

- सड़क परिवहन
- राष्ट्रीय राजमार्ग
- राज्य उच्च मार्ग
- राजस्थान में सड़क विकास हेतु परियोजनाएँ
- सड़क विकास में कार्यरत विभिन्न संस्थाएँ
- रेल परिवहन
- जयपुर मेट्रो रेल परियोजना
- शाही रेलगाड़ियाँ
- वायु परिवहन
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

21. राजस्थान की जनगणना–2011 पेज नं. 275–281

- जनगणना का तुलनात्मक अध्ययन
- जनसंख्या
- दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर
- जनघनत्व
- लिंगानुपात
- साक्षरता
- कार्यशील जनसंख्या
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

22. क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम– पेज नं.282–283

23. राजस्थान के प्रमुख अनुसंधान केंद्र पेज नं. 284–286

24. राजस्थान में सहकारिता पेज नं. 287–288

25. राजस्थान में जनजातियाँ पेज नं. 289–290

राजस्थान
अभ्यास मानचित्र

Dhindhwal
Publication

राजस्थान
अभ्यास मानचित्र

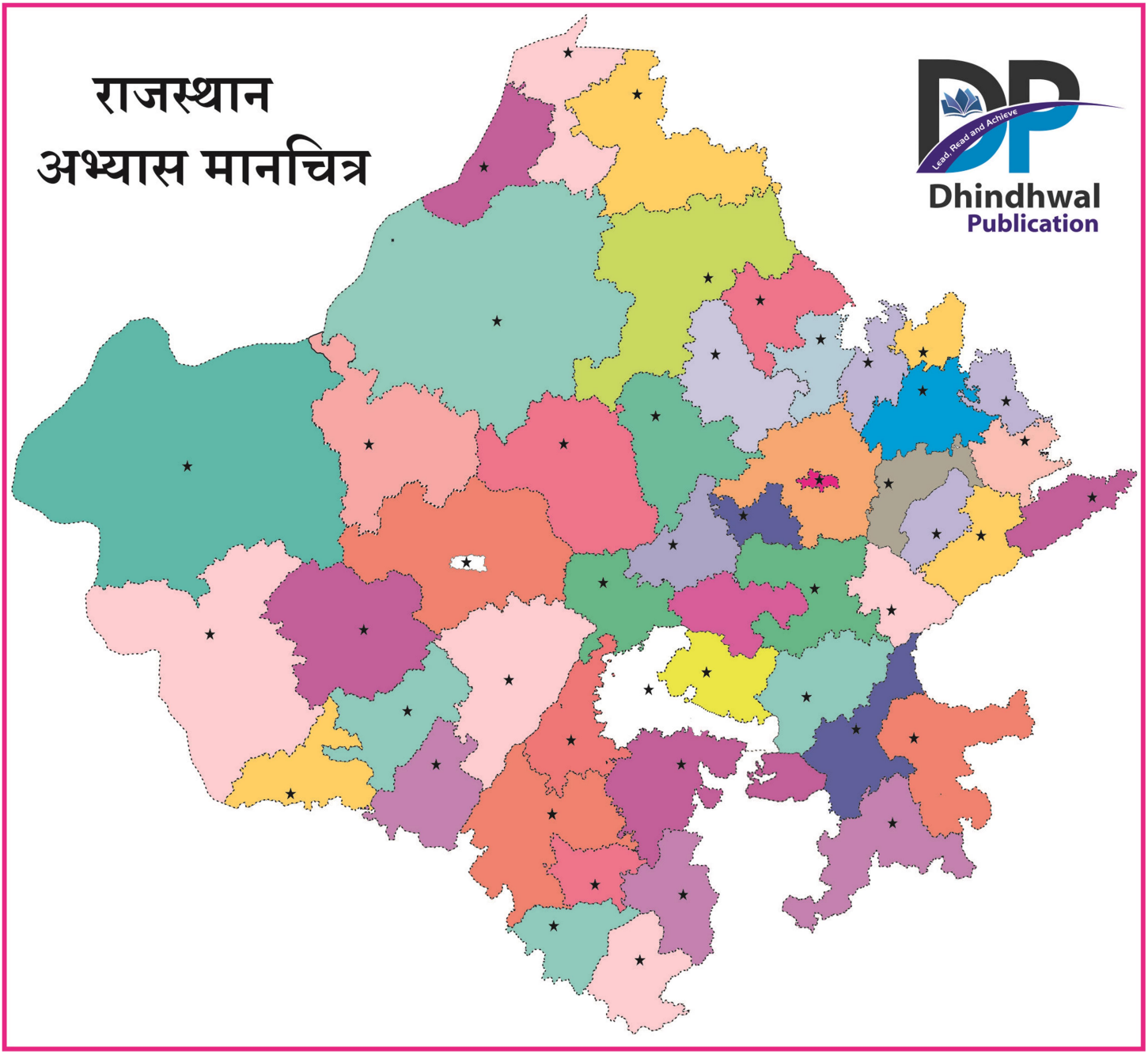

Dhindhwal
Publication

1 राजस्थान : एक सामान्य परिचय

❐ राजस्थान का नामकरण –

- इस **राजस्थान प्रदेश** को विभिन्न कालों में अलग-अलग नामों से जाना जाता रहा है जो निम्न प्रकार हैं–
- **ऋग्वेद काल** में इसे **'ब्रह्मवर्त'** के नाम से पुकारा गया है व रामायण काल में **वाल्मीकि** ने इसे **'मरुकांतार'** कहा।
- यह प्रदेश मरुस्थलीय इलाका होने के कारण **मरु/मरुदेश/मरुप्रदेश /मरुवार** आदि नामों से भी पुकारा जाता रहा है।
- राजस्थान शब्द का **सबसे प्राचीनतम लिखित उल्लेख** बसंतगढ़ शिलालेख (सिरोही) में मिलता है जिसमें **'राजस्थानीयादित्य'** शब्द का प्रयोग किया गया है, लेकिन इस शिलालेख में प्रयुक्त यह **'राजस्थानीयादित्य'** शब्द किसी व्यक्ति विशेष के लिए प्रयोग किया गया है या क्षेत्र विशेष के लिए प्रयोग किया गया है इसका निश्चित पता नहीं चलता।

- **बसंतगढ़ शिलालेख** – यह लेख **सिरोही** के बसंतगढ़ में **खीमल माता मंदिर** में लगा है, यह शिलालेख 625 ई. का है जो **चावड़ा वंश** के शासक **वर्मलात** के समय का है, इसमें **दास प्रथा** का वर्णन है।

- किसी पुस्तक में **'राजस्थान'** शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख **मुहणौत नैणसी री ख्यात** में किया गया है, जिसमें **'राजस्थान'** शब्द का प्रयोग किया गया है।

- **'मुहणौत नैणसी री ख्यात'** को राजस्थान का **प्रथम ऐतिहासिक ग्रन्थ** माना जाता है यह सभी ख्यातों में **सबसे प्राचीन** व **विश्वसनीय** ख्यात है। इसका रचना काल लगभग **1665 ई.** है। मुहणौत नैणसी प्रारम्भ में जोधपुर महाराजा गजसिंह की सेवा में रहे, बाद में **महाराजा जसवंत सिंह प्रथम** के दरबारी कवि व दीवान रहे। इस पुस्तक में **राजस्थान के विभिन्न राज्यों व मध्य भारत का इतिहास** वर्णित है इसकी भाषा डिंगल है।
- नैणसी की अन्य रचना **मारवाड़ रा परगना री विगत** (जोधपुर राज्य का गजेटियर) भी है।

- लेखक **वीरभान** द्वारा (रचनाकाल 1731 ई.) अपनी पुस्तक **'राजरूपक'** में भी **'राजस्थान'** शब्द का प्रयोग किया है।
- उपर्युक्त दोनों ही पुस्तकों में प्रयोग किया गया **'राजस्थान'** शब्द इस भू-भाग के लिए प्रयोग नहीं किया है। राजस्थान शब्द का प्रयोग **राजा का स्थान** अर्थात् राजा की राजधानी या **राजा का निवास स्थान** के लिए भी होता रहा है।

- **राजरूपक**– इस पुस्तक में जोधपुर **महाराजा अभयसिंह** एवं गुजरात के **सुबेदार सर बुलंद खाँ** के मध्य युद्ध का वर्णन है।

- 1791 ई. में **महाराजा भीमसिंह** (जोधपुर) ने **सवाई प्रतापसिंह** (जयपुर) को लिखे पत्र में भी **'राजस्थानां'** शब्द का प्रयोग किया था।

- इस भू-भाग के लिए **'राजपूताना'** नाम का सर्वप्रथम प्रयोगकर्त्ता– **जॉर्ज थॉमस** (1800 ई. में)
- **विलियम फ्रेन्कलिन** ने 1805 ई. में प्रकाशित अपनी पुस्तक **'मिल्ट्री मेमोयर्स ऑफ मिस्टर जॉर्ज थॉमस'** (Military memoirs of Mr. George Thomas) में लिखा है कि जॉर्ज थॉमस वह पहला व्यक्ति था जिसने स्वतंत्र रूप से **राजपूताना शब्द** का प्रयोग इस भूभाग के लिए किया।

- **जॉर्ज थॉमस**– आयरलैंड निवासी जॉर्ज थॉमस ग्वालियर के मराठा शासक **दौलतराव सिंधिया** का अंग्रेजी कमांडर था।
- जॉर्ज थॉमस राजस्थान में सर्वप्रथम **शेखावाटी क्षेत्र** में आया था। इनकी मृत्यु 1802 ई. में **बहरामपुर (बंगाल)** में हुई थी। **'मिल्ट्री मेमोयर्स ऑफ मिस्टर जॉर्ज थॉमस'** पुस्तक का प्रकाशन **लार्ड वेलेजली** ने करवाया था।

- एक मान्यता के अनुसार मुगल साहित्यकार **राजपूत शब्द** को बहुवचन में **'राजपूतां'** लिखते थे, सम्भवतः अंग्रेजों ने इसलिए इसका नाम **'राजपूताना'** (राजपूतों का देश) रख दिया।

- इस भू-भाग के लिए **'राजस्थान'** शब्द का पहला प्रयोगकर्त्ता– **कर्नल जेम्स टॉड**
- कर्नल टॉड ने अपनी पुस्तक **'द एनाल्स एंड एंटिक्विटिज ऑफ राजस्थान'** (प्रकाशन 1829 ई.) में इस भू-भाग के लिए **'राजस्थान'** शब्द का प्रयोग किया है।
- कर्नल टॉड ने पुरानी बहियों के आधार पर इसे **रजवाड़ा/रायथान** नाम भी दिया है।

'द एनाल्स एंड एंटिक्विटिज ऑफ राजस्थान' –

- इस पुस्तक का दूसरा नाम **'दी सैन्ट्रल एंड वैस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इण्डिया'** है। यह पुस्तक दो भागों में प्रकाशित हुई (1829 व 1832 में) थी। इस पुस्तक का सम्पादन **विलियम क्रुक** ने किया। **कर्नल टॉड ने** इस पुस्तक के दोनों खण्ड इंग्लैण्ड के राजा **जॉर्ज चतुर्थ** एवं **विलियम चतुर्थ** को समर्पित किये हैं। इस पुस्तक का सर्वप्रथम हिन्दी अनुवाद **गौरीशंकर हीराचन्द ओझा** ने किया।
- इस पुस्तक का अनुवाद बलदेव प्रसाद मिश्र व पं. गिरधर शुक्ल ने भी किया है। इसके दूसरे भाग का अनुवाद ज्वाला प्रसाद व मुंशी देवीप्रसाद ने किया।
- कर्नल जेम्स टॉड की दूसरी पुस्तक **'द ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इण्डिया'** 1839 में इनकी पत्नी जुलिया क्लटरबक ने प्रकाशित करवाई। यह पुस्तक **विलियम हंटर ब्लेयर** को समर्पित की गयी।

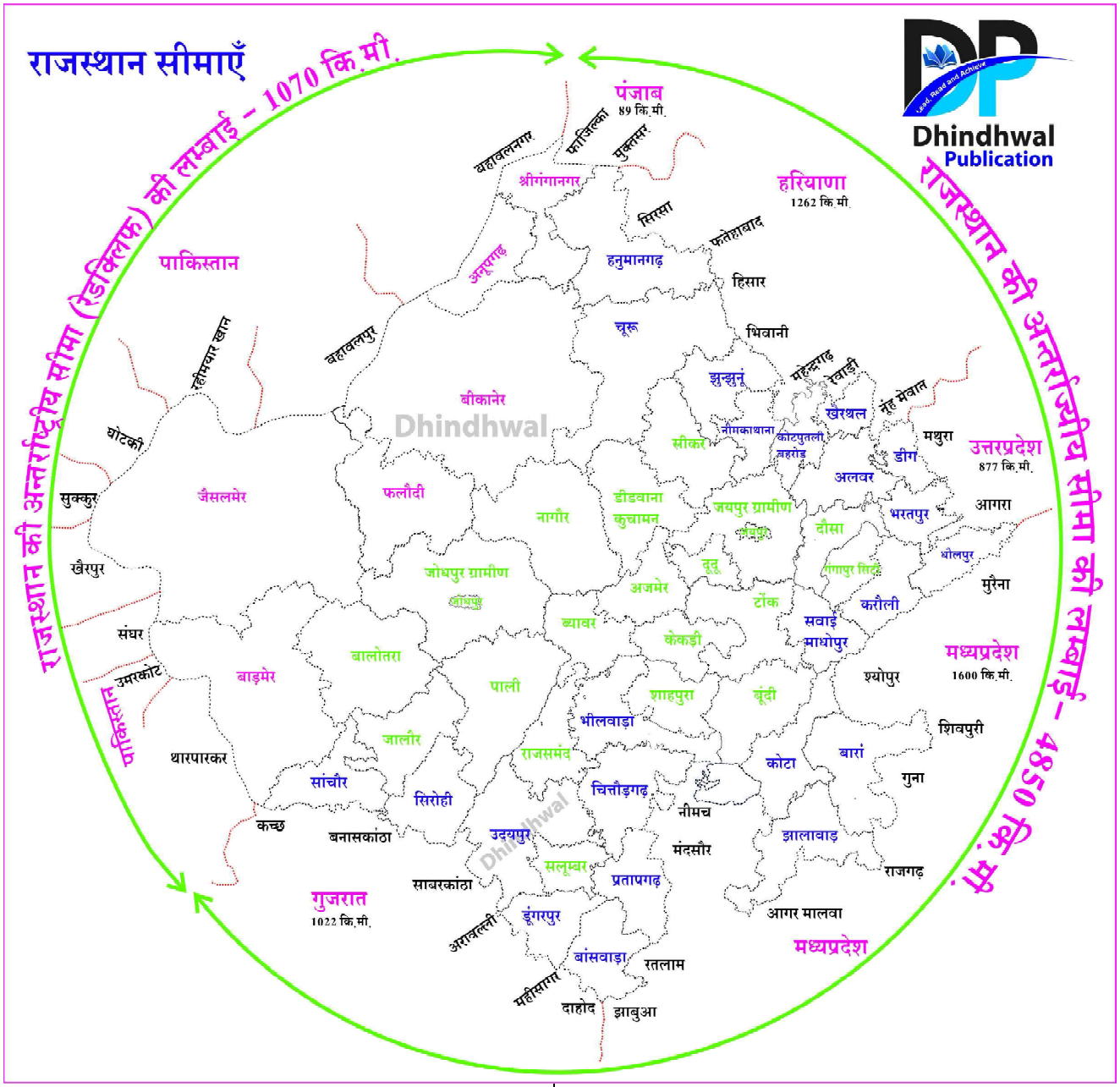

→ 1949 में राजस्थान गठन के समय जिलों की संख्या- 25
संभागों की संख्या- 5 (जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा, उदयपुर)

→ 1 नवम्बर, 1956 को राजस्थान का **26वाँ जिला** बना- अजमेर

→ **6वाँ संभाग- अजमेर** बना (जयपुर के स्थान पर अजमेर को संभाग बनाया गया) संभाग का नाम अजमेर संभाग रखा गया पर इसका **मुख्यालय जयपुर** में रखा गया। इसलिये **1 नवम्बर, 1956** को संभागों की संख्या 5 ही रही।

→ 1 नवम्बर, 1956 को राजस्थान के मुख्यमंत्री- **मोहनलाल सुखाड़िया**

✦ प्रतापगढ जिले का निर्माण **परमेशचन्द्र कमेटी** की सिफारिश पर किया गया था। (ध्यान रहे- प्रतापगढ़ जिला 26 जनवरी, 2008 को अस्तित्व में आया एवं 1 अप्रैल, 2008 से जिले के रूप में कार्य करना प्रारम्भ किया) **(स्रोत- सुजस)**

✦ गहलोत कार्यकाल में नये जिले बनाने के लिए गठित कमेटी- **जी. एस.सन्धू कमेटी** (2011 में)

✦ वसुंधरा कार्यकाल (2013-18) में नये जिले बनाने के लिए गठित कमेटी- **परमेशचंद्र कमेटी**

✦ **रामलुभाया कमेटी**- तत्कालीन मुख्यमंत्री **अशोक गहलोत** द्वारा मार्च 2022 में राजस्थान में नए जिलों के गठन के लिए पूर्व IAS रामलुभाया की अध्यक्षता में कमेटी गठित की।

→ इस कमेटी की सिफारिश पर राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने **17 मार्च, 2023** को विधानसभा में राजस्थान में **19 नये जिले** व **3 नये संभाग** बनाने की घोषणा की थी तथा **4 अगस्त, 2023** को नये जिलों का नोटिफिकेशन जारी किया गया और **7 अगस्त, 2023** को नये जिलों का विधिवत् रूप से उद्घाटन किया गया।

2 राजस्थान का भौतिक विभाजन

❖ राजस्थान का भौतिक विभाजन–

- **प्रो. अल्फ्रेड वैगनर (जर्मनी)** द्वारा दिये गये महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत (1912) के अनुसार **प्राग-ऐतिहासिक काल** में सम्पूर्ण विश्व एक पिण्ड के रूप में था, जिसे **पेंजिया** कहते थे, जिसके चारों ओर **पेंथालासा सागर** था। **कार्बोनिफेरिस युग** में पेंजिया का विभाजन हुआ, इसके दो भाग बने।
- उत्तरी भाग– **अंगारा लैण्ड (लॉरेशिया)**
- दक्षिणी भाग– **गौडवाणा लैण्ड।**
- दोनों भागों के मध्य एक महासागर बना जिसका नाम **टेथिस महासागर** था। भौगोलिक परिवर्तन के कारण **अंगारा लैण्ड** व **गोडवाना लैण्ड** में टकराव हुआ, जिसके कारण स्थल भाग टूटे, जहाँ-जहाँ स्थल भाग गया, वो **महाद्वीप** बन गये। जहाँ-जहाँ जल गया वो **महासागर** बन गये।
- पृथ्वी की गति **पश्चिम से पूर्व** की ओर होती है इसलिए **पानी पूर्व की ओर** चला गया। विश्व के अधिकांश **मरुस्थल** महाद्वीपों के **पश्चिम तट** पर हैं।

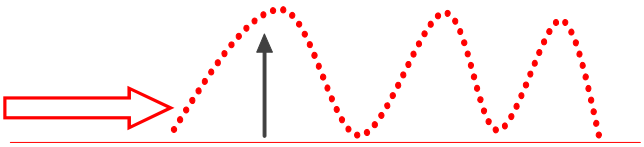

60. मी. तक ऊँचे

* ये सभी प्रकार के बालूका स्तूपों में **सबसे ऊँचे बालूका स्तूप** होते हैं। **जैसलमेर,बाड़मेर** में सर्वाधिक मिलते हैं। जैसलमेर के दक्षिण-पश्चिम में, रामगढ़ (जैसलमेर) के दक्षिण-पश्चिम में तथा बाड़मेर, बालोतरा, फलौदी व जोधपुर ग्रामीण जिलों में इनका विस्तार है।
* **अनुदैर्ध्य बालूका स्तूप** लम्बवत् समानान्तरण श्रेणीयों के समान दिखाई देते हैं। ये स्तूप पवनों की साधारण दिशा, दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व में अधिक विकसित होते हैं। इनका विकास एकाकी पहाड़ी के पार्श्वो पर होता है। छोटी एकाकी पहाड़ियों के पवनविमुख ढालों पर भी इनका निर्माण हो जाता है।
* **लूनी, जवाई** आदि नदियों के पार्श्वो पर भी रेखीय बालूका स्तूपों का निर्माण होता है। उत्तरी पूर्वी थार मरूस्थल में **दृषद्वती तथा मेढ़ा नदी** की शुष्क घाटी में भी ऐसे घुमावदार पुराने बालूका स्तूप मिलते हैं। इन बालूका स्तूपों की ऊँचाई **10 मीटर से 60 मीटर** तक होती है।

✦ **गासी/कारबा मार्ग**- दो पवनानुवर्ती **बालूका स्तूपों** के बीच की **निम्न भूमि** को 'गासी या कारबा मार्ग' कहा जाता है।

✦ सोर महोदय(Soar 1989) ने रेखीय लम्बवत् बालूका स्तूपों के 3 प्रकार बताये हैं-
1. **सीफ (Sief)**
2. **वनस्पति युक्त रेखीय (Vagetated Linear)**
3. **पवनविमुख रेखीय (Lee Linear)**

➢ **अनुप्रस्थ बालुका स्तूप -(Transverse Sand Dunes)** ये पवनों की दिशा के **समकोण या लम्बवत** बनने वाले बालूका स्तूप हैं। अनुप्रस्थ बालुका स्तूपों का निर्माण दीर्घकाल तक हवा के एक ही दिशा में चलने से उनके **समकोण पर** होता है।

* ऐसे बालूका स्तूप, गहरे बालू के क्षेत्रों में मन्द वायु द्वारा निर्मित होते हैं। ये स्तूप थार मरूस्थल के पूर्वी तथा उत्तरी भागों में **पूगल** (बीकानेर) **के चारों ओर, रावतसर** (हनुमानगढ), **सूरतगढ़** (गंगानगर), **चुरू, झुंझुनूं** जिलों में पाये जाते हैं।

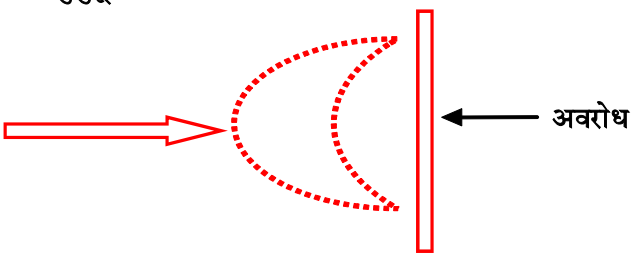

➢ **अवरोधी बालूका स्तूप**- इनका निर्माण किसी अवरोध के कारण उत्पन्न जमाव से होता है। ये अवरोध झाड़ी, पेड़, भवन या अन्य निर्मित केन्द्र अथवा पहाड़ी आदि के कारण हो सकते हैं। पुष्कर, बूढ़ा पुष्कर, नाग पहाड़, बिचून पहाड़, (दूदू), जोबनेर (जयपुर ग्रामीण) एवं सीकर की पहाड़ियाँ क्षेत्र में इस प्रकार के टीले मिलते है।

➢ **बरखान या अर्द्धचन्द्राकार बालुका स्तूप** - ये बालूका स्तूप **सर्वाधिक गतिशील**, नवीन बालू युक्त तथा रन्ध्रयुक्त होते हैं, ये राजस्थान के **सर्वाधिक नुकसानदायी** बालूका स्तूप हैं जो वायु की तेज गति के कारण बनते हैं। इनका पवनामुखी ढाल मंद व उत्तल होता है तथा पवनविमुखी ढाल तीव्र होता है। ये 10 से 20 मीटर ऊँचाई तथा 100 से 200 मीटर चौड़ाई तक विस्तृत होते हैं।

- **भालेरी** (चुरू), **नीमकाथाना, देशनोक, लूणकरणसर** (बीकानेर), **बालोतरा, ओसियां** (जोधपुर ग्रामीण), **सूरतगढ़** (गंगानगर), जायल (नागौर), **डीडवाना-कुचामन** में बरखान पाये जाते हैं।
- मरुस्थलीकरण के लिए सर्वाधिक उत्तरदायी बालूका स्तूप- **बरखान**

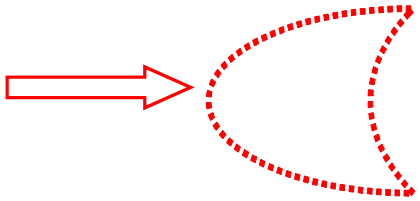

बरखान बालूका स्तूप

❖ आकृति के आधार पर-

➢ **सीफ(Sief)**- ये बरखान की तरह होते हैं लेकिन इनमें केवल एक ही भुजा होती है ऐसा **पवनों की दिशा में परिवर्तन** के कारण होता है।

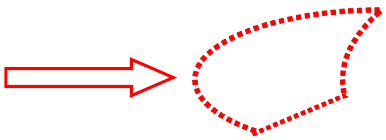

➢ **पैराबोलिक/परवलयाकार (Parabolic Sand Dunes)**- हेयर पिन के आकार का होता है इसका विस्तार **सम्पूर्ण मरुस्थलीय क्षेत्रों** में है।

* इस प्रकार के टीले उन स्थानों पर बनते हैं जहाँ पेड़-पौधे हवा के बहाव में बाधा डालते हैं इनके **खुले छोर** का **रूख हवा के रूख के विपरित**/हवा चलने की मूल दिशा की ओर होता है इन टीलों में हवा टकराने से अंग्रेजी के 'U' आकार का कटाव आ जाता है जबकि इसके आजु-बाजु पेड़ होते हैं ये टीले आंशिक रूप से स्थिर होते हैं।

- ये स्तूप बरखान प्रकार के ही होते हैं, किन्तु इनके निर्माण की दिशा भिन्न होती है। इनकी आकृति में राजस्थान के दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर धीरे-धीरे परिवर्तन देखने को मिलता है।
- दक्षिण पश्चिम में बालूका स्तूपों की भुजाएँ औसतन 3-4 किमी लम्बी होती है और तीव्र कोण पर मिलकर सेवर्न प्रारूप या बालों की पिन की आकृति का निर्माण करती है।

❖ उत्तरी अरावली

* जिले- अलवर, खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, दौसा, दूदू, डीडवाना-कुचामन का पूर्वी भाग, सीकर, नीमकाथाना, झुंझुनू का दक्षिणी पूर्वी भाग।
* सांभर से सिंघाना व सिंघाना (झुंझुनूं) से खैरथल-तिजारा तक।
* औसत ऊँचाई- 450 मीटर
* निर्माण- क्वार्टजाइट एवं फाईलाईट शैलों से।
* इस क्षेत्र की प्रमुख पहाड़ियों में शेखावाटी की पहाड़ियाँ, **तोरावाटी** की पहाड़ियाँ, खण्डेला की पहाड़ी (सीकर), हर्ष की पहाड़ी (सीकर), **जयपुर** की पहाड़ियाँ व **अलवर** की पहाड़ियाँ शामिल है।

उत्तरी अरावली की चोटियाँ-		
चोटी का नाम	जिला	ऊँचाई ↑
रघुनाथगढ़	सीकर	1055 मीटर
मालखेत	सीकर	1052 मीटर
लोहार्गल	झुंझुनूं	1051 मीटर
भोजगढ़	नीमकाथाना	979 मीटर
खो	जयपुर ग्रामीण	920 मीटर
भैरांच	अलवर	792 मीटर
बाबाई	जयपुर ग्रामीण	792 मीटर
बरवाड़ा	जयपुर ग्रामीण	786 मीटर
बबाई	नीमकाथाना	780 मीटर
बिलाली	कोटपूतली-बहरोड	775 मीटर
मनोहरपुरा	जयपुर ग्रामीण	747 मीटर
बैराठ	कोटपूतली-बहरोड	704 मीटर
सरिस्का	अलवर	677 मीटर
सिरावास	अलवर	651 मीटर
भानगढ़	अलवर	649 मीटर
जयगढ़	जयपुर	648 मीटर
नाहरगढ़	जयपुर	599 मीटर
अलवर दुर्ग	अलवर	597 मीटर ↑

☞ **नोट-** रणथम्भौर में अरावली व विंध्याचल दोनों पर्वतमालाएँ आपस में मिलती हैं।

* सरिस्का अभयारण्य में क्रासका पठार, काली घाटी (मोर की अधिकता), कांकणवाड़ी पठार, कांकणवाड़ी किला (दाराशिकोह कैद रहा) आदि स्थित हैं।
* ढूंढिमल का दर्रा- **रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान** में है।
* कुशाली घाट - सवाईमाधोपुर में है।

❖ मध्य अरावली

✦ **विस्तार-** मध्य अरावली का मुख्य विस्तार **अजमेर व ब्यावर** जिले में है। इसके अलावा **राजसमन्द** का उत्तरी भाग व **जयपुर ग्रामीण** का दक्षिणी भाग भी इसमें शामिल है। सांभर (जयपुर ग्रामीण) से देवगढ़ (राजसमंद) तक का भाग मध्य अरावली में आता है।

✦ औसत ऊँचाई- 700 मीटर।

✦ निर्माण- संगमरमर, क्वार्टजाईट व ग्रेनाईट चट्टानों से।

मध्य अरावली की चोटियाँ

मध्य अरावली की चोटियाँ			
चोटी का नाम	जिला	ऊँचाई	
मोराय जी (गोरमजी)	ब्यावर	934 मी.	मध्य अरावली की सबसे ऊँची चोटी
तारागढ़	अजमेर	873 मी.	
नाग पहाड़	अजमेर	795 मी.	
नोट- गोरमजी की चोटी टॉडगढ़ पहाड़ियों का ही भाग है।			

☞ **नोट-** अरावली पर्वतमाला में मध्य अरावली में ही सर्वाधिक दर्रे पाए जाते हैं।

✦ नाल/दर्रा/घाट- दो पर्वतों/पहाड़ों के बीच धरातलीय संकीर्ण पथ या कटा-फटा तंग रास्ता 'दर्रा' कहलाता है।

❖ मध्य अरावली के दर्रे-

✦ कच्छवाली दर्रा- **ब्यावर**

✦ पीपली दर्रा- **ब्यावर**, यह राजस्थान की **सर्वाधिक ऊँचाई पर** स्थित नाल है।

✦ उदाबारी दर्रा- **ब्यावर**

✦ सरूपाघाट- **ब्यावर**

✦ **ये** उपरोक्त चारों दर्रे **टॉडगढ़ इलाके** (**ब्यावर**) में हैं जो **ब्यावर जिले** को **पाली जिले** से जोड़ते हैं ये चारों दर्रे **ब्यावर** जिले से दक्षिण में निकलते हैं।

❖ ब्यावर जिले के दर्रे -

- बर दर्रा (ब्यावर)- **राष्ट्रीय राजमार्ग 14** (नया नम्बर **N.H. 25**) इस दर्रे से गुजरता है। यह दर्रा ब्यावर को बर से जोड़ता है। इस दर्रे से **जोधपुर-जयपुर मार्ग** गुजरता है।
- पखेरिया दर्रा (**ब्यावर**)- यह दर्रा **ब्यावर** के पूर्व में है, इस दर्रे से **ब्यावर से मसूदा** मार्ग गुजरता है।
- शिसुरा-शिवपुरा घाट (**ब्यावर**)- यह **ब्यावर** के पूर्व में है, इस दर्रे से **ब्यावर से विजयनगर** मार्ग गुजरता है।
- सूरा घाट दर्रा (**ब्यावर**)- यह **ब्यावर** के दक्षिण में है, इस दर्रे से **ब्यावर जिले** से **भीलवाड़ा जिले** जोड़ने वाला मार्ग गुजरता है।
- दिवेर की नाल (राजसमंद)- यहीं से **कोठारी नदी** का उद्गम होता है।
- गोरमघाट दर्रा (राजसमंद-पाली)- यह दर्रा मारवाड़ जंक्शन (पाली) को देवगढ़, आमेट (राजसमंद) से रेलमार्ग **द्वारा** जोड़ता हैं।
- कामलीघाट दर्रा (राजसमंद-पाली)- यह दर्रा जोजावर (पाली) से देवगढ़ (राजसमंद) को **सड़क मार्ग** द्वारा जोड़ता है।

☞ **नोट-** गोरमघाट रेल्वे स्टेशन (पाली) राजस्थान में सौर ऊर्जा से प्रकाशित पहला रेल्वे स्टेशन है।

✦ **बूँदी जिले के चार दर्रे** - बूँदी के निकट दर्रा, लाखेरी दर्रा, रामगढ़-खटकड़ दर्रा, जेतावास दर्रा

✦ **मुकन्दरा की पहाड़ियाँ**- मुकन्दरा की पहाड़ियों का विस्तार **कोटा** व **झालावाड़** दोनों जिलों में है, लेकिन सर्वाधिक विस्तार **कोटा** जिले में है। ये पहाड़ियाँ लगभग 120 किमी. की लम्बाई में उत्तर पश्चिम से दक्षिण पूर्व में विस्तारित है। ये विंध्यांचल पर्वतमाला का ही विस्तार है।

✦ **शाहबाद का उच्च क्षेत्र**- बारां जिले के पूर्वी भाग में शाहबाद के आस-पास का उच्च क्षेत्र है, जो समुद्रतल से लगभग 300 मीटर की ऊँचाई पर है। इस क्षेत्र में **रामगढ़** कस्बे (बारां) के पास घोड़े के नाल की आकृति (हॉर्स शू आकार) की एक पर्वत श्रेणी है, जिसके मध्य उल्का पिण्ड गिरने से बनी एक झील है।

✦ **झालावाड़ का पठार**- हाड़ौती के दक्षिणी भाग में झालावाड़ जिले का पठारी भाग, जो मालवा के पठार का भाग है। इसके दक्षिणी पश्चिमी भाग में **डग-गंगधार की उच्च भूमि** है। इसकी औसत ऊँचाई 450 मीटर है। इसमें छोटी-छोटी पहाड़ियाँ भी मौजूद है।

✦ **दक्कन का पठार**- संस्कृत के दक्षिण से डेक्कन (अंग्रेजी) हो गया, फिर दक्कन हो गया। इसे **विशाल प्रायद्वीपीय पठार** भी कहा जाता है दक्षिण भारत का मुख्य भू-भाग इसी पठार पर ही स्थित है यह **पठार त्रिभुजाकार** है इसकी उत्तर सीमा सतपुड़ा और विंध्याचल पर्वत श्रृंखला द्वारा निर्धारित होती है।

❖ राजस्थान के प्रमुख पठार -

* **उड़िया का पठार**- सिरोही, 1360 मीटर,
यह राजस्थान का **सबसे ऊँचा पठार** है, जो आबू पर्वत पर **गुरु शिखर के नीचे** स्थित है।

* **भोराठ का पठार**- **कुम्भलगढ़** (राजसमंद) से गोगुन्दा (उदयपुर) के बीच का पठार। 1225 मीटर ऊँचा है। (दूसरा ऊँचा पठार)
यह पठार महाराणा प्रताप की कर्मस्थली रहा है।
भोराट के पठार की सबसे ऊँची चोटी- **जरगा (उदयपुर)**

* **आबू का पठार**- सिरोही, 1200 मीटर, राजस्थान का **तीसरा सबसे ऊँचा पठार** है। इस पर राजस्थान का सबसे ऊँचा बसा शहर '**माउन्ट आबू**' बसा है, जो राजस्थान का एकमात्र पर्वतीय पर्यटन स्थल है।
राजस्थान का दूसरा **सर्वाधिक ऊँचाई पर बसा नगर**- **प्रतापगढ़**।

* **मेसा का पठार**- इस पर चित्तौड़गढ़ दुर्ग स्थित हैं।

* **लसाड़िया का पठार**- **सलूम्बर**, जयसमंद झील के पूर्वी भाग में फैला कटा-फटा पठार।

* **ऊपरमाल का पठार**- **भैंसरोड़गढ़** (चित्तौड़गढ़) से बिजोलिया (भीलवाड़ा) तक का पठार।

* **भोमट का पठार**- दक्षिणी उदयपुर, सलूम्बर, उत्तरी डूँगरपुर, पूर्वी सिरोही।

* **मानदेसरा का पठार**- चित्तौड़गढ़, भैंसरोड़गढ़ अभयारण्य में स्थित है।

* **धीराजी का पठार** - चितौड़गढ़

* **क्रासका का पठार व कांकणवाड़ी का पठार**- अलवर में, सरिस्का अभयारण्य में स्थित हैं।

❖ राष्ट्रीय भूवैज्ञानिक स्मारक स्थल

राजस्थान में Geo Heritage Sites			
क्र. सं.	नाम स्थान	जिला	वर्ष
1.	आकल वुड फॉसिल पार्क	जैसलमेर	1972
2.	झामरकोटड़ा स्ट्रोमेटोलाइट फॉसिल पार्क	उदयपुर	1976
3.	भोजुंदा स्ट्रोमेटोलाइट पार्क	चित्तौड़गढ़	1976
4.	किशनगढ़ नेफेलाइन साईनाइट	अजमेर	1976
5.	जोधपुर वेल्डेड टफ	जोधपुर	1976
6.	जोधपुर ग्रुप मालानी ईग्नियस सुईट कॉन्टेक्ट	जोधपुर	1976
7.	ग्रेट बाउन्ड्री फाल्ट	सतूर (बूंदी)	1976
8.	सेन्द्रा (सेन्दड़ा) ग्रेनाईट	ब्यावर	1977
9.	बर कॉग्लोमेराट	ब्यावर	1977
10.	राजपुरा दरीबा खनिज क्षेत्र गोसान	राजसमंद	1977
राजस्थान में Geo Tourism Sites			
1.	जावर प्राचीन खनन स्थल	सलूम्बर	2016
2.	रामगढ़ मेटिओराईट इम्पेक्ट क्रेटर	बारां	--
3.	थार मरुस्थल	जैसलमेर	--
स्रोत- gsi.gov.in			

✦ **राजस्थान की उच्चावचीय संरचना में विभिन्नता**

(i) उच्च शिखर-	900 मीटर	1%
(ii) पर्वत श्रृंखला-	600 - 900मीटर	6%
(iii) उच्च भूमि (पठारी क्षेत्र)-	300 - 600मीटर	31%
(iv) मैदानी क्षेत्र-	150- 300मीटर	51%
(v) निम्न भूमि-	150 मीटर से कम	11%

✦ **जैसलमेर**- जैसलमेर के जेठवाई क्षेत्र में सबसे प्राचीन शाकाहारी डायनासोर थारोसोरस की नई प्रजाति के अवशेष मिले है, जो **167 मिलियन** वर्ष पुराना है। **IIT रूड़की** और **GSI** ने शाकाहारी डायक्रेओसोराइड सोरोपॉड्स डायनासोर के सबसे पुराने जीवाश्म अवशेषों की खोज की है। इसे '**थारोसोरस इंडिकस**' नाम दिया है।

प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

1. मेसा का पठार किस जिले में स्थित है? **(RPSC AEN -2024)**
उदयपुर जिले में/चित्तौड़गढ़ जिले में/राजसमन्द जिले में/सिरोही जिले में/अनुत्तरित प्रश्न
चित्तौड़गढ़ जिले में

2. निम्नलिखित में से कौन सी भू-आकृति क्रमशः दक्षिण-पश्चिम अरावली और उत्तर-पूर्व अरावली में अवस्थित है?
ऋषिकेश तथा भानगढ़/मारायजी तथा बैराठ/भोराठ पठार तथा रोजा भाखर/भानगढ़ तथा ऋषिकेश/अनुत्तरित प्रश्न
ऋषिकेश तथा भानगढ़ **(RPSC AEN -2024)**

3 प्राचीन नाम व भौगोलिक उपनाम

विभिन्न क्षेत्रों के प्राचीन नाम

क्र.सं.	प्राचीन नाम	वर्तमान नाम
1	जांगल देश	बीकानेर
2	यौधेय क्षेत्र	गंगानगर, हनुमानगढ़ का क्षेत्र
3	मत्स्य प्रदेश	अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली
4	शिवि जनपद	मेवाड़ या उदयपुर राज्य
5	मेवाड़/मेदपाट/ प्राग्वाट	उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, भीलवाड़ा का क्षेत्र
6	गिहलोट	उदयपुर बसने से पूर्व इस स्थान का नाम
7	मारवाड़	जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, पाली, नागौर का क्षेत्र
8	हाड़ौती	कोटा, बूँदी, बारां, झालावाड़
9	ढुँढाड़	जयपुर, दौसा
10	वागड़ प्रदेश/ वाग्वर प्रदेश	डूँगरपुर, बाँसवाड़ा
11	बांगड़ (बांगर)	नागौर, सीकर, झुंझुनूं, चुरू
12	शेखावाटी	सीकर, चुरू, झुंझुनूं, नीमकाथाना
13	तोरावाटी प्रदेश	सीकर, झुंझुनूं व नीमकाथाना (कांतली नदी के प्रवाह का क्षेत्र)
14	मेवात प्रदेश	अलवर, भरतपुर
15	राठ/अहीरवाट	मुण्डावर (खैरथल-तिजारा), बहरोड़ बानसूर (कोटपूतली-बहरोड)
16	माल खेराड़	मालपुरा (टोंक)
17	खेराड़ प्रदेश	जहाजपुर (शाहपुरा)
18	मेरवाड़ा	ब्यावर में टॉडगढ़ के आसपास का पहाड़ी क्षेत्र।
19	सपाड़	सवाईमाधोपुर व करौली का मध्यप्रदेश को स्पर्श करने वाला भाग।
20	सपादलक्ष	अजमेर, डीडवाना-कुचामन व सांभर का क्षेत्र
21	अनन्त प्रदेश	सांभर से सीकर तक का क्षेत्र
22	रूमा	सांभर झील के आसपास का क्षेत्र
23	बरड़	बूँदी जिले का पश्चिमी पथरीला क्षेत्र
24	काँठल	प्रतापगढ़
25	मालव देश	प्रतापगढ़, झालावाड़ व बाँसवाड़ा
26	मेवल	डुँगरपुर व बाँसवाड़ा के मध्य का भाग
27	उत्तमाद्री	बिजौलिया व उसके आसपास के क्षेत्र को बिजौलिया शिलालेख में
28	चन्द्रावती/आर्बूद	सिरोही व आसपास का क्षेत्र
29	गौडवाड़	दक्षिण पूर्वी बाड़मेर, बालोतरा, जालौर व पश्चिमी सिरोही, पाली
30	गुर्जरात्रा	जोधपुर का दक्षिणी भाग।
31	शूरसेन/बृजभूमि	भरतपुर, धौलपुर, करौली, पूर्वी अलवर
32	डांग क्षेत्र	धौलपुर, करौली व सवाईमाधोपुर
33	कुरू देश	अलवर का उत्तरी भाग
34	मालाणी	बालोतरा, बाड़मेर, जालौर का क्षेत्र
35	मेरू	अरावली पर्वतीय प्रदेश
36	छप्पन का मैदान	बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़

भौगोलिक उपनाम

क्र.सं.	प्राचीन नाम	वर्तमान नाम
1.	राजस्थान की अभ्रक नगरी	भीलवाड़ा
2.	पंखों की नगरी	जैसलमेर
3.	झरोखों की नगरी	जैसलमेर
4.	झीलों की नगरी	उदयपुर
5.	राजस्थान की पन्ना नगरी	जयपुर
6.	राजस्थान की औद्योगिक नगरी	कोटा
7.	राजस्थान की औद्योगिक राजधानी	कोटा
8.	इन्द्रप्रस्थ नगर	कोटा
9.	राजस्थान का नालन्दा	कोटा
10.	एशिया का वियना	उदयपुर
11.	तश्तरीनुमा बेसिन में बसा हुआ शहर	उदयपुर
12.	लेक सिटी ऑफ इण्डिया	उदयपुर
13.	झीलों की नगरी	उदयपुर
14.	जिंक नगरी	उदयपुर
15.	मेहंदी नगरी	सोजत (पाली)
16.	भारत/राजस्थान का मक्का	अजमेर
17.	अरावली का अरमान	तारागढ़ (अजमेर)
18.	राजस्थान की थर्मोपल्ली	हल्दीघाटी (राजसमंद)
19.	टैक्सटाईल सिटी	भीलवाड़ा
20.	वस्त्र नगरी	भीलवाड़ा
21.	रेड डायमंड	धौलपुर
22.	राजस्थान का शिमला	माउन्ट आबू (सिरोही)
23.	राजस्थान का बर्खोयांस्क	माउन्ट आबू (सिरोही)
24.	राजस्थान का नागपुर	झालावाड़
25.	राजस्थान का चेरापूँजी	झालावाड़
26.	ताँबा नगरी	खेतड़ी
27.	सुनहरे द्वीपों का शहर	बांसवाड़ा
28.	अभ्रक की मंडी	भीलवाड़ा
29.	आदिवासियों का शहर	बाँसवाड़ा
30.	राजस्थान का अन्न भंडार	गंगानगर
31.	राजस्थान का अन्न का कटोरा	गंगानगर
32.	राजस्थान का धान का कटोरा	गंगानगर
33.	राजस्थान की फलों की टोकरी	गंगानगर
34.	राजस्थान की अण्डों की टोकरी	अजमेर
35.	राजस्थान की धातु नगरी	नागौर
36.	राजस्थान का औजारों का शहर	नागौर
37.	आईलैण्ड ऑफ ग्लोरी/रंगश्री का द्वीप (सी.वी. रमन)	जयपुर
38.	पूर्व का पेरिस/भारत का पेरिस	जयपुर
39.	पूर्व का वेनिस	उदयपुर
40.	उद्यानों और बगीचों का शहर	कोटा
41.	राजस्थान का विंडसर महल	राजमहल (उदयपुर)
42.	लकड़ी की पहाड़ी और घाटियों की भूमि	बारां

4 राजस्थान में जल संरक्षण एवं जल प्रबंधन

- **जल संरक्षण का अर्थ** है- जल का उचित उपयोग एवं भविष्य के लिए सुरक्षित रखना। अतः जल के दुरुपयोग को रोककर स्वच्छ जल को लम्बे समय तक बचाकर रखना जल संरक्षण कहलाता है।
- राजस्थान का अधिकांश भाग **रेगिस्तानी** है जहाँ प्रायः वर्षा बहुत कम होती है परम्परागत तरीकों से राजस्थान के निवासियों ने अपने क्षेत्र के अनुरूप जल भण्डारण के विभिन्न ढाँचों को बनाया है।
- ये पारम्परिक **जल संग्रहण की प्रणालियाँ** काल की कसौटी पर खरी उतरी हैं। ये प्रणालियाँ विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक पारिस्थितियों के कारण अपने प्रभावशाली स्वरूप में उभरी हैं साथ ही इनका विकास भी स्थानीय वातावरण के अनुसार हुआ है। इसलिए सम्पूर्ण भारत में राजस्थान की **जल संग्रहण विधियाँ** अपना विशेष महत्त्व रखती है।
- वस्तुतः राजस्थान एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ **वर्ष भर बहने वाली नदियाँ नहीं** है। यहाँ पानी से सम्बन्धित समस्याएँ, **अनियमित** तथा **कम वर्षा** और नदियों में **अपर्याप्त पानी** को लेकर उत्पन्न होती है।
- राजस्थान में स्थापत्य कला के प्रेमी राजा-महाराजाओं तथा **सेठ-साहूकारों** ने अपने पूर्वजों की स्मृति में अपने नाम को चिर स्थायी बनाने के उद्देश्य से इस प्रदेश के विभिन्न भागों में कलात्मक बावड़ियों, कुओं, तालाबों एवं कुंडों का निर्माण करवाया। राजस्थान में पानी के कई परम्परागत स्रोत हैं जैसे- **जोहड़, तालाब, नाडी, टोबा, झालरा, सागर, समंद व सरोवर** आदि।
- पश्चिमी राजस्थान में जल के महत्त्व पर जो पक्तिंयाँ लिखी गई हैं उनमें पानी को घी से बढ़कर बताया गया है।

  ''घी ढुल्याँ म्हारा की नीं जासी।
  पानी ढुल्याँ म्हारों जी बले।''

☞ **नोट-** साफ जल को '**भविष्य का सोना**' या '**नीला सोना**' कहा जाता है।

➢ जल संरक्षण व संग्रहण के **परम्परागत स्रोत** निम्न है-

- **टांका/कुंड/कुंडी** - रेतीले मरुस्थलीय क्षेत्रों में **वर्षा जल को संग्रहित** करने के लिए बनाया गया **भूमिगत हौद** 'टांका' या कुण्ड कहलाता है इसे चूने या सीमेंट से पक्का किया जाता है ऊपर से ढक कर एक छोटी खिड़की (बारी) रखी जाती हैं। कुण्डों व टांकों का निर्माण खेतों, घरों, मंदिरों में, गाँव के सार्वजनिक चौक में भी करवाया जाता रहा है।

- **नाडी-** गाँव के बाहर बनी **छोटी तलैया** जिसमें वर्षा का जल संग्रहित होता है, नाडी कहलाती है। **नाडी कच्ची** होती है, जो गाँव के लोगों की दैनिक जरूरतों (नहाना, धोना, पशुओं को पानी) की पूर्ति करती हैं। **पश्चिमी राजस्थान** के प्रत्येक गाँव में नाडी मिलती है।
  - राजस्थान में सर्वप्रथम पक्की नाडी के निर्माण का विवरण 1520 ई. में मिलता है, जब **राव जोधाजी** ने जोधपुर के निकट एक नाडी बनवाई थी।
  - केन्द्रीय शुष्क अनुसंधान संस्थान, जोधपुर के एक सर्वेक्षण के अनुसार **नागौर, बाड़मेर एवं जैसलमेर** में पानी की कुल आवश्यकता में से 37.06% जरूरतें नाडियों द्वारा पूरी की जाती है।

(स्रोत-सुजस मई 2022)

- **टोबा-** आकृति में लगभग **नाडी के समान** ही होता है लेकिन नाड़ी से **अधिक गहरा** होता हैं। ऐसी भूमि जहाँ **पानी का रिसाव कम** होता हो टोबा निर्माण के लिए उपयुक्त मानी जाती है।
  - सामान्यतया: टोबाओं में 7-8 माह तक पानी ठहरता है। राजस्थान में प्रत्येक गांव में पशुओं एवं जनसंख्या के हिसाब से टोबा बनाए जाते हैं।
- **झालरा-** झालरा का कोई जलस्रोत नहीं होता है वह अपने से ऊँचाई पर स्थित तालाबों/झीलों के रिसाव से पानी प्राप्त करते हैं झालरा का स्वयं का **कोई आगोर नहीं होता** है।
  - इनका पानी पीने के काम में नही लिया जाता है बल्कि इनका जल **धार्मिक रीति-रिवाज** सम्पन्न करने, सामूहिक स्नान आदि कार्यो में काम आता है।
  - अधिकांश झालरों का आकार **आयताकार** होता है, जिनके तीन ओर सीढ़ियाँ बनी होती हैं।
- **आगोर-** तालाब के आसपास की **चारों तरफ की भूमि** जो पक्की होती है, वह आगोर कहलाती है। आगोर से ही पानी बहकर तालाब/नाडी में जाता है।
- **पायतान**- वर्षा जल को टांका या कुण्ड में उतारने के लिए उसके चारों ओर मिट्टी को दबाकर (जगह को पक्का कर) पायतान बनाया जाता है। सामान्यतः टांका व कुण्ड के चारों तरफ की **पक्की भूमि** के लिए **पायतान शब्द** काम में लिया जाता है।
- **नेहटा (नेष्टा)** - नाडी या तालाब से अतिरिक्त जल की निकासी के लिए उसके साथ **नेहटा** बनाया जाता है जिससे होकर अतिरिक्त जल

5 राजस्थान की जलवायु

- जलवायु एक प्रमुख भौगोलिक तत्त्व है, जो एक ओर अन्य प्राकृतिक तत्त्वों को प्रभावित करता है तो दूसरी ओर आर्थिक और जनसांख्यिकीय स्वरूप को प्रभावित करता है। जलवायु का प्रभाव जल की उपलब्धता तथा वनस्पति पर प्रत्यक्ष होता है। इसी प्रकार सिंचाई, कृषि का स्वरूप, कृषि उपजों का प्रारूप, उत्पादकता, पशुपालन भी जलवायु से सीधे प्रभावित होते हैं।
- राजस्थान की जलवायु **उप-उष्ण** है। अरावली के पश्चिम में न्यून वर्षा, उच्च दैनिक एवं वार्षिक तापमान, निम्न आर्द्रता तथा तीव्र हवाओं से युक्त **शुष्क जलवायु** है। दूसरी ओर अरावली के पूर्व में **अर्द्ध शुष्क एवं उप-आर्द्र जलवायु** है, जहाँ वर्षा की मात्रा में वृद्धि हो जाती है, साथ में वायु की गति में भी कमी रहती है।
- सम्पूर्ण रूप से राजस्थान की जलवायु भारत की **'मानसूनी जलवायु'** का अभिन्न अंग है, किन्तु विभिन्न प्राकृतिक कारकों के प्रभाव के कारण राज्य का अधिकांश क्षेत्र शुष्क जलवायु वाला है। राजस्थान की जलवायु का विस्तृत अध्ययन निम्न प्रकार है-

- **मौसम**- मौसम जलवायु की क्षणिक अवस्था है। मौसम जल्दी-जल्दी परिवर्तित होता रहता है। कुछ समय, मिनट, घन्टे, या 4-5 दिन के **सम्मिलित रूप को मौसम** कहते हैं।
- **ऋतु**- कुछ माह के सम्मिलित रूप को **'ऋतु'** कहते हैं।
- **जलवायु**- 30 वर्ष से अधिक की समयावधि की औसत वायुमण्डलीय दशाओं के सम्मिलित रूप को **'जलवायु'** कहते हैं।

❖ **जलवायु का निर्धारण करने वाले कारक - तापक्रम, वायुदाब, आर्द्रता, वर्षा व वायुवेग।**

- **राजस्थान की जलवायु-** भौगोलिक विभिन्नता के कारण यहाँ की जलवायु में भी विभिन्नता पायी जाती है राजस्थान का अधिकांश भाग **उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु** में आता है।
- कर्क रेखा के कारण बाँसवाड़ा, डूँगरपुर **उष्ण कटिबंधीय** हैं राजस्थान का **1% भाग ही उष्ण कटिबंध** में आता है बाकि का **99% भाग उपोष्ण कटिबंध** में आता है इसी कारण राजस्थान की **जलवायु 'उपोष्ण जलवायु'** कहलाती है।

☞ **वायुदाब-** पृथ्वी की सतह पर ऊपरी वायुमण्डल की परतों में स्थित वायु का जो भार पड़ता है, उसे **वायुदाब** कहा जाता है।
☞ **निम्न वायुदाब-** अधिक तापमान वाले क्षेत्रों में वायु गर्म होकर ऊपर उठ जाती है। जिससे वहाँ **निम्न वायुदाब** बन जाता है।
☞ **उच्च वायुदाब-** कम तापमान वाले क्षेत्रों की वायु ठण्डी होती है जिससे वहाँ **उच्च वायुदाब** बन जाता है।
सर्वाधिक वायुदाब **समुद्र तल** पर होता है तथा वायुमण्डल में ऊपर की ओर जाने पर वायुदाब तेजी से कम होता जाता है। **हवाएँ** हमेशा उच्च वायुदाब से निम्न वायुदाब की ओर चलती हैं।

- वायुदाब को मापने की इकाई **मिलीबार** है, जबकि वायुदाब मापने के यंत्र को **वायुदाब मापी/बेरोमीटर** कहते है।

❖ **राजस्थान की जलवायु की विशेषताएँ-**

→ **शुष्क एवं अर्द्धशुष्क जलवायु** की प्रधानता है।
→ वर्षा का **असमान व अपर्याप्त वितरण** पाया जाता है।
→ तापमान में **अतिशयता व विविधता** पायी जाती है। ग्रीष्म ऋतु में यहाँ उच्च दैनिक तापमान **49° सेल्शियस** तक पहूंच जाता है। शीतकाल में कहीं-कहीं तापमान जमाव बिन्दू तक पहूंच जाता है।
→ रेत की अधिकता के कारण दैनिक व वार्षिक तापांतर अधिक पाया जाता है।
→ विभिन्न स्थानों की **आर्द्रता में अन्तर** पाया जाता है।
→ वर्षा का **समय व मात्रा निश्चित नहीं** है।
→ अधिकांश वर्षा **जुलाई व अगस्त माह** में (कुल वर्षा का 60%) **मानसून** के रूप में हो जाती है वर्षा की केवल कुछ मात्रा दिसम्बर व जनवरी माह में **मावठ** के रूप में होती है।
→ राजस्थान में **खण्डवृष्टि** पायी जाती है।

❖ **राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक-**

- **राज्य की अक्षांशीय स्थिति**- 23°30 उत्तरी अक्षांश रेखा (कर्क रेखा) राजस्थान के दक्षिणी भाग से होकर गुजरती है, अतः राजस्थान का अधिकांश भाग **उपोष्ण कटिबंध** में आने के कारण यहाँ तापान्तर पाये जाते है।
- **समुद्र तट से दूरी (महाद्वीपीयता)**- समुद्र तट से अधिक दूरी होने के कारण यहाँ की जलवायु पर समुद्र की समकारी जलवायु का प्रभाव नहीं पड़ता है अतः यहाँ के तापमान में **महाद्वीपीय जलवायु** की तरह अधिक विषमताएँ पायी जाती है। यह राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक है।

☞ **नोट**- राजस्थान से बंगाल की खाड़ी की दूरी 2900 कि.मी. है, **अरब सागर** की दूरी 400 कि.मी. है, राज्य का नजदीकी समुद्री भाग **कच्छ की खाड़ी** है जो 225 कि.मी. दूर है। **खम्भात की खाड़ी** 275 कि.मी. दूर स्थित है।

- **धरातल या उच्चावच**- धरातल की बनावट (उच्चावच) का किसी स्थान की जलवायु पर सीधा प्रभाव पड़ता है जैसे राजस्थान के पश्चिमी भाग में **रेतीली मोटे कणों वाली** मिट्टी पायी जाती है, जो दिन के समय **जल्दी गर्म** व रात के समय **जल्दी ठण्डी** हो जाती है, इसी प्रकार **अरावली पर्वतमाला** के पूर्वी और दक्षिणी-पूर्वी भाग में **दोमट चिकनी व काली मिट्टी** पायी जाती है जिसके कण बारीक व हल्के होते हैं, जो दिन के समय धीरे-धीरे गर्म होते हैं व रात के समय धीरे-धीरे ठण्डे होते हैं।

❖ वर्षा–

- ✦ राजस्थान में पिछले 5 वर्षों में मरुस्थलीय पश्चिमी रेगिस्तान में वर्षा की मात्रा बढ़ी है तथा मेवाड़ क्षेत्र में जहाँ अधिकतम वर्षा होती थी अब वहाँ वर्षा की मात्रा घटी है।
- ✦ राजस्थान में **सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान–** माउन्ट आबू (सिरोही) (48 दिन)
- ✦ राजस्थान में न्यूनतम वर्षा वाला स्थान– **सम क्षेत्र** (जैसलमेर 0 दिन)
- ✦ राजस्थान में **सर्वाधिक वर्षा वाला जिला**– **बांसवाड़ा** (40 दिन) 95 सेमी, **बारां** (87 सेमी), **झालावाड़** (84 सेमी)
- ✦ राजस्थान में न्यूनतम वर्षा वाला जिला– **जैसलमेर** (5 दिन,18 सेमी)
- ✦ राजस्थान में **सर्वाधिक वर्षा वाला संभाग– कोटा**
- ✦ राजस्थान में न्यूनतम वर्षा वाला संभाग– **जोधपुर**
- ✦ राजस्थान में औसत वार्षिक वर्षा– **57.5 सेमी**
- ✦ राजस्थान में वर्षा वाले दिनों की संख्या– **29 दिन**

➢ **रेनोमीटर**– वर्षा मापने का यंत्र रेनोमीटर या Rain Gauge कहलाता है। जिस दिन 0.25 सेमी से अधिक वर्षा होती है, उस दिन को **वर्षा वाला दिन** कहते हैं।

- ✦ राजस्थान में **मानसून आगमन की सामान्य तिथि– 15 जून** (स्रोत– आर्थिक समीक्षा–2023–24)
- ✦ राजस्थान में 90% वर्षा **मानसून** से होती है। राजस्थान में 1 जून से 30 सितम्बर, 2023 तक की समयावधि में वास्तविक वर्षा **54.68 सेमी** हुई, जो सामान्य मानसून से 0.7% की वृद्धि दर्शाती है।

- ✦ जल संसाधन विभाग राजस्थान की वार्षिक रिपोर्ट, 2023 के अनुसार–
- * सर्वाधिक वर्षा वाला जिला– **सिरोही (137.01 सेमी.)**
- * न्यूनतम वर्षा वाला जिला– **जैसलमेर (28.22 सेमी.)**
- * राजस्थान में वर्ष 2023 में औसत वार्षिक वर्षा– **69.53 सेमी.**
- ☞ **नोट**– राजस्थान में वर्ष 2022 में औसत वार्षिक वर्षा– **77.31 सेमी.**

- ✦ राजस्थान में **उत्तर पश्चिम से दक्षिण पूर्व की ओर** वर्षा की मात्रा में **वृद्धि** होती है।
- ✦ राजस्थान में वर्षा की मात्रा दक्षिण और **दक्षिण पूर्व** से उत्तर और **उत्तर पश्चिम** की ओर घटती जाती है।
- → **50 सेमी वर्षा रेखा–** राजस्थान को दो स्पष्ट जलवायु भागों में बांटती है।
- → **25 सेमी वर्षा रेखा**– राज्य के उत्तर पश्चिमी मरुस्थल को दो भागों में बांटती है।
- ✦ थार का मरुस्थल भारत के **मानसून चक्र** को नियमित करता है। मानसून काल में **थार मरुस्थल** में एक **न्यूनदाब/अल्पदाब** का केन्द्र बनता है, इसी समय जलीय भाग में उच्चदाब का केन्द्र बनता है, मानसूनी हवाओं का स्वभाव उच्चदाब से निम्न दाब की ओर बढ़ना है। इस प्रकार थार का मरुस्थल मानसून को अपनी ओर आकर्षित करता है।

- ✦ राजस्थान की **औसत वार्षिक वर्षा** व **जयपुर, दौसा व राजसमंद जिलों** की वार्षिक वर्षा लगभग समान हैं।
- ✦ राजस्थान में **जुलाई, अगस्त** महीनों में कुल वर्षा की 60% वर्षा होती है।
- ✦ राजस्थान में सर्वाधिक वर्षा वाला महीना– **जुलाई (27 सेमी) अगस्त (21.60 सेमी.) (स्रोत– मानसून रिपोर्ट–2022 राजस्थान)**

- ✦ मानसून अवधि के दौरान 1 जून, 2023 से 30 सितम्बर, 2023 तक हुई वर्षा के अनुसार जिलों को निम्न प्रकार वर्गीकृत किया गया हैं–

क्र. स.	श्रेणी	नाम जिले	संख्या
1.	असामान्य वर्षा (सामान्य से 60 प्रतिशत तथा इससे अधिक)	बाड़मेर, जालौर	02
2.	अधिक वर्षा (सामान्य से 20 से 59 प्रतिशत अधिक)	अजमेर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, जोधपुर, नागौर, पाली, राजसमंद, सिरोही	08
3.	सामान्य वर्षा (सामान्य से (+) 19 से प्रतिशत (–) 19 प्रतिशत तक)	अलवर, बांसवाड़ा, भरतपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, चूरू, दौसा, धौलपुर, हनुमानगढ़, जयपुर, जैसलमेर, झुंझुनूं, करौली, प्रतापगढ़, सवाई–माधोपुर एवं सीकर, टोंक एवं उदयपुर	18
4.	कम वर्षा (सामान्य से (–) 20 प्रतिशत से (–) 59 प्रतिशत)	बारां, बून्दी, डूंगरपुर, झालावाड़, कोटा	05

स्रोत– वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन 2023–24

राजस्थान में जिलावार औसत वार्षिक वर्षा

क्र. स.	जिला	औसत वर्षा (C.M.)	क्र. स.	जिला	औसत वर्षा (C.M.)
1.	बांसवाड़ा	95.03	18.	सिरोही	59.12
2.	बारां	87.38	19.	राजसमंद	56.78
3.	सवाई माधोपुर	87.34	20.	जयपुर	56.38
4.	प्रतापगढ़	84.49	21.	दौसा	56.10
5.	झालावाड़	84.43	22.	सीकर	44.03
6.	चित्तौड़गढ़	84.15	23.	पाली	42.44
7.	बूँदी	77.34	24.	झुंझुनूं	40.51
8.	धौलपुर	74.45	25.	जालौर	37.00
9.	कोटा	73.24	26.	चुरू	35.47
10.	डूंगरपुर	72.89	27.	जोधपुर	31.37
11.	भीलवाड़ा	68.32	28.	नागौर	31.17
12.	करौली	67.07	29.	हनुमानगढ़	27.35
13.	टोंक	66.83	30.	बाड़मेर	26.57
14.	भरतपुर	66.39	31.	बीकानेर	24.30
15.	अलवर	65.73	32.	गंगानगर	22.64
16.	उदयपुर	64.50	33.	जैसलमेर	18.55
17.	अजमेर	60.18		राजस्थान औसत वर्षा	57.51

स्रोत– Agriculture statistics 2021-22

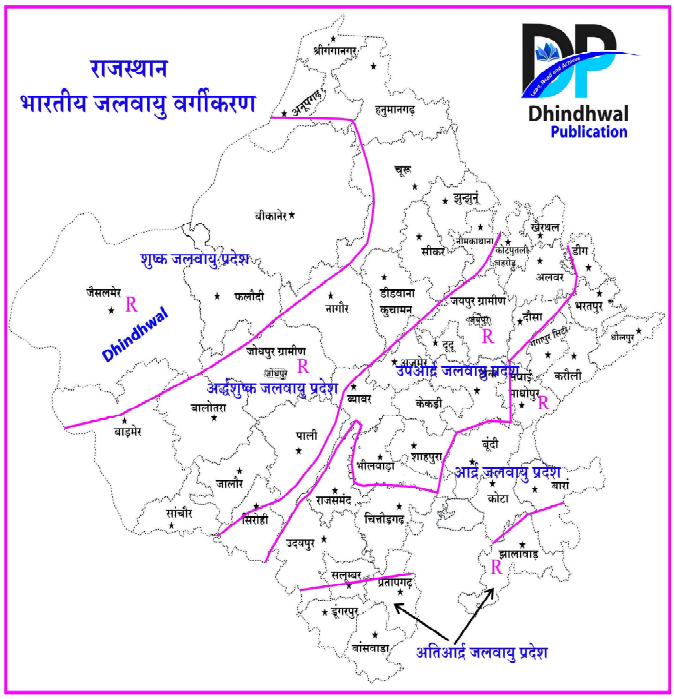

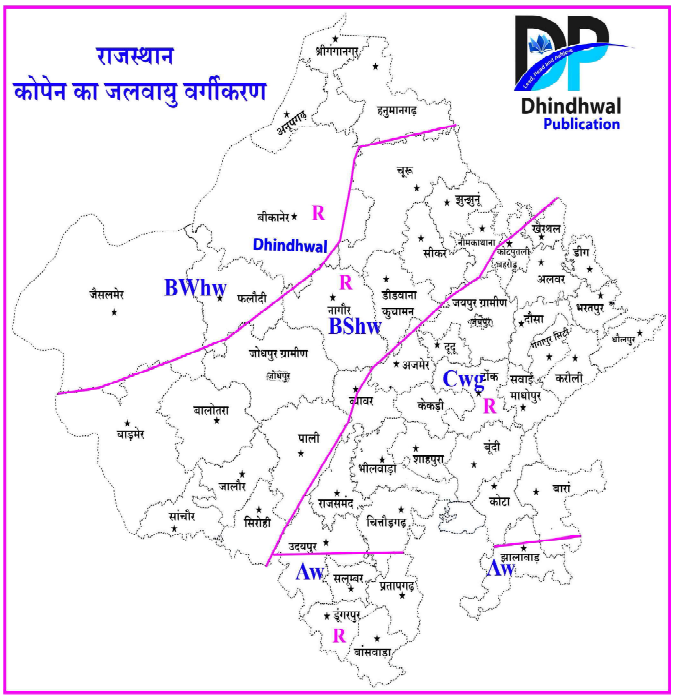

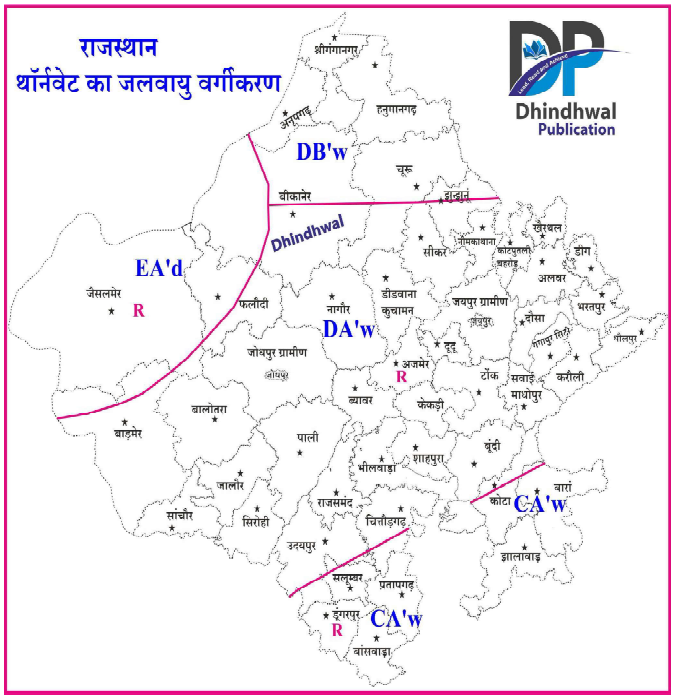

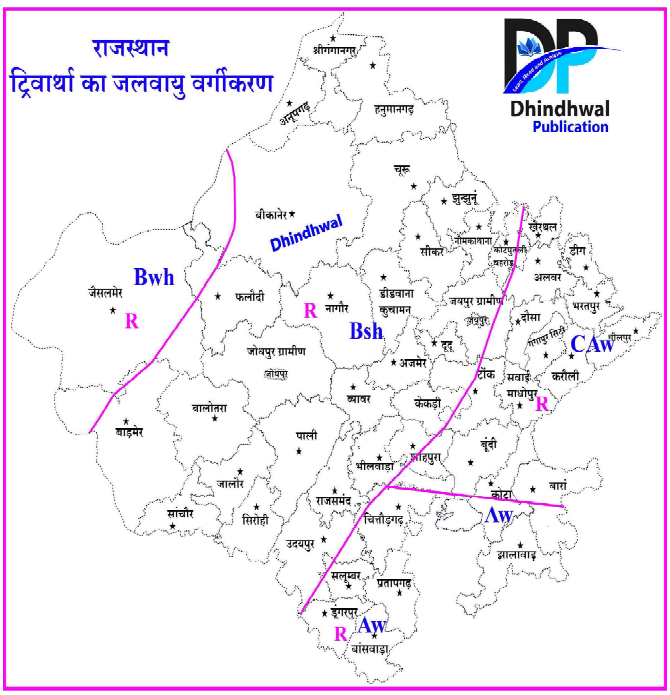

2. **अर्द्धशुष्क जलवायु प्रदेश BShw-** सीकर, झुंझुनूं, नीमकाथाना, चुरू, डीडवाना-कुचामन, नागौर, जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, उत्तरी-पश्चिमी ब्यावर, पाली, जालौर, सांचौर, सिरोही, बाड़मेर व बालोतरा। **औसत वर्षा-** 20-40 सेमी राजस्थान का सर्वाधिक भाग इसी जलवायु प्रदेश में आता है। कम वर्षा, शुष्क जलवायु, कांटेदार झाड़ियाँ पायी जाती हैं। इसमें **स्टेपी प्रकार** की वनस्पति व जलवायु पायी जाती है।
प्रतिनिधि जिला- **नागौर।**

3. **उपआर्द्र जलवायु प्रदेश Cwg-** अरावली के **दक्षिणी पूर्वी व पूर्वी** जिले (खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़, अलवर, डीग, भरतपुर, धौलपुर, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, दौसा, गंगापुर सिटी, करौली, सवाई माधोपुर, दूदू, अजमेर, टोंक, केकड़ी, दक्षिण पूर्वी ब्यावर, भीलवाड़ा, कोटा, बूँदी, बारां, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, उत्तरी उदयपुर, शाहपुरा) प्रतिनिधि जिला- **टोंक**
यहाँ **साधारण आर्द्रता व विरल वनस्पति** पायी जाती है।
औसत वर्षा- 60-80 सेमी।

6 राजस्थान में मिट्टियाँ, अपरदन एवं मरूस्थलीकरण

- मिट्टियों का अध्ययन **मृदा विज्ञान (Pedology)** कहलाता है।
- मृदा शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के **'सोलम'** (Solum) शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है **फर्श** ।
- अमरीकी मिट्टी विशेषज्ञ **डॉ. बैनेट** के अनुसार- ''भू-पृष्ट पर मिलने वाले असंगठित पदार्थो की वह ऊपरी परत जो मूल चट्टानों अथवा वनस्पति के योग से बनती है, 'मृदा' कहलाती है''।

(स्रोत- भूगोल कक्षा- 11)

- **अन्तर्राष्ट्रीय मृदा वर्ष**- संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2015 को अन्तर्राष्ट्रीय मृदा वर्ष घोषित किया था।
- **विश्व मृदा दिवस- 5 दिसम्बर**
- **2023 की थीम- मृदा और जल, जीवन का एक स्रोत।**

- मिट्टी की निर्माण प्रक्रिया में **5 तत्त्व** मुख्य रूप से सक्रिय रहते हैं-
  1. मूल चट्टान/मूल पदार्थ
  2. जलवायु
  3. वनस्पति
  4. समय
  5. धरातलीय ढ़ाल एवं चट्टान की प्रकृति

☞ **रचना विधि के अनुसार मिट्टी के दो प्रकार-**

1. **स्थानीय मिट्टी**- वह मिट्टी जो सदैव अपने मूल स्थान पर रहती है एवं बहुत कम गति करती है। यह बेसाल्ट तत्व या विखण्डित चट्टानों से निर्मित होती है। राजस्थान में **दक्षिणी** व **दक्षिणी-पूर्वी भाग** की काली मिट्टी इसका उदाहरण है।

2. **विस्थापित मिट्टी**- नदी एवं पवनों के प्रवाह से अपने मूल स्थान से हटकर अन्य स्थानों पर **स्थानान्तरित हो** जाने वाली मिट्टी **विस्थापित मिट्टी** कहलाती है। राजस्थान के **उत्तर एवं उत्तर पश्चिमी भाग** में पायी जाने वाली रेतीली, बलुई मिट्टी इसका उदाहरण है।

☞ राजस्थान की मिट्टियों को रंग गठन व उपजाऊपन के आधार पर निम्न भागों में बांटा गया है-

1. **रेतीली बलुई मिट्टी** - (**मरुस्थलीय मिट्टी**)- यह मिट्टी राजस्थान के पश्चिम भाग में पायी जाती हैं। यह राज्य में **सबसे अधिक भू-भाग पर** पायी जाने वाली मिट्टी है।
- **निर्माण प्रक्रिया**- इसका निर्माण उच्च तापमान, निम्न वर्षा एवं निम्न आर्द्रता वाले क्षेत्रों में **ग्रेनाइट व बलुआ पत्थर** के क्षरण से हुआ है। कुछ विद्वानों के अनुसार पश्चिमी राजस्थान की जलवायु दशाओं में परिवर्तन के कारण यहाँ पर रेतीली मिट्टी का निर्माण हुआ है।
- यह मिट्टी राजस्थान के **25 सेमी** से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में मिलती है।
- इस मिट्टी के **कण मोटे** होते हैं जो **नमी रोकने में असमर्थ** होते हैं इसमें **नाइट्रोजन** व **कार्बनिक तत्त्वों** की कमी एवं **कैल्शियम** व **फॉस्फेट तत्त्वों की अधिकता** होती है, इस कारण यह भूमि अनुपजाऊ होती है।
- इसमें **PH मान** की **अधिकता** व **जैविक पदार्थों की कमी** पायी जाती है।
- यह मृदा पवनों के द्वारा स्थानांतरित होती रहती है।
- इस मृदा में बाजरा, मोठ, ग्वार आदि खरीफ फसलें उत्पन्न की जाती हैं, लेकिन कुछ सिंचित क्षेत्रों में रबी की फसल भी उत्पन्न की जाती है।
- जिले- **जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा, फलौदी, जोधपुर ग्रामीण, बीकानेर, नागौर, डीडवाना-कुचामन, चुरू, झुंझुनूं, सीकर, अनूपगढ़ व गंगानगर।**

☞ रेतीली मिट्टी मुख्यतया: **तीन प्रकार** की होती है।

✦ **लाल रेतीली मिट्टी**- इसमें **जल को सोखने की क्षमता** अन्य रेतीली मिट्टी की अपेक्षा अधिक होती है। अगर पानी की उपलब्धता हो तो यह मिट्टी **कृषि के लिए उत्तम** है।
- **जिले- जोधपुर ग्रामीण, नागौर,डीडवाना-कुचामन, पाली, जालौर, सांचौर, चुरू व झुंझुनूं।**

✦ **खारी मिट्टी**- इस मिट्टी में **लवणों की अधिकता** होती है इसी कारण इस मिट्टी में कृषि सम्भव नहीं है। यहाँ केवल **मृदा अवरोधी घासें** ही उग सकती हैं।
- **जिले-** जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा, बीकानेर, नागौर, डीडवाना-कुचामन जिले के निम्न क्षेत्रों/गर्तो में पायी जाती है।

✦ **पीली भूरी रेतीली मिट्टी**- इस मिट्टी का राज्य में प्रसार **नागौर** व **पाली जिले** में है इस मिट्टी में तीन से चार फीट गहराई पर **चूना मिश्रित मिट्टी** की परत पाई जाती है जिसे **'स्टेपी मिट्टी'** कहते हैं।

2. **भूरी रेतीली मिट्टी**- रेत के **छोटे-छोटे टीलों वाले भाग** में पायी जाने के कारण भूरी रेतीली मिट्टी को **ग्रे-पेन्टेड/धूसर मरुस्थलीय /सिरोज्म मिट्टी** भी कहते हैं। जिसका **रंग भूरा** होता है। इसका प्रसार क्षेत्र मुख्यतः अरावली के पश्चिमी भाग **बाड़मेर, बालोतरा, जालौर, सांचौर, जोधपुर ग्रामीण, पाली, नागौर, डीडवाना-कुचामन सिरोही, सीकर, झुंझुनूं** व **नीमकाथाना** में है।
- इसमें **फॉस्फेट तत्त्वों की अधिकता** होती है। इस मिट्टी की उर्वरता **नाइट्रेट** की उपस्थिति के कारण और **अधिक बढ़** जाती है।
- इसमें मुख्यतः ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ व बारानी कृषि होती है।

☞ **नोट-** पश्चिमी राजस्थान की मिट्टियाँ प्रायः बालूमय हैं, जिनमें 90-95 प्रतिशत तक बालू कण पाए जाते हैं व 5-7 प्रतिशत तक मटियार पायी जाती है।

3. **भूरी मिट्टी**- इस मिट्टी का प्रसार **अरावली के पूर्वी भाग** में है यह मुख्यतः **बनास बेसिन में** पायी जाती है इसमें **नाइट्रोजन** व **फास्फोरस तत्त्वों** का अभाव होता है। यह बनास नदी के प्रवाह क्षेत्र की मृदा है, जो कृषि के लिए उपयुक्त है।

- **UNCCD-COP 16-** UNCCD के Conference Of Partiess का 16वां सैशन का आयोजन **वर्ष-2024** में (रियाद) **सऊदी अरब** में 2 से 13 दिसम्बर 2024 के मध्य किया जाएगा।

✦ राज्य में प्रमुख भूमि सुधार कानून-

- **राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955** (15 अक्टूबर 1955 को लागू) वर्ष 2020 से 15 अक्टूबर को राजस्व दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की गई। **(स्रोत- सूजस अगस्त 2022)**
- ✦ **राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम :-** कृषि भूमि का सुव्यवस्थित रिकॉर्ड रखने के उद्देश्य से **23 मई, 1956** को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम पारित किया गया। इसके पारित होने से किसानों को अपनी भूमि पर हक मिला। **(स्रोत- सूजस अगस्त 2022)**
- **राजस्थान भूमि सुधार व जागीरदारी पुनर्ग्रहण अधिनियम-1952**
- **राजस्थान जागीरदारी व बिश्वेदारी उन्मूलन अधिनियम-1959**

- ✦ क्षेत्रफल की दृष्टि से सर्वाधिक **बंजर भूमि** वाला जिला- **जैसलमेर**
- ✦ प्रतिशत की दृष्टि से **सर्वाधिक बंजर भूमि** वाला जिला- **जैसलमेर(54.08%)**
- ✦ प्रतिशत की दृष्टि से **न्यूनतम बंजर भूमि** वाला जिला- **हनुमानगढ़ (0.17%)**
- ✦ राजस्थान में **सर्वाधिक परती भूमि** वाला जिला- **जोधपुर**

(स्रोत- कृषि सांख्यिकी 2020-21)

❖ समेकित बंजर भूमि विकास कार्यक्रम-

- केन्द्र सरकार ने इस कार्यक्रम की शुरुआत **1989-90** में की। राजस्थान के **10 जिलों** (जयपुर, सीकर, जोधपुर, टोंक, उदयपुर, अजमेर, भीलवाड़ा, झालावाड़, जैसलमेर व पाली) में इसे **1992-93** प्रारम्भ किया गया।
- इसे **ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग** के माध्यम से क्रियान्वित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य **पर्यावरण संतुलन बनाए रखना** व **वनों की कटाई** पर रोक लगाना है।

❖ मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना (Soil Health Card)-

- **19 फरवरी, 2015** को **सूरतगढ़** से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रारम्भ की गई थी। इस योजना में **केन्द्र का 75% तथा राज्य का 25%** हिस्सेदारी है।
- ध्येय वाक्य- **स्वस्थ धरा, खेत हरा।**
- इस योजना में खेतों से मिट्टी के नमूने संग्रहित कर उनका विश्लेषण कर 'सॉयल हैल्थ कार्ड' जारी किया जाता है। इस कार्ड का प्रति **2 वर्ष पर** नवीनीकरण होता है।
- **योजना का उद्देश्य-** मिट्टी की खराब होती गुणवता की जाँच करने, किसानों को उनके खेत की मिट्टी के पोषक तत्वों के बारे में उचित मात्रा की जानकारी देना तथा कृषि उत्पादकता को बढ़ाना है।

❖ राजस्थान बंजर भूमि एवं चारागाह विकास बोर्ड -

राज्य की बंजर भूमि और चारागाहों को विकसित करने के उद्देश्य से 22 दिसम्बर, 2016 को **'राजस्थान बंजर भूमि एवं चारागाह विकास बोर्ड'** के नाम से पुनर्गठित किया गया है।

- पुनर्गठित बंजर भूमि एवं चारागाह विकास बोर्ड का पुनर्गठन 11 फरवरी, 2022 को किया गया।
- राज्य के 8 जिलों- **कोटा, बारां, बूँदी, झालावाड़, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर एवं बीकानेर आई.टी.सी. एवं एफ.ई.एस.** के समन्वय से इन जिलों में गठित त्रिस्तरीय बंजर भूमि एवं चारागाह विकास समितियों के सदस्यों एवं संबंधित भागीदारों की क्षमता अभिवर्धन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का निर्धारण किया जा रहा है।

प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

1. किस मिट्टी को 'रेगुर मिट्टी' के नाम से जाना जाता है?
काली मिट्टी **(Hostel Superintedent-2024)**

2. केम्बोर्थिड्स, केल्सीऑर्थिड्स, सेलोर्थिड्स और पेलिऑर्थिड्स निम्न में से राजस्थान की किस मृदा के उप-विभाग है?
एल्फीसोल्स/एण्टीसोल्स/एरिडीसोल्स/वर्टीसोल्स/अनुत्तरित प्रश्न
एरिडीसोल्स **(RPSC AEN -2024)**

3. सिरोही, पाली तथा राजसमन्द में अधिकांशतः निम्नलिखित में से किस प्रकार की मृदा पाई जाती है? **(Curator -2024)**
एन्टिसोल/इन्सेप्टीसोल्स/वर्टीसोल्स/ एरिडीसोल्स/अनुत्तरित प्रश्न
इन्सेप्टीसोल्स

4. इसरो के भारत मरुस्थलीकरण तथा भूमि क्षरण 'एटलस-2021' के अनुसार राजस्थान में (2018-19 में) पवन अपरदन के बाद मरुस्थलीकरण /भूमि क्षरण की सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया निम्नलिखित में से कौनसी है?
जल अपरदन/ जल भराव/वनस्पति क्षरण/अति सिंचाई
वनस्पति क्षरण **(Curator -2024)**

5. राजस्थान में रेगिस्तान के विस्तार के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/कौनसे सही है? नीचे दिये गये कथनों में सही विकल्प का चयन करें? **(Raj. Police (L-2) -2024)**
1. उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम हवा की दिशा के कारण राजस्थान में मरूस्थलीकरण की प्रवृत्ति अधिक रही है।
2. थार रेगिस्तान एक मानसून संचालित रेगिस्तान है। जहाँ हवा का कटाव एक बड़ी समस्या है। गर्मियों के दौरान जहाँ अरावली पर्वतमाला रेगिस्तान के प्रसार में एक बड़ी बाधा है वहीं बड़े पैमाने पर खनन से पर्वतमाला में कटौती रेगिस्तान के प्रसार को बढ़ावा देती है।
केवल 1/1 और 2/केवल 2/इनमें से कोई नहीं
1 और 2

6. निम्न में से कौनसा समूह (मृदा प्रकार-जिला) सुमेलित है?
इनसेप्टी सॉइल- झालावाड़/वर्टी सॉइल- दौसा/अल्फी सॉइल- जैसलमेर/ एण्टी सॉइल- बाँसवाड़ा/अनुत्तरित प्रश्न
इनसेप्टी सॉइल- झालावाड़ **(Asst. Pro. Geo.-2024)**

7 राजस्थान में सूखा, अकाल व आपदा

- सूखा एक प्राकृतिक आपदा है, सामान्यतः वर्षा की कमी के कारण क्षेत्र में जल की कमी की स्थिति को **'सूखा'** कहते हैं। जब सूखे के कारण मनुष्यों व पशु पक्षियों के लिए खाद्यान्न, चारा व पीने के पानी की कमी हो जाती है उसे **'अकाल'** कहते हैं।
- राजस्थान में अकाल के सम्बन्ध में एक **कहावत** प्रसिद्ध है-
  तीजो कुरियो आठों काल ।
  अर्थात् प्रत्येक तीसरे वर्ष **कुरिया** (छोटा अकाल/अर्द्ध अकाल) होता है व प्रत्येक आठवें साल **भयंकर अकाल** पड़ता है।
- **त्रिकाल**- यह सबसे भयंकर अकाल है, जिसमें अन्न, जल व त्रृण तीनों का अभाव हो जाता है। राजस्थान में 1987 में त्रिकाल पड़ा था।

राजस्थान में अकाल	वर्ष
चालीसा अकाल-	1783 ई.
पंचकाल-	1812-13 ई.
सहसा भूदुसा-	1843-44 ई. (1900-01 विक्रम संवत्)
छप्पनिया काल-	1899-1900 ई. (1956 विक्रम संवत्)

❖ सूखा

- भारतीय मौसम विभाग ने सूखे को **दो विभागों** में बांटा हैं-
  1. प्रचंड सूखा **2. सामान्य सूखा**
- **प्रचंड सूखा-** प्रचंड सूखे में **50 प्रतिशत** से कम बारिश होती है।
- **सामान्य सूखा-** सामान्य सूखे में औसत वर्षा से 25 प्रतिशत कम बारिश होती है।

➢ **सूखे के प्रकार-**

1. **मौसम विज्ञान संबंधी सूखा-** अपर्याप्त वर्षा, अनियमितता, पानी का असमान वितरण।
2. **जल विज्ञान संबंधी सूखा-** पानी का अभाव, भू-जल स्तर का निम्न होना, जलाशयों का सूखना।
3. **कृषि संबंधी सूखा-** फसल अथवा चारे की कमी, मृदा की नमी में कमी।
4. **पारिस्थितिक सूखा** - प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र में जल की कमी से उत्पादकता में कमी हो जाती है।

- राजस्थान में सूखे की **सर्वाधिक आवृति**-
  जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर, जालौर, सिरोही- **तीन वर्ष में 1 बार**
- राजस्थान में सूखे की **न्यूनतम आवृति**-
  भरतपुर व धौलपुर- **8 वर्ष में 1 बार**

स्रोत- आपदा प्रबंधन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा विभाग

- राजस्थान में अकाल की **सर्वाधिक संभावना** वाला भाग- **पश्चिमी भाग**
- राजस्थान में **शुष्क** व **अर्द्धशुष्क जलवायु** क्षेत्र सूखे से अधिक प्रभावित है। राजस्थान का अधिकांश्ज्ञ भाग, विशेषकर अरावली के पश्चिम में स्थित मरुस्थली क्षेत्र अत्यधिक सूखा प्रभावित है। जिसमें **जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा, जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, फलौदी, जालौर, सांचौर** व **सिरोही** जिले शामिल है।
- राजस्थान में सूखा व अकाल प्रबंधन के लिए नोडल विभाग **'आपदा प्रबंधन एवं सहायता विभाग'** है।
- राजस्थान में अकाल के संबंध में **प्रसिद्ध दोहा-**
  पग पूगल धड़ कोटड़े, बाहु बाड़मेर।
  जाये लादे जोधपुर, ठावौ जैसलमेर।
- अर्थात्- अकाल बीकानेर के पूगल क्षेत्र में पाँव पसारे हुए रहता है जबकि इसका धड़ कोटड़े (जैसलमेर व बाड़मेर के मध्य स्थित) में तथा बाहें बाड़मेर में फैली रहती है। जोधपुर में तो भूल-चूक से अकाल आता है परन्तु जैसलमेर में तो इसकी चर्चा सदैव रहती है।

राजस्थान में अकाल की स्थिति	
सर्वाधिक अकाल प्रभावित जिले	वर्ष 2002-03 में **32 जिले**
	वर्ष 2004-05 में 31 जिले
न्यूनतम अकाल प्रभावित जिले	वर्ष 2022-23 में मात्र **1 जिला**
	वर्ष 2010-11 में मात्र 2 जिले
सर्वाधिक अकाल प्रभावित गाँव	वर्ष 2002-03 में **40,990 गाँव**
	वर्ष 2009-10 में 33,464 गाँव
न्यूनतम अकाल प्रभावित गाँव	वर्ष 2022-23 में **92 गाँव**
	वर्ष 2010-11 में 1249 गाँव
सर्वाधिक अकाल प्रभावित जनसंख्या	वर्ष 2002-03 में **447.8 लाख**
	वर्ष 2009-10 में 429.13 लाख
न्यूनतम अकाल प्रभावित जनसंख्या	वर्ष 2022-23 में **2.36 लाख**
	वर्ष 2010-11 में 13.67 लाख

स्रोत- आपदा प्रबंधन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा विभाग
स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2023-24

- **सूखे के कारण अभावग्रस्त गाँव- खरीफ संवत्-2080** (वर्ष 2023) के अन्तर्गत राज्य के **13 जिलों** यथा- अजमेर, ब्यावर, बाड़मेर, बालोतरा, बीकानेर , चुरू, डूँगरपुर, दूदू, जैसलमेर, जोधपुर, जोधपुर (ग्रामीण), फलौदी एवं नागौर की **48 तहसीलों को सूखा अभावग्रस्त घोषित** कर अधिसूचना जारी की गई।
- **बाढ़ के कारण अभावग्रस्त गाँव- खरीफ संवत्-2080** (वर्ष 2023) में राज्य के **2 जिलों** (जालौर व नागौर) के कुल 238 गांवों को बाढ़ से फसल खराब होने पर अभावग्रस्त घोषित किया गया।
- **बिपरजॉय चक्रवात-** बिपरजॉय चक्रवात से राज्य के 5 जिले (जालौर, सिरोही, पाली, बाड़मेर व राजसमंद) प्रभावित हुए।
- ❖ **भूकंप संभावित क्षेत्र-** राजस्थान में सर्वाधिक भूकंप संभावित क्षेत्र- **अलवर, खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़, डीग , बाड़मेर** व **सांचौर**।

(स्रोत- आपदा प्रबंधन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा विभाग)

8 राजस्थान की वन सम्पदा व पर्यावरण

- वन प्रकृति प्रदत्त अनूठा संसाधन है, सभ्यता के प्रारम्भिक काल से ही वन सम्पदा पृथ्वी पर पशु पक्षी एवं **मानव जाति की शरणस्थली** तथा जीवनयापन का प्रमुख साधन रहे हैं। प्राचीन काल में इन वनों में वन्यजीव स्वच्छन्द भ्रमण करते थे, तब इन वनों में आर्थिक, सांस्कृतिक गतिविधियाँ तथा धार्मिक कार्य किये जाते थे।
- प्राचीन काल में **वन देवता की पूजा** की जाती थी। प्रकृति का संतुलन बनाने में सहयोग करने, मृदा व जल का संरक्षण करने तथा जन्म से मृत्यु तक सभी अवस्थाओं में मनुष्य के लिए उपयोगी होने के कारण वन प्राकृतिक संसाधनों का **महत्त्वपूर्ण अंग** बने हुए हैं।
- किसी देश की अर्थव्यवस्था, पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी सन्तुलन एवं विकास में वनों का अपना विशेष योगदान है। राजस्थान का **अरावली प्रदेश** किसी समय वनों से अटा रहता था परन्तु अब वह स्थिति नहीं है।
- राजस्थान में वनों के कम होने के पीछे प्राकृतिक, सरकारी व व्यक्तिगत कारक उत्तरदायी हैं। बढ़ते औद्योगिकीकरण और जनाधिक्य के कारण भी राजस्थान की **वन सम्पदा निरन्तर सिमटती** जा रही है। राजस्थान की वन सम्पदा का **विस्तृत अध्ययन** निम्न है-

- राजस्थान में **वन संरक्षण** की प्रथम योजना- **जोधपुर रियासत** में 1910 में।
- वन संरक्षण के **प्रथम नियम** बनाने वाली रियासत- जोधपुर 1921 में **(मारवाड़ शिकार नियम)**
  इसके बाद **कोटा** राज्य (कोटा जंगलात कानून) में 1924 में, **जयपुर** (जयपुर शिकार नियम) में 1931 में शिकार कानून बने।
- राजस्थान में शिकार पर सर्वप्रथम प्रतिबन्ध- **टोंक रियासत**, 1901 में
- **वन अधिनियम** बनाने वाली राजस्थान की प्रथम रियासत- **अलवर रियासत** (1935 में)
- **राष्ट्रीय वन अधिनियम 1951** - यह राजस्थान में राजस्थान वन अधिनियम, **1953** के नाम से लागू हुआ।
- राजस्थान में नवीनतम **राजस्थान वन (संशोधन) अधिनियम**, 2014 को दिनांक **4 मार्च, 2014** से लागू किया गया है।
- **प्रथम राष्ट्रीय वन नीति - 12 मई, 1952**, इसमें **33% भाग** पर वनों पर जोर दिया गया तथा पहाड़ी क्षेत्रों व पर्वतीय प्रदेशों में **60%** भाग व मैदानी क्षेत्रों में **20%** भाग पर वनों पर जोर दिया गया।
- **द्वितीय राष्ट्रीय वन नीति** - दिसम्बर **1988 में**
- **वन संरक्षण अधिनियम 1980** - ये 25 अक्टूबर, 1980 को लागू हुआ। इसके तहत् वन भूमि में किसी भी गैर वानिकी कार्य की क्रियान्विती से पूर्व भारत सरकार की अनुमति आवश्यक है।
- राजस्थान की प्रथम **वन व पर्यावरण नीति** 18 फरवरी, 2010 को जारी की गयी थी। जिसमें **20%** वनों का लक्ष्य रखा गया था।

☞ **ध्यान रहे-** राजस्थान वन एवं पर्यावरण नीति घोषित करने वाला **देश का पहला राज्य** है।

- **राजस्थान वन नीति 2023-** 5 जून, 2023 को जारी की गई। इसमें राज्य में वनस्पति आवरण को कुल भौगोलिक क्षेत्र के 20 प्रतिशत तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया है।

- **राजस्थान वन विभाग** की स्थापना के समय 1949-50 में राजस्थान में 13% भाग पर वन थे।

वनों का प्रशासनिक वर्गीकरण (इन्हे 3 भागों में बांटा जाता है)

क्र. सं.	वनों का प्रकार	प्रतिशत (31 मार्च 2023 तक की स्थिति)	सर्वाधिक प्रसार	विवरण
1	आरक्षित वन (Reserved forest)	36.99% 12178.03 वर्ग किमी	उदयपुर, चितौड़गढ, अलवर	इन वनों पर पूर्ण सरकारी नियंत्रण होता है, इनमें लकड़ी काटने व पशु चराई पर पूर्ण प्रतिबन्ध होता है। ये वन राष्ट्रीय उद्यान व अभयारण्य के आंतरिक व बाह्य भागों में मिलते हैं।
2	रक्षित वन/ सुरक्षित वन (Protected forest)	56.51% 18605.18 वर्ग किमी	बारां, करौली, उदयपुर	इन वनों में लकड़ी काटने व पशु चराई के लिए वन विभाग से अनुमति /ठेका लिया जाता है। (अभयारण्यों के बाह्य भागों में, मृगवन व आखेट निषिद्ध क्षेत्र आदि)
3	अवर्गीकृत वन (Unclassified forest)	6.50% 2137.79 वर्ग किमी	बीकानेर, गंगानगर, जैसलमेर	इनमें लकड़ी कटाई व पशु चराई पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होता है। ये वन पवित्र वन, ओरण, नदी, झील, तालाब, सड़कों के किनारे मिलते हैं।
		32921.00 वर्ग किमी	स्रोत- प्रशासनिक प्रतिवेदन वन विभाग राजस्थान 2023-24	

- इस योजना के तहत् **तुलसी, गिलोय, कालमेघ** व **अश्वगंधा** के (प्रत्येक के 2-2) कुल 8 पौधों की एक किट प्रत्येक परिवार को निःशुल्क दी जा रही है। इस योजना को **2021-22 से 2025-26 तक** चलाया जायेगा। इसकी नोडल एजेंसी **वन विभाग** है।

❖ **हरित राजस्थान स्वस्थ राजस्थान** - राजस्थान सरकार ने घर-घर औषधी योजना का विस्तार कर नए रूप में लागू करने को मंजूरी दी है। इसमें **'हरित राजस्थान स्वस्थ राजस्थान'** की संकल्पना के साथ प्रदेश में सघन वृक्षारोपण किया जाएगा। इसके तहत् 2022-23 में 42 करोड़ की लागत से **5 करोड़** पौधे तैयार किए जायेंगे। इनमें से 1 करोड़ पौधे ग्राम पंचायतों, **1 करोड़** पौधे नगरीय क्षेत्रों को तथा **3 करोड़** पौधे आमजन को उपलब्ध कराये जायेंगे।

❖ **ट्री आउटसाइड फॉरेस्ट राजस्थान (TOFR)**- राजस्थान को हरित प्रदेश बनाने की दिशा में राजस्थान ग्रीनिंग एण्ड रीवाईल्डिंग मिशन के तहत् वनस्पति आवरण को बढ़ाने और वन क्षेत्रों के बाहर हरियाली बढ़ाने के लिए **वर्ष 2023-24** में यह नवीन योजना संचालित की गयी है।

- इसके तहत् प्रदेश में विभिन्न विभागों और संस्थाओं और नागरिकों के सहयोग से प्रतिवर्ष **5 करोड़ पौधे** लगाने का लक्ष्य रखा गया है। इनमें से 1 करोड़ पौधे गौचर, ओरण तथा चारागाह, 1 करोड़ पौधे विभिन्न शहरी क्षेत्रों में तथा 3 करोड़ पौधे जन-साधारण को खेतों व घरों में लगाने के लिए उपलब्ध कराये जायेंगे। **(स्रोत- आर्थिक समीक्षा 2023-24)**

❖ राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता परियोजना **फेज-2** में 2 नवीन परियोजनाएँ प्रारम्भ की जाएंगी, जिनका विवरण निम्न प्रकार है-

1. **Rajasthan Afforestation and Biodiversity Conservation Project (RABCP)**- कुल 1803.42 करोड़ रुपए लागत वाली यह परियोजना **JICA (जापान)** की आर्थिक सहायता से राजस्थान के **19 जिलों** में क्रियान्वित की जा रहा है। इनमें अजमेर, बाड़मेर, बांसवाड़ा, बीकानेर, चुरू, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, जयपुर, जैसलमेर, जालौर, झुंझुनूं, जोधपुर, नागौर, पाली, प्रतापगढ़, सीकर , सिरोही, राजसमंद व उदयपुर जिले शामिल है।

2. **Rajasthan Forestry and Biodiversity Development Project (RFBDP)**- यह परियोजना **AFD (Agence Fraence Development)** की वित्तीय सहायता से राजस्थान के **13 जिलों** में क्रियान्वित की जा रही है। इसमें अलवर, बारां, भीलवाड़ा, भरतपुर, बूंदी, दौसा, धौलपुर, जयपुर, झालावाड़, करौली, कोटा, सवाईमाधोपुर व टोंक शामिल हैं।

- यह परियोजना मूलतः 2023-24 से 2030-31 तक **8 वर्ष** हेतु स्वीकृत की गई है। इस परियोजना की कुल लागत 1693.91 करोड़ रूपये है, जिसमें **AFD** एवं राज्य का प्रतिशत **70:30** है।

❖ **Wetland Ex-situ Conservation Establishment - (WESCE)**- यह योजना राजस्थान वानिकी और जैव विविधता विकास परियोजना (RFBDP) का हिस्सा है। जिसके लिए फ्रांस सरकार की विदेशी विकास शाखा (AFD) ने 8 वर्षों में 12 करोड़ रूपये धनराशि देने की सहमति जतायी।

- **मुख्य उद्देश्य**- केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान की जैव विविधता को पुनजीर्वित करना है।

❖ **एक पेड़ माँ के नाम अभियान**- इस अभियान की शुरुआत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा **05 जून, 2024** (विश्व पर्यावरण दिवस) से की गई। इसके तहत् इस वर्ष माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा वृक्षारोपण महाभियान के माध्यम से हर परिवार को जोड़ते हुए **7 करोड़ पौधे** लगाने व पालने का लक्ष्य रखा गया है।

✦ **मिशन हरियाळो राजस्थान**- **Multi Sectoral Programme** के रूप में मिशन हरियाळो राजस्थान शुरू किया जायेगा। इस मिशन के अन्तर्गत **5 वर्षों** में **लगभग 4 हजार करोड़** की राशि व्यय कर निम्न कार्य करवाये जायेंगे-

i. प्रत्येक जिले में आमजन की सहभागिता से एक-एक **'मातृ वन'** की स्थापना की जायेगी। इसके साथ ही **One-District- One Species** कार्यक्रम लागू कर प्रत्येक जिले के लिए विशेष नस्ल के पौधे तैयार किये जायेंगे।

ii. **वन मित्र**- **2 हजार** स्थानीय व्यक्तियों को **Incentive** के आधार पर वन मित्र लगाया जायेगा।

iii. **Forest and Wildlife Training Cum Menagement Institute**- वन विभाग के कार्मिकों, **Joint Forest management Committees (JFMCs)** के सदस्यों सहित समस्त **Stakeholders** की प्रबंधकीय योग्यता बढ़ाने की दृष्टि से झालाना (जयपुर) **40 करोड़ रूपये** की लागत से इस **Institute** की स्थापना की जायेगी।

iv. **Forest Carbon Credits Certification Mechanism**- वन संरक्षण के अन्तर्गत **नवाचार** के रूप में इस **Mechanism** की स्थापना की जायेगी। (बजट घोषणा 2024-25)

❖ **बजट घोषणा 2024-25**- राजस्थान को हरित प्रदेश के रूप में विकसित करने की दृष्टि से **2028 तक वन क्षेत्र में 20 हजार हैक्टेयर** की वृद्धि किये जाने का लक्ष्य निर्धारित है।

❐ अन्य योजनाएँ-

✦ **ग्रामीण वन योजना** - 1981 में

✦ **रूंख भायला कार्यक्रम**-1985 में डूँगरपुर जिले से, सातवीं पंचवर्षीय योजना में राजीव गाँधी द्वारा उद्घाटन किया गया।

- रूंख भायला का **शाब्दिक अर्थ**- वृक्ष मित्र

✦ **साझा वन प्रबंध की सुदृढ़ीकरण योजना**- वनों की सुरक्षा एवं प्रबन्धन में स्थानीय समुदायों की सक्रिय सहभागिता लेने हेतु 'संयुक्त वन प्रबंधन कार्यक्रम' **15 मार्च, 1991** को प्रारम्भ किया गया तथा इसके तहत् वर्तमान में राजस्थान में **6,388** समितियाँ (ग्राम वन संरक्षण एवं प्रबंध समितियाँ एवं पारस्थितिकी विकास समितियाँ) गठित है।

✦ **जनता वन योजना**- **21** मार्च, 1996 राज्य सरकार द्वारा

✦ **समन्वित ग्रामीण वनीकरण समृद्धि योजना**- 2001-02 से प्रारम्भ, इसके तहत् राजस्थान के सभी जिलों में वन विकास अभिकरणों का गठन किया गया है।

9 जैव विविधता, वन्यजीव एवं अभयारण्य

जैव विविधता –

- जैव विविधता से तात्पर्य जैव मंडल में पाये जाने वाले जीवों की विभिन्न जातियों में पाई जाने वाली विविधता से है। **जैव विविधता** शब्द का प्रथम प्रयोग **वाल्टर जी. रोजेन** ने किया था।
- जैव विविधता का जनक– **एडवर्ड ओ. विल्सन।**
- **जैव विविधता अधिनियम 2002–** 22 मई, 1992 को **नैरोबी** में हुए **'जैव विविधता सम्मेलन'** की अनुपालना में भारतीय संसद ने 2002 में जैव विविधता अधिनियम 2002 पारित किया है। इसके तहत् अक्टूबर 2003 में **'राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण'** की स्थापना **चेन्नई** में की गई है।
- **अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस** – 22 मई।
  2024 की थीम– योजना का हिस्सा बनें (Be Part of the Plan)
- जैव विविधता का अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष – **2010**
- **जैव विविधता दशक–** 2011–2020, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने जैव विविधता के लिए उत्पन्न खतरों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए 2011–2020 की अवधि को **'संयुक्त राष्ट्र जैव विविधता दशक'** घोषित किया है।
- भारत में जैव विविधता के 4 तप्त स्थल (**Hot Spot**) है–
  1. पश्चिमी घाट 2. हिमालय क्षेत्र
  3. इण्डोबर्मा क्षेत्र 4. सुन्दरलैण्ड

☞ **ध्यान रहे–** राजस्थान में एक भी जैव विविधता **तप्त स्थल** नहीं है।

- **राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड–** भारत सरकार द्वारा अधिसूचित जैव विविधता अधिनियम 2002 के प्रावधान के तहत् 'राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड' की स्थापना **14 सितम्बर, 2010** को की गई।

❖ **राजस्थान जैव विविधता नियम–** राजस्थान राज्य जैव विविधता अधिनियम 2002 की **धारा 63 (1)** के तहत् 2 मार्च, 2010 को राजस्थान जैविक विविधता नियम 2010 अधिसूचित किए गए।

✦ पारिस्थितिकी संकट के अध्ययन हेतु 1948 में **IUCN** (**International Union For Conservation Of Nature & Natural Resources**) का गठन किया गया, जिसका मुख्यालय **स्विट्जरलैण्ड** के **Gland शहर** में है।

✦ **WWF** (**World Wild Life Fund**)– की स्थापना 1962 में की गई। इसका मुख्यालय स्विट्जरलैण्ड के **ग्लैंड शहर** (**Gland**) में है। इसका वर्तमान नाम WWFN (**World Wild Life Fund For Nature**) है, इसका प्रतीक **लाल पाण्डा** है।

✦ **रेड डाटा बुक–** **IUCN** के उत्तरजीविता आयोग ने विश्व की संकटग्रस्त पादपों एवं जन्तु जाति के वर्णन सहित लाल आंकड़ों की पुस्तक (रेड डाटा बुक) जारी की है जिसका पहला संस्करण **1 जनवरी, 1972** को प्रकाशित किया गया। इसमें अलग–अलग रंगों के पृष्ठों में विभिन्न प्रजातियों का उल्लेख है।

✦ भारत में **18 जैव मंडल रिजर्व** (बायोस्फीयर रिजर्व) हैं जिनमें से 12 को **UNESCO** ने विश्व प्राकृतिक धरोहर घोषित किया है। देश का सबसे बड़ा बायोस्फीयर रिजर्व **कच्छ का रन** है।

✦ राजस्थान में **आर्द्रभूमि का क्षेत्रफल** (अनुमानित)– **782384 हेक्टेयर**
- सर्वाधिक वेटलैण्ड क्षेत्र वाला जिला– **भीलवाड़ा (72563 हे.)**
- जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में सर्वाधिक वेटलैण्ड प्रतिशत वाला जिला– **भीलवाड़ा (6.94%)**
- न्यूनतम वेटलैण्ड क्षेत्र वाला जिला– **चुरू (1368 हेक्टेयर)**
- जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में न्यूनतम वेटलैण्ड प्रतिशत वाला जिला– **चुरू (0.08%)**
- राजस्थान में तटीय वैटलैण्ड क्षेत्र वाला एकमात्र जिला– **सांचौर**

(स्रोत– राजस्थान वेटलैंड एटलस)

❖ **ढंढ तालाब व ब्रह्म तालाब** – उदयपुर जिले के **मेनार गाँव** में स्थित ढंढ तालाब व ब्रह्म तालाब को **'ढंढ–ब्रह्म वेटलैंड कॉम्पलेक्स'** के नाम से **वेटलैंड क्षेत्र** घोषित किया गया है।

(स्रोत– राजस्थान वैटलैंड एटलस)

☞ **नोट–** राजस्थान में (जुलाई 2024 तक की स्थिति) अधिसूचित वेटलैण्ड की **संख्या 76** है। जिनकी सूची **इस अध्याय के अंत में** दी गई है।

✦ **राजस्थान वैटलैण्ड अथॉरिटी–** 10 अप्रैल, 2018 को गठित की गई। इसके अध्यक्ष राजस्थान के **वन** एवं **पर्यावरण मंत्री** होंगे। इसमें अध्यक्ष सहित 20 सदस्यों का प्रावधान किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य राजस्थान में आर्द्र भूमि व झीलों के संरक्षण एवं प्रबन्ध को प्रोत्साहित करना है।

✦ **रामसर अभिसमय स्थल–** 2 फरवरी, 1971 को **ईरान** के **रामसर शहर** में कैस्पियन सागर के तट पर एक विश्व सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसके तहत् विश्व की **आर्द्र भूमियों** (**Wet Lands**) को प्राकृतिक जैव विविधता स्थल मानते हुये उन्हें **रामसर अभिसमय स्थल** के रूप में संरक्षित करने का निर्णय लिया गया। यह समझौता 1975 में अस्तित्व में आया जिसमें भारत 1 फरवरी, 1982 को शामिल हुआ।

✦ स्थल का वह हिस्सा जो हमेशा जल से संतृप्त हो या जल में डूबा रहे **'आर्द्र भूमि'** कहलाता है।

✦ **विश्व आर्द्रभूमि दिवस– 2 फरवरी**
वर्ष 2024 की थीम– **वेटलैण्ड्स एंड ह्यूमन वेलबीइंग**
(आर्द्र भूमि और मानव कल्याण)

✦ भारत में सर्वाधिक रामसर साईट वाला राज्य– **तमिलनाडु** (16)

✦ भारत में (मार्च 2024 तक की स्थिति) कुल **80 रामसर अभिसमय** (**Ramsar Convention Site**) हैं, जिनमें से **2** राजस्थान में हैं–

गोडावण–

- वैज्ञानिक नाम– **क्रायोटिस नाइग्रीसेप्स** (Choriotis Nigriceps)
- **उपनाम**– सोहन चिड़िया, गुधनमेर, हुकना, ग्रेट इंडियन बस्टर्ड, माल मोरड़ी (अजमेर में)
- राज्य सरकार द्वारा 21 मई, 1982 को अधिसूचना जारी कर इसे राजस्थान का **राज्यपक्षी घोषित** किया गया। **(स्रोत– सांस्कृतिक राजस्थान (राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी))**
- वर्तमान में पूरे विश्व में लगभग **200 गोडावण** बचे हैं, जिनमें से **90 प्रतिशत से अधिक** राजस्थान में पाये जाते हैं।
- गोडावण का प्रिय भोजन– **तारामीरा**
- 1 नवम्बर, 1980 को गोडावण पर **2.30 पैसे** का **डाक टिकट** जारी किया गया। राजस्थान में गोडावण मुख्यतः **मरुउद्यान**,(जैसलमेर) **सोंकलिया** (केकड़ी), **सोरसन** (बारां) में पाया जाता है। गोडावण **सेवण घास** में अंडे देता है।
- गोडावण को IUCN द्वारा गंभीर रूप से विलुप्त प्रायः (CR) प्रजातियों की सूची में शामिल किया गया है।
- **प्रोजेक्ट ग्रेट इंडियन बस्टर्ड**– 5 जून, 2013 को गोडावण के संरक्षण के लिए **राष्ट्रीय मरु उद्यान** में इस प्रोजेक्ट को लॉन्च किया गया।
- **'प्रोजेक्ट बस्टर्ड'** लॉन्च करने वाला **राजस्थान देश का पहला राज्य** है। गोडावन के सरंक्षण हेतु भारत सरकार, भारतीय वन्य जीव संस्थान व राज्य सरकार के बीच त्रिपक्षीय करार के तहत् जैसलमेर के **सम क्षेत्र** में **गोडावण कृत्रिम प्रजनन सेन्टर** (Artificial hatching) बनाया गया है। रामदेवरा में भी **'ग्रेट इंडियन बस्टर्ड एग कलेक्शन एंड हैचिंग सेन्टर'** बनाया गया है। इसके तहत् बारां के सोरसन में भी एक **'केप्टिव ब्रिडिंग सेन्टर'** की स्थापना की जायेगी।
- **गोडावन की संख्या घटने के कारण**– गोडावन **उड़ने वाले पक्षियों में सबसे भारी है** इसलिए ज्यादा ऊँचाई पर नहीं उड़ सकता। उड़ते समय **हाइटेंशन बिजली के तारों** व **पवनचक्कियों** में उलझ कर मर जाता है। **मादा गोडावन** एक बार में **एक ही अंडा** देती है और वो भी बिना घोंसले के जमीन पर अंडे देती है, जो **कृषि कार्यों के दौरान** या **जंगली कुत्तों द्वारा नष्ट** कर दिया जाता है।
- **गोडावन प्रवासी पक्षियों की संरक्षण सूची में शामिल** – संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के तहत् गांधीनगर (गुजरात) में **15–22 फरवरी, 2020** को आयोजित **13 वें कोप शिखर सम्मेलन** में **एशियाई हाथी, गोडावन** और **बंगाल फ्लोरिकन** को विलुप्त हो रहे जीवों की अन्तर्राष्ट्रीय सूची **'प्रवासी प्रजातियों के संरक्षण** (Conservation Of Migratory Specie CMS) में शामिल किया गया है।

राजस्थान में राष्ट्रीय उद्यान– 3

1 रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान	सवाई माधोपुर	289.11 वर्ग किमी.	01–11–1980 को नोटिफिकेशन जारी
2 केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान	भरतपुर	28.73 वर्ग किमी.	27–08–1981 को नोटिफिकेशन जारी
3 मुकुन्दरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान	कोटा, चित्तौड़गढ़	200.43 वर्ग किमी.	09–01–2012 को नोटिफिकेशन जारी इसमें दर्रा अभयारण्य, जवाहर सागर अभयारण्य, राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल अभयारण्य का हिस्सा (Overlap) लिया गया है।

स्रोत– प्रशासनिक प्रतिवेदन रिपोर्ट 2023–24, वन विभाग, राजस्थान

राजस्थान में टाईगर प्रोजेक्ट– 5

1.रणथम्भौर टाईगर रिजर्व	सवाई माधोपुर, करौली, बूँदी, टोंक	1530.23 वर्ग किमी. क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा टाईगर प्रोजेक्ट	इसमें रणथम्भौर नेशनल पार्क, सवाई माधोपुर अभयारण्य, सवाई मानसिंह अभयारण्य, कैला देवी अभयारण्य, राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल अभयारण्य का हिस्सा (Overlap)लिया गया है।
2. सरिस्का टाईगर रिजर्व	अलवर, जयपुर ग्रामीण, कोटपूतली –बहरोड़	1213.34 वर्ग किमी.	इसमें सरिस्का अभयारण्य, सरिस्का 'अ' अभयारण्य, जमवा रामगढ़ अभयारण्य का हिस्सा (Overlap) लिया गया है।
3. मुकुन्दरा हिल्स टाईगर रिजर्व	कोटा, बूँदी, झालावाड़, चित्तौड़गढ़	1135.79 वर्ग किमी.	इसमें मुकुन्दरा हिल्स नेशनल पार्क, दर्रा अभयारण्य, जवाहर सागर अभयारण्य, राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल अभयारण्य का हिस्सा (Overlap) लिया गया है।
4. रामगढ़ विषधारी टाईगर प्रोजेक्ट	बूंदी, कोटा, भीलवाड़ा, शाहपुरा	1496.49 वर्ग किमी. क्षेत्रफल की दृष्टि से दूसरा सबसे बड़ा टाईगर प्रोजेक्ट	वन विभाग द्वारा 16 मई, 2022 को नोटिफिकेशन जारी किया गया। इसमें रामगढ़ विषधारी अभयारण्य व राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल अभयारण्य का हिस्सा (Overlap) लिया गया है।
5.धौलपुर–करौली टाईगर प्रोजेक्ट	धौलपुर, करौली	599.64 वर्ग किमी. क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे छोटा टाईगर प्रोजेक्ट	इस टाइगर रिजर्व को राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) ने अगस्त 2023 में इसे मंजूरी दे दी है। यह राजस्थान का 5वाँ व देश का 55वाँ टाइगर रिजर्व है। राजस्थान वन विभाग का विस्तृत नोटिफिकेशन 06 अक्टूबर, 2023 को जारी हुआ है।

स्रोत– प्रशासनिक प्रतिवेदन रिपोर्ट 2023–24, वन विभाग, राजस्थान, पेज नंबर–105

8.	रोटू कन्जर्वेशन रिजर्व	नागौर	0.73	29.05.2012
9.	उम्मेदगंज पक्षी विहार	कोटा	2.72	05.11.2012
10.	जवाई बाँध लेपर्ड	पाली	19.79	27.02.2013
11.	बांसियाल खेतडी	नीमकाथाना	70.18	01.03.2017
12.	बांसियाल खेतड़ी बागोर	नीमकाथाना	39.66	10.04.2018
13.	जवाई बाँध लेपर्ड II	पाली	61.98	15.06.2018
14.	मनसा माता	झुंझुनूं, नीमकाथाना	102.31	18.11.2019
15.	शाहबाद कन्जर्वेशन रिजर्व	बारां	189.40	28.10.2021
16.	रणखार कन्जेंशन रिजर्व	सांचौर	72.88	25.04.2022
17.	शाहबाद तलहटी	बारां	178.84	01.09.2022
18.	बीड़ घास फूलिया खुर्द	शाहपुरा	0.86	27.09.2022
19.	बाघदड़ा क्रोकोडाइल	उदयपुर	3.69	30.11.2022
20.	वाडाखेड़ा बीड़	सिरोही	43.31	27.12.2022
21.	झालाना-आमागढ़	जयपुर	35.07	27.02.2023
22.	रामगढ़	बारां	38.09	03.03.2023
23.	खरमोर	केकड़ी	9.31	10.04.2023
24.	हमीरगढ़	भीलवाड़ा	5.66	26.04.2023
25.	सोरसन I	बारां	16.11	26.04.2023
26.	सोरसन II	बारां	4.27	26.04.2023
27.	सोरसन III	बारां	0.76	26.04.2023
28.	कुरजां कंजर्वेशन रिजर्व	फलौदी	2.92	26.04.2023
29.	बांझ आमली	बारां	146.21	19.05.2023
30.	बालेश्वर	नीमकाथाना, सीकर	221.69	08.09.2023
31.	बीड़ मुहाना-A	जयपुर ग्रामीण	2.07	06.10.2023
32.	बीड़ मुहाना-B	जयपुर ग्रामीण	0.10	06.10.2023
33.	गंगा भैरव घाटी	अजमेर	39.51	06.10.2023
34.	महासीर	उदयपुर	2.06	07.10.2023
35.	बीड़ फतेहपुर	सीकर	30.03	07.10.2023
36.	अमरख महादेव लेपर्ड	उदयपुर	71.47	07.10.2023

✦ **सुंधा माता कन्जर्वेशन रिजर्व- (जालौर, सिरोही)**- यह जसवंतपुरा के सुंधा माता पर्वतीय क्षेत्र में स्थित है।
इस क्षेत्र को देश के पहले **भालू अभयारण्य** के रूप में विकसित किया जा रहा है। राज्य सरकार द्वारा इसके लिए 4468 वर्ग कि.मी. क्षेत्र को रिजर्व किया गया है।

✦ राजस्थान का प्रथम चिंकारा अभयारण्य- **झुंझुनूं**

✦ **खरमोर कंजर्वेशन रिजर्व** - अरवड़ (केकड़ी)

● केकड़ी के अरवड़, गोयला, बीड़ अथून बजीर खाँ व बीड़ बृजमोहनदास शिव सिंह खिड़िया की रक्षित भूमि पर **931 हैक्टेयर** में स्थापित किया गया है।

✦ **आशोप क्षेत्र**- काले हिरणों के संरक्षण हेतु **शाहपुरा** जिले के आशोप क्षेत्र को **आखेट निषिद्ध व कंजर्वेशन रिजर्व** क्षेत्र घोषित किया जाना प्रस्तावित है। (बजट घोषणा 2024-25)

राजस्थान के आखेट निषिद्ध क्षेत्र

(कुल **33 आखेट निषिद्ध क्षेत्र,** 26,719 वर्ग किमी. क्षेत्र में)

1	डोली	जोधपुर ग्रामीण	18	महलां	दूदू
2	लोहावट	फलौदी	19	बरदोद	कोटपूतली-बहरोड़
3	गुढा विश्नोई	जोधपुर ग्रामीण	20	जोड़िया	खैरथल-तिजारा
4	साथीन	जोधपुर ग्रामीण	21	रानीपुरा	टोंक
5	फीटकाशनी	जोधपुर ग्रामीण	22	कंवाल जी	सवाईमाधोपुर
6	जम्भेश्वर जी	जोधपुर ग्रामीण	23	कनक सागर	बूंदी
7	डेचूं	फलौदी	24	सोरसन	बारां
8	धोरीमन्ना	बाड़मेर	25	बागदडा	उदयपुर
9	रामदेवरा	जैसलमेर	26	सौखलिया	केकड़ी
10	उज्जला	जैसलमेर	27	गंगवाना	अजमेर
11	देशनोक	बीकानेर	28	तिलोरा	अजमेर
12	जोड़ बीड़	बीकानेर	29	मेनाल	चित्तौड़गढ़
13	बज्जू	बीकानेर	30	जरोदा	नागौर
14	दियात्रा	बीकानेर	31	रोटू	नागौर
15	मुकाम	बीकानेर	32	सांचौर	सांचौर
16	संवत्सर कोटसर	बीकानेर	33	जवाई बाँध	पाली
17	सैंथल सागर	दौसा			

✦ राजस्थान का सबसे बड़ा आखेट निषिद्ध क्षेत्र- **संवत्सर कोटसर** (बीकानेर)

☛ **नोट**- अधिकांश पुस्तकों में संवत्सर कोटसर आखेट निषिद्ध क्षेत्र को चुरू जिले में बताया गया है, जो कि गलत है। बीकानेर जिले की डूंगरगढ़ तहसील अप्रैल 2001 से पहले चुरू जिले का भाग थी। वर्तमान में बीकानेर जिले की डूंगरगढ़ तहसील में सांवतसर व कोटसर नाम से 2 अलग-अलग गाँव है, जो राजस्थान का सबसे बड़ा आखेट निषिद्ध क्षेत्र है।

✦ राजस्थान का सबसे छोटा आखेट निषिद्ध क्षेत्र- **कनक सागर** (बूंदी)

✦ सर्वाधिक आखेट निषिद्ध क्षेत्रों वाला जिला- बीकानेर (6)

राजस्थान के जिलेवार वन्यजीव

✦ राजस्थान **देश का पहला राज्य** है जहाँ पर **प्रत्येक जिले का अलग अलग वन्यजीव** घोषित किया गया है।

✦ जिलों के शुभंकर वन्यजीव बनाने के आदेश- **17 फरवरी, 2016**

✦ **सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध–** प्लास्टिक से पर्यावरण एवं अन्य जीवों को होने वाले नुकसान की रोकथाम हेतु राष्ट्रीय उद्यानों, अभयारण्यों, कंजर्वेशन रिजर्वो, आरक्षित एवं रक्षित वनों में सिंगल यूज प्लास्टिक पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जायेगा।

जिला		अधिसूचित वैटलैण्ड
केकड़ी	3	बड़ा तालाब, बीसलपुर, बुधसागर
बांसवाड़ा	2	कुडा वैटलैण्ड, टेमरान
बारां	13	नाहरगढ़, नियाना, बैधली, एकलेरा, गरदा, हिगलोत, कोटरापार, ल्हासी, पुष्कर तालाब, रामगढ़ क्रेटर, सहरोल, तेजाजी की तलाई, उतावली
डीग	1	समाई खेडा
शाहपुरा	1	चावंडिया
बीकानेर	4	देवीकुंड, लाखोलाई (दियातरा), लूणकरणसर, सूरसागर
बूंदी	6	अभ्यपुरा बांध, बर्धाबांध, जैतसागर, रामसागर, रत्नसागर, नवलसागर
चित्तौड़गढ़	9	बड़वई, भवर पिपला बांध, दोराई बांध, गम्भीरी, किसन करेरी, मंगलवाड, ओराई बांध, पारसोली बांध, राजगढ़ तालाब
चुरू	1	चरवास
डूंगरपुर	1	सबेला
सांचौर	1	रणखार
झालावाड़	4	बडबेला, देहलनपुर तालाब, कडेला तालाब, मुदलिया खेडी तालाब
जोधपुर	2	कायलाना, सुरपुरा
करोली	2	कालीसिल बांध, मामाचेरी बांध
कोटा	3	हनुतिया, कनवास पक्षी विहार, किसोरसागर
डीडवाना–कुचामन	1	डीडवाना
पाली	2	लखोटिया, लोर्डिया
प्रतापगढ़	1	केसरिवाड
राजसमंद	2	राघवसागर, राज्यवास
सीकर	1	रेवासा
सिरोही	1	लखेराव
टोंक	4	चंदलाई, गलवानिया, मोती सागर, टोरडीसागर
उदयपुर	9	बारापाल–खजुरी, बसदिया, भंडा, झाड़ोल, किटबोरी, माद्री बांध, (ढ़ंढ़तालाब व ब्रह्म तालाब) मेनार, नागमाला, नगरिया
सलूम्बर	2	चावंड, डिगरी

स्रोत– ऑफिसियल वेबसाईट, राज. वैटलैण्ड अथॉरिटी

प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

1. आकल वन अभिलेख पार्क किस प्राकृतिक क्षेत्र में स्थित है?
झुंझुनूं/झालावाड़/बाड़मेर/जैसलमेर
जैसलमेर **(Raj. Police (K-2) -2024)**

2. राजस्थान के किस जिले में सर्प अभयारण्य स्थित है?
बीकानेर/भीलवाड़ा/कोटा/उदयपुर
कोटा **(Raj. Police (K-2) -2024)**

3. ग्रेट इंडियन बस्टर्ड किस अभयारण्य में पाए जाते हैं?
नाहरगढ़ अभयारण्य/चंबल अभयारण्य/शेरग्रह अभयारण्य/ सरिस्का अभयारण्य
(*) **(Raj. Police (L-2) -2024)**

☞ **नोट–** पुलिस विभाग ने प्रारम्भिक उत्तर कुँजी में इस प्रश्न का उत्तर सरिस्का अभयारण्य माना है, जो कि गलत है। इस प्रश्न का सही उत्तर शेरग्रह/शेरगढ़ (बारां) अभयारण्य होगा।

4. राजस्थान के क्षेत्रफल के हिसाब से सबसे बड़ा नेशनल पार्क कौनसा है?
केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान/दरा राष्ट्रीय उद्यान/रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान /डेज़र्ट राष्ट्रीय उद्यान
डेज़र्ट राष्ट्रीय उद्यान **(Raj. Police (L-1) -2024)**

☞ **नोट–** पुलिस विभाग ने प्रारम्भिक उत्तर कुँजी में इस प्रश्न का उत्तर डेज़र्ट राष्ट्रीय उद्यान माना है, जो कि गलत है। इस प्रश्न का सही उत्तर रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान होगा।

5. राजस्थान का राज्य पक्षी क्या है? **(Raj. Police (L-1) -2024)**
गोड़ावन

6. वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 को राजस्थान सरकार ने कब अपनाया था? 9 सितम्बर, 1972/26 जुलाई, 1974/10 दिसम्बर, 1972/1 सितम्बर, 1973
9 सितम्बर, 1972 **(Raj. Police (L-1) -2024)**

☞ **नोट–** पुलिस विभाग ने प्रारम्भिक उत्तर कुँजी में इस प्रश्न का उत्तर 9 सितम्बर, 1972 माना है, जो कि गलत है। इस प्रश्न का सही उत्तर 1 सितम्बर, 1973 होगा।

7. जमवा रामगढ़ अभयारण्य राजस्थान के किस जिले में स्थित है–
उदयपुर/जयपुर/झालावाड़/हनुमानगढ़
जयपुर **(Raj. Police (L-1) -2024)**

8. राजस्थान का पहला भालू अभयारण्य है?
सुंधा माता **(PTET 4 Year -2024)**

9. 'भैरोदेव डाकव' अभ्यारण्य कहाँ स्थित है?
अलवर **(PTET 2 Year -2024)**

10. निम्नांकित (संरक्षित क्षेत्र– जिले (पुरातन) में से गलत युग्म का चयन कीजिये– रोटू – सीकर, झुन्झुनू/गुढ़ा विश्नोइयान – जोधपुर/सुन्धामाता – जालौर, सिरोही/जोड़ बीड़ – बीकानेर
रोटू – सीकर, झुन्झुनू **(Asst. Pro. Geo. -2024)**

11. निम्नलिखित में से कौन सा टाइगर रिजर्व देश का 52वां टाइगर रिजर्व घोषित किया गया?
रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व **(संगणक– 2024)**

10 राजस्थान में पशुपालन

- राजस्थान राज्य की अर्थव्यवस्था में पशुपालन की सदैव एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सम्पूर्ण राजस्थान में पशुपालन मुख्य उद्यम रहा है और आज भी **आजीविका का प्रमुख साधन** है। राजस्थान का कृषक समाज शुरू से ही पशु सेवा के प्रति समर्पित रहा है लेकिन पशुपालन व्यवसाय आज भी सफल आर्थिक आधार नही बन पाया है। विगत कुछ वर्षो से दुग्ध पदार्थो की माँग से **डेयरी उद्योग** में प्रगति हो रही है। पशुपालन राज्य की एक प्रमुख आर्थिक गतिविधि है, जो अकाल की स्थिति में कृषक को अत्यधिक सुरक्षा प्रदान करती है। पशुपालन **शुष्क कृषि का एक महत्त्वपूर्ण अंग** है। पशुपालन एक **प्राथमिक व्यवसाय** है।
- भारत में **प्रथम पशुगणना** दिसम्बर 1919 से अप्रैल 1920 के मध्य हुई थी, उस समय राजस्थान की जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा, बूँदी आदि रियासतों में भी इसी अवधि में पशुगणना की गई थी।
- स्वतंत्रता के पश्चात् पहली बार **1951 में** पशुगणना की गई।
- 18वीं पशुगणना (2007) पहली बार **नस्ल के आधार पर** की गयी पशुगणना थी। **19वीं पशुगणना** 2012 में हुई।
- **20वीं पशुगणना**– 1 अक्टुबर, 2018 से टैबलेट कम्प्यूटर के माध्यम से प्रारम्भ की गई। इस बार पशुगणना का कार्य विभागीय कर्मचारियों व अधिकारियों के द्वारा ही किया गया था। 16 अक्टुबर, 2019 को नई दिल्ली में **कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय** ने 20वीं पशुगणना रिपोर्ट जारी की।
- राजस्थान में पशु गणना का कार्य **राजस्व मंडल अजमेर** में स्थापित पशुगणना प्रकोष्ठ द्वारा करवाया जाता है। यह **प्रति 5 वर्ष** बाद किया जाता है।

☞ **नोट**– 21वीं पशुगणना वर्ष 2024 में की जायेगी।

- **20 वीं पशुगणना** के अनुसार भारत में कुल 535.78 मिलियन पशु हैं, विश्व में सर्वाधिक मवेशियों की संख्या वाला देश **भारत** है।
- विश्व के **16% पशु** भारत में पाये जाते है।
  द्वितीय स्थान– **ब्राजील** तृतीय स्थान– **चीन**
- देश में पशुधन की दृष्टि से **राजस्थान का स्थान**– **द्वितीय**
  (कुल पशुधन का **10.60%** राजस्थान में हैं)
- पशुधन की दृष्टि से भारत में प्रथम स्थान– **उत्तरप्रदेश**।
- राजस्थान का **ऊँट, बकरी व गधों** में प्रथम स्थान है, तथा कुल **पशु सम्पदा, भैंस वंश** में दूसरे स्थान पर है।
- राजस्थान में कुल पशुधन– **568.01 लाख** (1.66% की कमी)
  2012 में कुल पशुधन **577 लाख** था।
- राजस्थान में पशुओं में सर्वाधिक प्रतिशत– **बकरियाँ 36.6%**
  गाय 24.4%
  भैंस 24.1%
  भेड़ 13.9%
- राजस्थान में देश का 7.24% **गौवंश**, 12.47% **भैंस वंश**, 14.00% **बकरियाँ**, 10.64% **भेड़** तथा 84.43% **ऊँट** उपलब्ध है।
- राज्य की सकल घरेलू उत्पाद में **13% योगदान** पशुपालन का है।

(स्रोत–प्रशासनिक प्रतिवेदन, पशुपालन निदेशालय राजस्थान 2022–23)

- राजस्थान में कृषि व पशुपालन पर आधारित जनसंख्या–**75%**
- पशु घनत्व– **166 पशु प्रति वर्ग कि.मी.**
- प्रति हजार जनसंख्या पर पशु संख्या– **828**

(स्रोत– आर्थिक समीक्षा 2019–20)

- राजस्थान में सर्वाधिक पशु घनत्व वाला जिला– **डूँगरपुर** (433)
- राजस्थान में न्यूनतम पशु घनत्व वाला जिला– **जैसलमेर** (62)

20वीं पशुगणना– एक नजर

क्र. सं.	पशु का नाम	2012 की पशुगणना	2019 की पशुगणना	परिवर्तन संख्या में	परिवर्तन प्रतिशत मे	भारत में राजस्थान का स्थान	भारत का %	राजस्थान में सर्वाधिक वाला जिला	राजस्थान में न्यूनतम वाला जिला	भारत में सर्वाधिक वाला राज्य
1	गौवंश	1,33,24462	1,39,37630	6,13,168	4.60%	6 वाँ	7.24%	बीकानेर	धौलपुर	पश्चिम बंगाल
2	भैंस	1,29,76095	1,36,93316	7,17,221	5.53 %	दूसरा	12.47%	जयपुर	जैसलमेर	उत्तरप्रदेश
3	भेड़	90,79,702	79,03,857	-11,75845	-12.95%	चौथा	10.64%	बाड़मेर	बाँसवाड़ा	तेलंगाना
4	बकरी	2,16,65939	2,08,40203	-8,25736	-3.81%	प्रथम	14.00%	बाड़मेर	धौलपुर	राजस्थान
5	घोड़े	37,776	33,679	-4097	-10.85%	तीसरा	9.84%	जालौर	डूँगरपुर	उत्तरप्रदेश
6	खच्चर	3375	1339	-2036	-60.33%	9 वाँ	1.59%	अलवर	टोंक	उत्तराखंड
7	गधे	81,468	23,374	-58094	-71.31%	प्रथम	18.91%	बाड़मेर	टोंक	राजस्थान
8	ऊँट	3,25,713	2,12,739	-1,12,974	-34.69%	प्रथम	84.43%	जैसलमेर	प्रतापगढ़	राजस्थान
9	सुअर	2,37674	1,54808	-82866	-34.87%	17 वाँ	1.71%	जयपुर	डूँगरपुर	असम

स्रोत–प्रशासनिक प्रतिवेदन, पशुपालन निदेशालय राजस्थान 2022–23

- RCDF का सीड मल्टीप्लीकेशन फार्म- **रोजड़ी (अनूपगढ़)**
- राज्य की पहली महिला दुग्ध उत्पादक समिति- **इंदौरा गाँव (चित्तौड़गढ़)**
- राजस्थान की पहली महिला दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति- **भोजुसर, (बीकानेर)**
- RCDF का प्रथम पशु सीमन बैंक- **बस्सी** (जयपुर ग्रामीण)
  दूसरा सीमन बैंक (वीर्य बैंक)- **जोधपुर**
- RCDF का **पहला आईसक्रीम प्लांट** - भीलवाड़ा
  (भीलवाड़ा जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड द्वारा स्थापित)
- **ऑपरेशन फ्लड (श्वेत क्रान्ति)**- 1970 में राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड ने गुजरात के आणद गाँव से श्वेत क्रांति की शुरुआत की (1970-1994 तक)
- श्वेत क्रांति के जन्मदाता- **वर्गीज कुरीयन**
- 1970 में राजस्थान सहित 10 राज्यों में ऑपरेशन फ्लड शुरू किया गया। **तीन चरणों** में (पांचवी, छठी व सातवीं पंचवर्षीय योजनाओं में)
- **उद्देश्य**- दुग्ध उत्पादन को बढ़ाना, दूध का उचित मूल्य दिलाना व उपभोक्ताओं तक अच्छी किस्म का दूध का वितरण करना।
- **आणंद डेयरी**- गुजरात (अमूल), वर्गीज कुरीयन द्वारा स्थापित।

❐ दुग्ध-

- राष्ट्रीय दुग्ध दिवस- **26 नवम्बर**
- विश्व दुग्ध दिवस- **1 जून**
- दुग्ध उत्पादन में भारत का विश्व में स्थान- **प्रथम**
- सर्वाधिक दुग्ध उत्पादन वाला राज्य- **उत्तरप्रदेश** (15.72%)
- भारत में द्वितीय स्थान- **राजस्थान** (14.44%)

- 2022-23 में राजस्थान में कुल दुग्ध उत्पादन- **33.30 मिलियन टन**
- वर्ष 2021-22 के आंकड़ों के अनुसार राजस्थान में **सर्वाधिक दुग्ध उत्पादन** वाला जिला- **अलवर (2,351 हजार टन)**
  द्वितीय स्थान- जयपुर (2,154 हजार टन)
- न्यूनतम दुग्ध उत्पादन वाला जिला- **जालौर (10 हजार टन)**
  न्यूनतम द्वितीय स्थान- सिरोही (171 हजार टन)
- भारत में **प्रति व्यक्ति दुग्ध** की उपलब्धता- 459 ग्राम/दिन में
- राजस्थान में प्रति व्यक्ति दुग्ध उपलब्धता- 1138 ग्राम/दिन में

(स्रोत- प्रशासनिक प्रतिवेदन, पशुपालन निदेशालय राजस्थान 2022-23)
(स्रोत- Basic Animal Husbandry Statistics 2023)

- **सींकला, झेरना, नेतरा व गिड़गिड़ी** - इस शब्दावली का संबंध दही बिलौने से है।
- उत्तर भारत का **सबसे बड़ा दुग्ध पैकिंग स्टेशन**- **कोटपुतली**
- राज्य का **प्रथम डेयरी व फूड साईन्स महाविद्यालय- उदयपुर** (महाराणा प्रताप कृषि व तकनीकी वि.वि. के अधीन)
- डेयरी विज्ञान एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय- **बीकानेर व जोबनेर (जयपुर ग्रामीण)**
- **डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय**- **बस्सी** (जयपुर ग्रामीण)
- राज्य की पहली **उन्नत दूध परीक्षण व अनुसंधान प्रयोगशाला** - मानसरोवर (जयपुर), 7 अक्टुबर, 2014
- **उजाला मिल्क प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड-** कोटा, बूंदी, बारां व झालावाड़ जिलों के दुग्ध उत्पादकों को बढ़ावा देने के लिए इस कम्पनी का गठन किया गया है।

❐ माँस उत्पादन-

- राजस्थान में 2018-19 में माँस उत्पादन 192 हजार टन था, जो वर्ष 2022-23 में बढ़कर **240 हजार टन** हो गया है, जो देश के कुल उत्पादन का **2.46%** है। **(स्रोत- आर्थिक समीक्षा 2023-24)**
- माँस उत्पादन में राजस्थान का देश में **12वाँ स्थान (2.46%)** है।
- **सर्वाधिक** माँस उत्पादन वाला राज्य- **उत्तर प्रदेश (12.20%)**
- वर्ष 2022-23 के अनुसार राज्य में कुल माँस उत्पादन- **0.24 मिलियन टन** **(स्रोत- Basic Animal Husbandry Statistics 2023)**
- वर्ष 2021-22 के आँकड़ों के अनुसार राजस्थान में सर्वाधिक माँस उत्पादन वाला जिला- **अजमेर,** द्वितीय स्थान- **नागौर**
- राजस्थान में न्यूनतम माँस उत्पादन वाला जिला- **जालौर,** द्वितीय स्थान- **डूँगरपुर**

❐ पशुपालन से सम्बन्धित संस्थाएँ-

- **राजस्थान पशु चिकित्सा व पशु विज्ञान विश्वविद्यालय** (राजुवास)- **बीकानेर,** 13 मई, 2010 को स्थापित।
  - यह राजस्थान का **एकमात्र वेटरनरी विश्वविद्यालय** है।
  - इसके तहत् 8 पशुधन अनुसंधान केन्द्र संचालित है।
  - **धीणे री बातां**- पशुपालकों के लिए राजूवास द्वारा 2013 में शुरू किया गया रेडियो प्रोग्राम।
  - देश की **पहली कामधेनु शोध पीठ** - राजूवास (बीकानेर)
  - राज्य स्तरीय **पशु आहार जाँच प्रयोगशाला**- राजूवास (बीकानेर)
  - पशुओं के लिए **ब्लड बैंक**- (बीकानेर)
  - **एम्. प्रजनन फार्म**- राजूवास (बीकानेर)

- राज्य स्तरीय पशु रोग निदान प्रयोगशाला- **जयपुर**
- राज्य पशु पोषाहार संस्थान- **जामड़ोली (जयपुर)** 1991 में।
- **राजफैड** द्वारा संचालित **पशु आहार संयंत्र-** झोटवाड़ा (जयपुर)
- **प्रादेशिक पशु चिकित्सा जैविक उत्पादन ईकाई - जामड़ोली** (जयपुर) यह संस्थान 1957 से पशुओं में संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिए वैक्सीन का उत्पादन कर रहा है।

- राजस्थान का दूसरा **पशु चिकित्सा व पशु विज्ञान विश्व विद्यालय- जोबनेर, जयपुर**
- **राजस्थान पशुधन विकास बोर्ड - जामड़ोली** (जयपुर)
  25 मार्च, 1998 को स्थापित।
- कीटनाशक दवाई फैक्ट्री- **झोटवाड़ा** (जयपुर)
- **राजस्थान राज्य पशु प्रबन्धन व पशु प्रशिक्षण संस्थान - जामडोली** (जयपुर)
- **पशुपालक प्रशिक्षण संस्थान- जोधपुर**
- **पशुपालन प्रशिक्षण संस्थान-** नाथद्वारा (राजसमंद)

11 राजस्थान में कृषि एवं प्रमुख फसलें

- कृषि राजस्थान की अर्थव्यवस्था का **मेरुदण्ड** है। कृषि के लिए अंग्रेजी में **एग्रीकल्चर** शब्द प्रयुक्त होता है, एग्रीकल्चर शब्द की उत्पत्ति **लैटिन भाषा** के 2 शब्दों से हुई है, **'एग्री'** जिसका अर्थ **'मृदा'** और **'कल्चर'** का अर्थ **'कृषि'** है। इस प्रकार कृषि का अर्थ 'फसल उगाने के लिए मिट्टी की जुताई करना' है।
- मानसून की अनियमितता, असमानता, अपूर्णता राजस्थान की कृषि को सदैव प्रभावित करती रही है। राजस्थान भारत के कुल कृषित क्षेत्रफल का **14.15% हिस्सा** रखता है भारत के अन्य राज्यों की तरह राजस्थान भी **कृषि प्रधान राज्य** है राजस्थान की लगभग **75% आबादी** कृषि पर निर्भर है।

❖ राजस्थान में कृषि की विशेषताएँ–

- **मानसून पर आधारित** – राजस्थान में अधिकांश कृषि मानसून पर निर्भर है, इसलिए राजस्थान में कृषि को **'मानसून का जुआ'** कहते हैं।
  राजस्थान में औसत वार्षिक वर्षा– **57.5 सेमी**
  पूर्वी राजस्थान में औसत वार्षिक वर्षा– **70.4 सेमी**
  पश्चिमी राजस्थान में औसत वार्षिक वर्षा– **31.0 सेमी**
- **जीविकोपार्जन का मुख्य आधार**– राजस्थान में कृषि व पशुपालन पर **75% जनसंख्या** निर्भर करती है, इसलिए कृषि राजस्थान की अर्थव्यवस्था का **मेरुदण्ड** और लोगों के जीविकोपार्जन का मुख्य आधार है।
- **खाद्यान्न फसलों की अधिकता**– फसलों के उत्पादन में राजस्थान के कृषक **खाद्यान्न फसलों** पर अधिक ध्यान व **व्यापारिक फसलों** पर कम ध्यान देते हैं। पिछले कुछ वर्षों में राजस्थान में खाद्यान्न फसलों (**Cereals**) के **क्षेत्रफल में** मामूली वृद्धि हुई है। वर्ष 2008–09 में 95.68 लाख हेक्टेयर से बढ़कर वर्ष 2022–23 में 97.01 लाख हेक्टेयर हो गया है।
- **तिलहनों के क्षेत्रफल में वृद्धि** – राजस्थान में तिलहन फसलों का क्षेत्रफल तेजी से बढ़ रहा है। पिछले कुछ वर्षों में राजस्थान में तिलहनी फसलों (**Oil Seed**) के **क्षेत्रफल में वृद्धि हुई** है। वर्ष 2008–09 में 46.62 लाख हेक्टेयर से बढ़कर वर्ष 2022–23 में **71.29 लाख** हेक्टेयर हो गया है।
- **दहलनी फसलों में वृद्धि**– पिछले कुछ वर्षों में राजस्थान में दलहनी फसलों (**Pulses**) के **क्षेत्रफल व उत्पादन में वृद्धि** हुई है। दलहन का क्षेत्रफल वर्ष 2008–09 में 36.71 लाख हेक्टेयर से बढ़कर वर्ष 2022–23 में 55.47 लाख हेक्टेयर हो गया है।
- **उत्पादकता में वृद्धि**– राजस्थान में वर्ष 2007–08 से 2011–12 की औसत उत्पादकता की तुलना में 2022–23 में **अनाज** की उत्पादकता में **37.29%** **दलहनों** में **36.59%** एवं **तिलहनों** में **26.66%** की वृद्धि हुई है।

* कपास की वर्ष 2007–08 से 2011–12 की औसत उत्पादकता 428 किग्रा. प्रति हेक्टेयर थी, जो बढ़कर वर्ष 2022–23 में 579 किग्रा. प्रति हेक्टेयर हो गई है, जो कि **35.28%** की वृद्धि दर्शाती है।

- **मिश्रित कृषि**– जब कृषि और पशुपालन का कार्य साथ–साथ किया जाता है तो उसे **'मिश्रित कृषि'** कहते हैं, राजस्थान में मिश्रित कृषि ही पायी जाती है। राजस्थान की **शुष्क जलवायु** भी पशुपालन को प्रोत्साहित करती है।
- **सिंचाई के साधनों की कमी** – राजस्थान के कुल कृषित क्षेत्रफल का **49%** भाग ही **सिंचित क्षेत्र** है, इस प्रकार सिंचाई सुविधाओं की कमी के कारण **प्रति हेक्टेयर उत्पादकता कम** है। राज्य में भूजल की स्थिति भी बहुत विषम है राजस्थान के **302 खंडों** में से अधिकांश **'डार्क जोन'** में हैं।
- **मानव श्रम का ज्यादा उपयोग** – राजस्थान में निराई, गुड़ाई, सिंचाई, कटाई आदि में मानव श्रम का ही उपयोग अधिक हो रहा है।
- **नवीन तकनीकों व प्रौद्योगिकी का कम उपयोग**– राजस्थान में कृषि की परम्परागत पद्धति ही प्रचलित है, इसलिये कृषि में नवीन तकनीकों व प्रौद्योगिकी का कम उपयोग होता है।
- **कृषि जोतों का बड़ा आकार** – राजस्थान में **औसत कृषि जोत 2.73 हेक्टेयर** है, जबकि भारत में **औसत कृषि जोत 1.08 हेक्टेयर** है। **(स्रोत– कृषि सांख्यिकी, 2022)**

राज्य में फसलों का क्षेत्रफल व उत्पादन

फसल		वर्ष 2022–23 (अंतिम)	वर्ष 2023–24 अग्रिम अनुमान
अनाज	क्षेत्रफल	97.46 लाख हैक्टेयर	92.79 लाख हैक्टेयर
	उत्पादन	216.38 लाख टन	208.61 लाख टन
दलहन	क्षेत्रफल	55.47 लाख हैक्टेयर	54.99 लाख हैक्टेयर
	उत्पादन	36.42 लाख टन	36.40 लाख टन
खाद्यान्न	क्षेत्रफल	152.93 लाख हैक्टेयर	147.78 लाख हैक्टेयर
	उत्पादन	252.80 लाख टन	245.01 लाख टन
तिलहन	क्षेत्रफल	71.38 लाख हैक्टेयर	65.62 लाख हैक्टेयर
	उत्पादन	103.41 लाख टन	101.24 लाख टन

स्रोत– आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट, 2023–24

❖ कृषि सम्बन्धी नवीनतम आँकड़े-

- राजस्थान में **शुद्ध बोया जाने वाला** क्षेत्रफल-**184.23 लाख** हेक्टेयर (53.74%)
- भारत के कुल कृषि योग्य भूमि (कृषित क्षेत्रफल) में से राजस्थान में-**14.15%**

☞ **2022-23** में राजस्थान में कुल बुवाई क्षेत्रफल-284.67 लाख हेक्टेयर
☞ **2022-23** में **कुल खरीफ बुवाई क्षेत्रफल-165.60** लाख हेक्टेयर
☞ **2022-23** में **कुल रबी बुवाई क्षेत्रफल-119.07** लाख हेक्टेयर
☞ राजस्थान में **कुल कृषकों की संख्या- 1.36 लाख** जो देश के कुल कृषकों का **11.46%** है।

(स्रोत- Rajasthan Agriculture statistics At A Glance 2022-23)

☞ 2022-23 में राजस्थान में कुल **खाद्यान्न उत्पादन 252.80 लाख मैट्रिक टन** रहा है। प्रारम्भिक पुर्वानुमान के अनुसार राज्य में वर्ष **2023-24** में खाद्यान्न का उत्पादन **245.01 लाख मैट्रिक टन** होने का अनुमान है, जो कि गत वर्ष की तुलना में **3.08% कम** है।

राजस्थान के सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA) में कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र का योगदान-

विवरण	वर्ष 2022-23	वर्ष 2023-24
सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA) में स्थिर (2011-12) कीमतों पर कृषि क्षेत्र का योगदान	27.44%	26.21%
सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA) में प्रचलित कीमतों पर कृषि क्षेत्र का योगदान	27.26%	26.72%

राजस्थान की अर्थव्यवस्था में कृषि एवं सम्बद्ध गतिविधियाँ

वर्ष 2023-24 में अर्थव्यवस्था (GSVA) में क्षेत्रवार योगदान

फसल क्षेत्र
- ❖ स्थिर (2011-12) मूल्यों पर **11.71 प्रतिशत**
- ❖ प्रचलित मूल्यों पर **11.90 प्रतिशत**

पशुधन क्षेत्र
- ❖ स्थिर (2011-12) मूल्यों पर **11.80 प्रतिशत**
- ❖ प्रचलित मूल्यों पर **12.98 प्रतिशत**

वानिकी क्षेत्र
- ❖ स्थिर (2011-12) मूल्यों पर **2.58 प्रतिशत**
- ❖ प्रचलित मूल्यों पर **1.71 प्रतिशत**

मत्स्य क्षेत्र
- ❖ स्थिर (2011-12) मूल्यों पर **0.13 प्रतिशत**
- ❖ प्रचलित मूल्यों पर **0.13 प्रतिशत**

स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2023-24

- **कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र** की गतिविधियों में प्राथमिक रूप से फसल, पशुधन, वानिकी एवं मत्स्य सम्मिलित है। वर्ष 2023-24 में **फसल क्षेत्र** का अंश **44.53%**, **पशुधन क्षेत्र** का अंश **48.58%**, **वानिकी क्षेत्र** का अंश **6.40%** और **मत्स्य क्षेत्र** का अंश **0.49%** है।

❖ वर्ष 2021-22 में कृषि व सिंचाई के आँकड़े-

- ✦ राजस्थान में कृषि का शुद्ध बोया गया (**Net Area Sown**) सर्वाधिक क्षेत्रफल- **बाड़मेर** (1650058 हेक्टेयर)
  द्वितीय सर्वाधिक- **बीकानेर** (1503302 है.)
- ✦ राजस्थान में कृषि का शुद्ध बोया गया (**Net Area Sown**) न्यूनतम क्षेत्रफल- **राजसमंद** (101528 हेक्टेयर)
  द्वितीय न्यूनतम- **डूंगरपुर** (127691 हेक्टेयर)
- ✦ राजस्थान में **सर्वाधिक सिंचित क्षेत्रफल** वाला जिला- **गंगानगर** (11,21407 हेक्टेयर)
- ✦ राज्य का **न्यूनतम सिंचित क्षेत्रफल** वाला जिला- **राजसमंद** (47460 हेक्टेयर)
- ✦ जिले के कुल कृषित क्षेत्र के आधार पर सर्वाधिक सिंचित प्रतिशत वाला जिला- **गंगानगर** (84%)
- ✦ जिले के कुल कृषित क्षेत्र के आधार पर न्यूनतम सिंचित प्रतिशत वाला जिला - **चुरू** (18%)
- ✦ राजस्थान में फसलों में सर्वाधिक सिंचित क्षेत्र-
  प्रथम स्थान- **राई व सरसों**
  द्वितीय स्थान- **गेहूँ**
  तीसरा स्थान- **कपास**
  चौथा स्थान- **चना**
  पांचवाँ स्थान- **मूंगफली**
  छठा स्थान- **जीरा**

(स्रोत- Rajasthan Agriculture statistics At A Glance 2022-23)

- ✦ राजस्थान के कुल क्षेत्रफल की **10.39% भूमि** बंजर है।
- ✦ राजस्थान में **सर्वाधिक बंजर भूमि वाला जिला** - **जैसलमेर**
- ✦ राजस्थान में **न्यूनतम बंजर भूमि** वाला जिला- **हनुमानगढ़**
- ✦ सर्वाधिक स्थायी **चारागाह व गोचर भूमि** वाला जिला- **बाड़मेर**
- ✦ न्यूनतम स्थायी **चारागाह व गोचर भूमि** वाला जिला- **गंगानगर**
- ✦ **पड़ती/परती भूमि**- ऐसी भूमि, जिस पर पिछले काफी समय (1 से 5 वर्षों) से खेती न की गयी हो।
- ✦ राजस्थान में सर्वाधिक पड़त भूमि वाला जिला- **बाड़मेर**(5,35,098 हे.)
  बीकानेर (5,34,138 हेक्टेयर)
- ✦ न्यूनतम पड़त भूमि वाला जिला- **प्रतापगढ़** (8198 हेक्टेयर)

(स्रोत- Rajasthan Agriculture statistics At A Glance 2022-23)

क्र सं	नाम जलवायु खण्ड	जल वायु खण्ड	जिलों के नाम	औसत वर्षा	कुल क्षेत्रफल (लाख हैक्टे.)	प्रमुख कृषि उपजें	कृषि अनुसंधान केन्द (ARS)– 11
1.	शुष्क पश्चिमी मैदानी क्षेत्र Arid Western Plains	IA	बाड़मेर,बालोतरा, फलौदी, जोधपुर ग्रामीण व जोधपुर	20–37 सेमी	47.4	बाजरा, मोठ, तिल, गेंहूं, सरसों, जीरा	कृषि अनुसंधान केन्द्र मंडोर (जोधपुर)
2.	उत्तर पश्चिमी सिंचित मैदानी क्षेत्र Irrigated North Western Plains	IB	गंगानगर, हनुमानगढ़ व अनूपगढ़	10–35 सेमी	21.0	कपास, ग्वार गेंहूं, सरसों, चना	कृषि अनुसंधान केन्द्र गंगानगर
3.	अति शुष्क एवं आंशिक सिचिंत पश्चिमी मैदानी क्षेत्र Hyper Arid Partial Irrigated Western Plains	IC	जैसलमेर, बीकानेर, फलौदी (नोख उप–तहसील), चुरू का कुछ भाग	10–35 सेमी	77.0 सबसे बड़ा	बाजरा, मोठ, ग्वार गेंहूं, सरसों, चना	कृषि अनुसंधान केन्द्र बीछवाल (बीकानेर)
4.	अंतःस्थलीय जलोत्सरण के अंतःवर्ती मैदानी क्षेत्र Internal Drainage Dry Zone	IIA	सीकर,झुंझुनू, नीमकाथाना, नागौर, डीडवाना–कुचामन जिले तथा चुरू का कुछ भाग	30–50 सेमी	36.9	बाजरा, ग्वार, दालें सरसों, चना	कृषि अनुसंधान केन्द्र फतेहपुर (सीकर)
5.	लूनी नदी का अंतःवर्ती मैदानी क्षेत्र Transitional Plains of luni Basin	II B	पाली, जालौर, सांचौर जिले तथा सिरोही व जोधपुर ग्रामीण का भाग	30–50 सेमी	30.0	बाजरा, ग्वार, तिल गेंहूं, सरसों	कृषि अनुसंधान केन्द्र केशवाना (जालौर)
6.	अर्द्धशुष्क पूर्वी मैदानी क्षेत्र Semi arid eastern plain	III A	अजमेर, ब्यावर, केकड़ी, टोंक, दूदू, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, दौसा, कोटपूतली–बहरोड़	50–70 सेमी	29.6	बाजरा, ग्वार, ज्वार गेंहूं, सरसों, चना	राजस्थान कृषि अनुसंधान केन्द्र दुर्गापुरा (जयपुर)
7.	बाढ सम्भाव्य पूर्वी मैदानी क्षेत्र Flood prone eastern plains	III B	खैरथल–तिजारा, अलवर, डीग, भरतपुर, धौलपुर, गंगापुर सिटी, करौली जिले तथा सवाईमाधोपुर का कुछ भाग	50–70 सेमी	27.7	बाजरा, ग्वार, मुंगफली गेंहूं, जौ, सरसों, चना	कृषि अनुसंधान केन्द्र नवगाँव (अलवर)
8.	अर्द्ध आर्द्र दक्षिणी मैदानी क्षेत्र एवं अरावली पहाड़ी क्षेत्र Sub humid Southern plains	IV A	भीलवाड़ा,शाहपुरा, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, सलूम्बर, उदयपुर जिले तथा सिरोही का कुछ भाग	50–90 सेमी	33.6	मक्का, दालें, ज्वार गेंहूं, चना	कृषि अनुसंधान केन्द्र, उदयपुर Dryland Farming Research Station अरजिया (भीलवाड़ा)
9.	आर्द्र दक्षिणी मैदानी क्षेत्र Humid Southern plains	IV B	बाँसवाड़ा,डूंगरपुर, प्रतापगढ़ जिले तथा उदयपुर एवं चित्तौड़गढ़ का कुछ भाग	50–110 सेमी	17.2 सबसे छोटा	मक्का, ज्वार, चावल उड़द, गेंहूं, चना	कृषि अनुसंधान केन्द्र बोरवट (बांसवाड़ा)
10.	आर्द्र दक्षिणी पूर्वी मैदानी क्षेत्र humid South Eastern plains	V	कोटा,बूंदी,बारां, झालावाड़ जिले एवं सवाई माधोपुर का भाग	65–100 सेमी	27.0	ज्वार, सोयाबीन, गेंहू, सरसों	कृषि अनुसंधान केन्द्र उम्मेदगंज (कोटा)

स्रोत– प्रशासनिक प्रगति प्रतिवेदन 2023–24 कृषि विभाग, राजस्थान पेज नं. 04

✦ **Adaptive Trial Centre (ATC)-** उद्यानिकी फसलों के अनुसंधान के लिए शेष 9 कृषि जलवायु क्षेत्रों में **आगामी 3 वर्षो** में चरणबद्ध रूप से उद्यानिकी ATC स्थापित किए जाएंगे।

→ योजना आयोग ने 1989 ई. में भारतीय कृषि जलवायुविक प्रदेश को **15 वृहत् भागों** में विभाजित किया है। जिसमें से राजस्थान का अधिकांश भाग (14) **पश्चिमी शुष्क प्रदेश** में आता है, शेष भाग (8) **मध्य पठारी व पहाड़ी क्षेत्र** में आता है। उत्तरी राजस्थान का कुछ हिस्सा (6) **ट्रांस गंगा मैदानी क्षेत्र** में आता है।

❐ 10वीं कृषि गणना 2015–16

✦ भारत में कृषि गणना का कार्य हर **5 वर्ष में** कृषि व सहकारिता विभाग करता है भारत में प्रथम कृषि गणना 1970–71 में हुई थी। 2015–16 में **10 वीं कृषि गणना** हुई थी।

6. **राजस्थान उद्यानिकी विकास मिशन** – फल बगीचों की स्थापना, सब्जियों, फूलों, बीजीय मसालों एवं औषधीय फसलों के उत्पादन हेत
7. **राजस्थान फसल सुरक्षा मिशन**– नील गाय व आवारा पशुओं से फसलों को होने वाले नुकसान से बचाव व रोकथाम के लिए।
8. **राजस्थान भूमि उर्वरकता मिशन**– उर्वरक उत्पादन व **भूमि उर्वरकता** बढ़ाने तथा **लवणीय व क्षारीय** भूमि के सुधार हेतु।
9. **राजस्थान कृषि श्रमिक सम्बल मिशन** – कृषि कार्यों में लगे हुए भूमिहिन श्रमिकों को हस्तचालित कृषि यंत्र खरीदने के लिए अनुदान दिया जाएंगे।
10. **राजस्थान कृषि तकनीक मिशन** – कृषि यंत्रीकरण के माध्यम से कृषि उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ किसानों एवं पशुपालकों की आय बढ़ाने हेतु।
11. **राजस्थान खाद्य प्रसंस्करण मिशन** – कृषि प्रसंस्करण आधारित इकाइयाँ स्थापित करने हेतु किसानों को अनुदान।
12. **राजस्थान युवा कृषक कौशल एवं क्षमता संवर्द्धन मिशन**– **प्रगतिशील युवा कृषकों** को **इजरायल** सहित अन्य देशों में अध्ययन व प्रशिक्षण हेतु भेजा जाएगा।

बजट– 2024-25

✦ **Agri clinics-** किसानों को **Soil Testing,** फसलों के संबंध में जानकारी तथा कीटों/रोगों के उपचार आदि के लिए विशेषज्ञ सेवायें उपलब्ध करवाने हेतु समस्त जिला मुख्यालय पर **2 वर्षों में Agri Clinics** स्थापित की जायेंगी।

* **Agri-Stack** के माध्यम से किसानों को स्वतः फसल गिरदावरी की सुविधा उपलब्ध करवायी जायेगी।

✦ **राजस्थान एग्रीकल्चर इन्फ्रा मिशन**– 2,000 करोड़ रूपये के प्रावधान के साथ इस मिशन को प्रारम्भ किया गया है। इसके अन्तर्गत 20 हजार फार्म पोन्ड, 10 हजार किमी सिंचाई पाईप लाईन, 50 हजार किसानों को तारबन्दी, 5 हजार किसानों को वर्मी कम्पोस्ट इकाइयाँ एवं नये एग्रो प्रोसेसिंग क्लस्टर, फूड पार्क तथा होर्टिकल्चर हब स्थापित करने के कार्य किये जायेंगे। **500 कस्टम हायरिंग केन्द्र** स्थापित किये जाकर ड्रोन जैसी सुविधाएँ उपलब्ध करायी जायेंगी।

विविध

❖ **राज किसान साथी पोर्टल**– **20 अगस्त, 2021** को लोकार्पण। इस पोर्टल के माध्यम से खेती- किसानी से जुड़ी **सभी योजनाओं की जानकारी व आवेदन** की सुविधा एक ही प्लेटफॉर्म पर मिल रही हैं। इसके अलावा आवेदन से लेकर भुगतान तक की पूरी प्रक्रिया आसान, सरल और पारदर्शी हो रही है।

❖ **किसान सेवा केन्द्र** – राज्य सरकार द्वारा किसानों की सुविधा के लिए कृषि पर्यवेक्षक मुख्यालयों पर नाबार्ड के सहयोग से किसान सेवा केन्द्रों का निर्माण कर रही है। अब तक 244 पंचायत समिति स्तर पर तथा 4628 ग्राम पंचायत स्तर पर किसान सेवा केन्द्रों का निर्माण पूर्ण हो चुका है।

❖ **धरा एप**– राजस्थान सरकार ने किसानों की सुविधा के लिए धरा एप लॉन्च किया है। इस एप से किसान घर बैठे ही अपनी जमीन का नक्शा, जमाबंदी नकल, गिरदावरी रिपोर्ट व जमीन के नामान्तरण की जानकारी प्राप्त कर सकता है।

❖ **ई-नाम पोर्टल**– राज्य सरकार द्वारा राजस्थान में **14 अप्रैल, 2016** को **कोटा** जिले की रामगंज मण्डी से **'राष्ट्रीय कृषि बाजार'** (ई-नाम पोर्टल) पायलट रूप में प्रारम्भ किया गया है।

- वर्तमान में 145 कृषि उपज मण्डी समितियों को ई नाम से जोड़ा जा चुका है। eNAM (National agriculure market) एक अखिल भारतीय इलेक्ट्रोनिक ट्रेडिंग पोर्टल है।
- इसके अन्तर्गत कृषि उपज मण्डी समितियों में कृषक-व्यापारी पंजीकरण, आवक के प्रवेश पत्र, परख जाँच, ई-निलामी, ई-भुगतान आदि कार्य किए जा रहे हैं। **(स्रोत- प्रशासनिक प्रगति प्रतिवेदन- 2023-24)**

✦ किसानों की जमीन की नीलामी पर रोक लगाने के लिए **'Rajasthan Farmers Debt Relief Act'** लाया जाएगा। रिटायर्ड हाईकोर्ट जज को इसका अध्यक्ष नियुक्त किया जाएगा।

प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

☛ **नोट**– कृषि उत्पादन के आँकड़े प्रतिवर्ष बदलते रहते हैं पुरानी परीक्षाओं में आये हुये प्रश्नों में उस वर्ष के अनुसार जो सही उत्तर था, वो लिखा गया है इस वर्ष के ताजा आँकड़ों व विवरण के लिए अध्याय में दिये गये विवरण को ही सही मानें।

1. वर्ष 2022-23 में बाजरा की फसल के उत्पादन में कौन सा राज्य प्रथम स्थान पर रहा? मध्य प्रदेश/गुजरात/उत्तर प्रदेश/राजस्थान
राजस्थान **(Hostel Superintendent -2024)**
2. निम्नलिखित में से कौन एक रोपण (प्लान्टेशन) फसल है?
चाय/गेंहूँ/चावल/बाजरा
चावल **(Hostel Superintendent -2024)**
3. राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) की स्थापना की गई_____ 1980/1981/1982/1985
1982 **(Hostel Superintendent -2024)**
4. भारत के बाजरा उत्पादक राज्यों की सूची में राजस्थान का कौनसा स्थान है? पहला/दूसरा/तीसरा/चौथा
पहला **(BSTC -2024)**
5. निम्नलिखित में से किस कृषि-जलवायु प्रदेश में भरतपुर, अलवर, धौलपुर, सवाई माधोपुर तथा करौली आते है?
III-B बाढ़ प्रभावित पूर्वी मैदान **(Curator -2024)**
6. राजस्थान में अमेरिकन कॉटन किस जिले में उत्पन्न होता है?
श्री गंगानगर/सिरोही/जोधपुर/भरतपुर
श्री गंगानगर **(Raj. Police (K-2) -2024)**
7. फल उत्पादन के मामले में राजस्थान का पहला जिला कौनसा है?
हनुमानगढ़/झालावाड़/गंगानगर/बीकानेर
गंगानगर **(Raj. Police (K-2) -2024)**

12 राजस्थान में अपवाह व नदियाँ

❖ राजस्थान का अपवाह तंत्र–

- राजस्थान की गणना भारत के शुष्क प्रदेशों में की जाती है अतः नदियों और झीलों अर्थात् जल राशियों का विशेष महत्त्व है, किन्तु दुर्भाग्य से इस प्रदेश में नदियाँ न केवल कम हैं, अपितु वर्ष–पर्यन्त प्रवाहित होने वाली नदियों का भी अभाव है।
- केवल **चम्बल नदी** ही एक ऐसी नदी है जो वर्षभर बहती है। **चम्बल** और **माही नदी** मूलतः राजस्थान की नदियाँ नहीं कही जा सकती। पश्चिमी राजस्थान में केवल **लूनी** और उसकी सहायक नदियाँ एक सीमित क्षेत्र में हैं। इसी प्रकार **घग्घर नदी** केवल वर्षाकाल में बहती है।
- **नदी–** धरातल पर प्राकृतिक रूप से एक धारा के रूप में बहने वाले जल को **नदी** कहा जाता है, जो हमेशा ढाल के अनुसार ऊपर से नीचे की ओर बहती है।
- **सहायक नदियाँ–** वे छोटी–छोटी नदियाँ जो अपने क्षेत्र का जल आगे ले जाकर बड़ी नदियों में उड़ेलती हैं, उन्हें **सहायक नदियाँ** कहते हैं।
- **अपवाह–** निश्चित वाहिकाओं के माध्यम से हो रहे जल प्रवाह को '**अपवाह**' कहते हैं।
- **अपवाह तंत्र–** से तात्पर्य नदियाँ एवं उनकी सहायक नदियों से है जो एक **तंत्र या प्रारूप** का निर्माण करती हैं।
- **जल संसाधन–** जल के वे स्रोत जो मानव के लिए उपयोगी हों या जिनके उपयोग की संभावना हो उनको **जल संसाधन** कहते हैं।

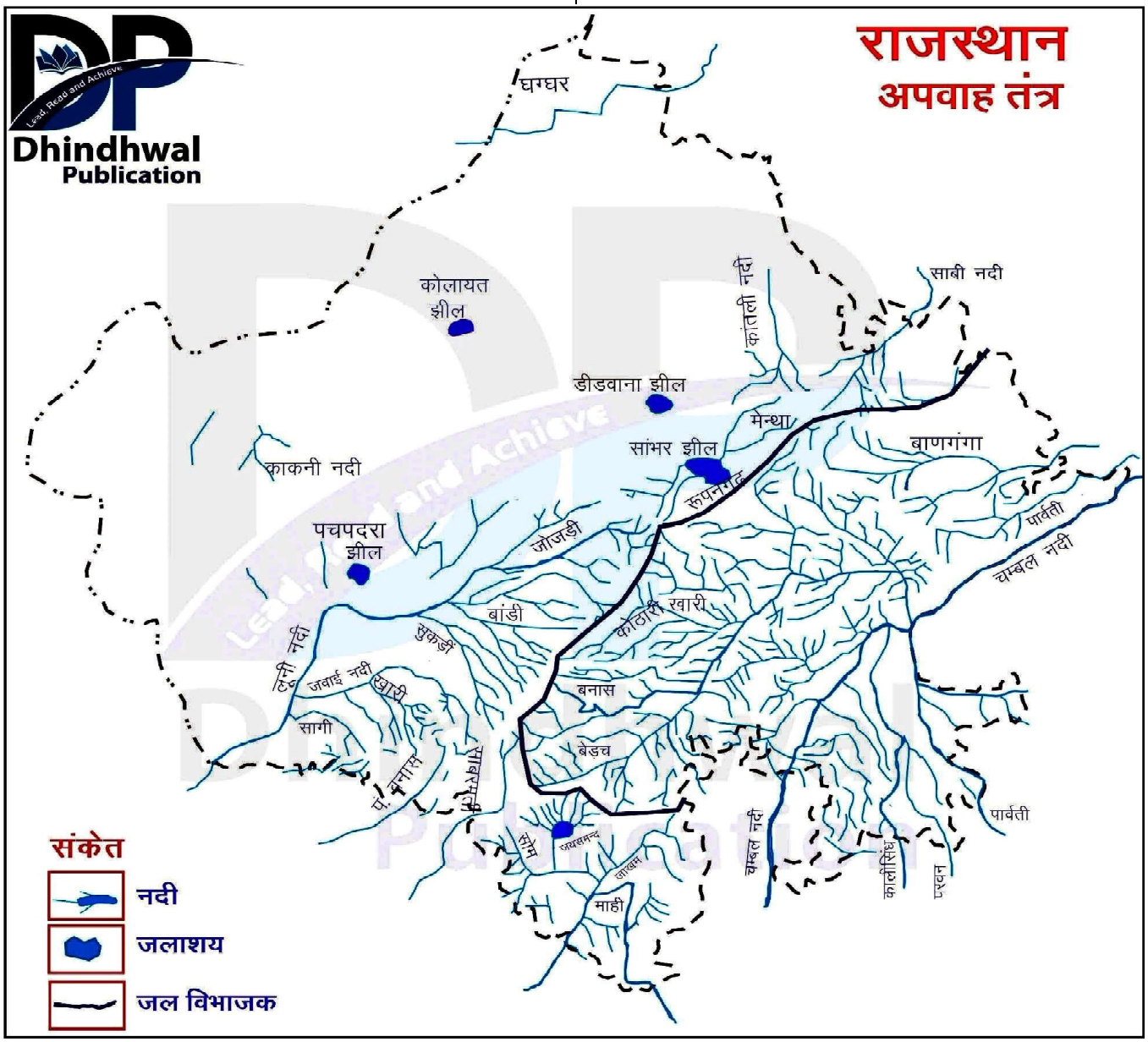

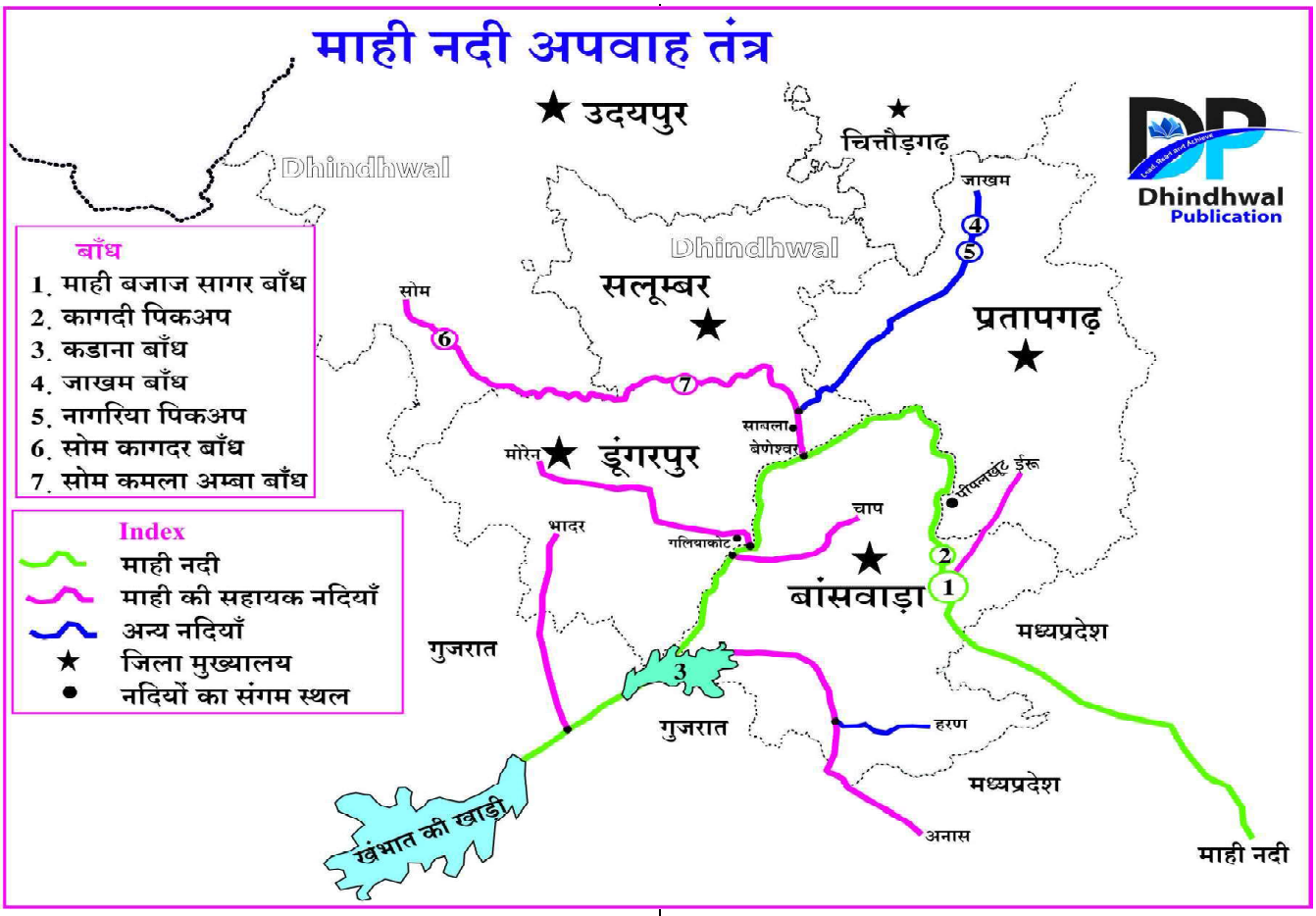

☞ **नोट-** यमूना में सीधा जल ले जाने वाली नदियाँ- **चम्बल व गम्भीर**

❖ अरवरी नदी-

* उद्गम- **सकरा बाँध** (थानागाजी, अलवर)
* 45 किमी लम्बी यह नदी पूर्णतया सूख गई थी, बाद में **तरुण भारत संघ** के प्रयासों और जागरूकता अभियान से इसके नदी किनारे के गाँवो के प्रयासों से इसे पुनर्जीवित किया गया है।
* इस नदी को बचाए रखने के लिए 1999 में **'अरवरी संसद'** बनायी गई। इस नदी का समापन **सरसा नदी** में होता है।

❖ जगर नदी-

* **डांग क्षेत्र** की पहाड़ियाँ (हिंडौन, करौली) से निकलती है। जगर बाँध- **हिंडौन**(करौली) के पास। समापन- **गम्भीर नदी में**

❖ भगाणी नदी-

* यह नदी अलवर में **कांकणवाड़ी किले** के पास से निकलती है, **मानसरोवर बाँध** (अलवर) को भरती है।

❖ सरसा नदी-

* अलवर के थानागाजी तहसील से इसका उद्गम होता है। इसे **'सावा'** नदी के नाम से भी जाना जाता है। आगे चलकर यह नदी बाणगंगा में मिल जाती है।
* भानगढ़ (अलवर) सावा नदी किनारे स्थित है।
* प्रवाह क्षेत्र- अलवर, दौसा।
* सहायक नदी- **अरवरी, भगाणी, तिलदह**

अरब सागर की तरफ जाने वाली नदियाँ

● राजस्थान के कुल क्षेत्रफल के **16% भाग** में यह अपवाह प्रणाली पायी जाती है, इसके अन्तर्गत माही, साबरमती, पश्चिमी बनास, लूनी नदी व इनकी सहायक नदियाँ सम्मिलित हैं, जो **अरब सागर** में अपना जल डालती हैं।

❖ माही नदी-

* उपनाम- **आदिवासियों की गंगा/वागड़ की गंगा/कांठल की गंगा/दक्षिणी राजस्थान की स्वर्णरेखा**
* उद्गम- **मेहद झील** (धार जिला, मध्यप्रदेश) **अमरोरू की पहाड़ियों** से।
* माही की **कुल लम्बाई**- 576 कि.मी.
* राजस्थान में लम्बाई- 171 कि.मी.
* प्रवेश- राजस्थान में प्रवेश **खांदू गाँव** (बाँसवाड़ा) से
* प्रवाह वाले जिले- **बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़, डूँगरपुर**
* समापन- **खम्भात की खाड़ी** (अरब सागर) में।

➢ **विशेषताएँ-**

* माही नदी **उलटे 'यू'** के आकार में बहती है।
* यह राजस्थान की **एकमात्र नदी है,** जिसका **प्रवेश एवं निकास** दोनों ही दक्षिण दिशा से होता है।

13 राजस्थान की झीलें व बावड़ियाँ

❖ **झील**– वे सभी जलराशियाँ जो स्थल पर बने किसी भूखण्ड या बेसिन को घेरे रहती हैं, **झील** कहलाती हैं। राजस्थान में **प्राकृतिक व कृत्रिम** दोनों प्रकार की झीलें पायी जाती हैं। राजस्थान में **वर्षा जल संग्रहण** की बहुत प्राचीन परम्परा रही है। ये झीलें पेयजल के साथ-साथ सिंचाई के साधन के रूप में भी काम आती रही है। राजस्थान में झीलों का निर्माण यहाँ के **शासकों** के साथ **सेठ-साहुकारों** द्वारा भी करवाया गया है।

☞ **झीलों के प्रकार–**

- **बॉलसन झील**– पहाड़ियों से घिरे **अभिकेन्द्रीय अपवाह** वाले विस्तृत समतल गर्त को **बॉलसन** कहते हैं। जैसे– **सांभर झील**
- **प्लाया झील**– मरुस्थलीय क्षेत्र में चौरस सतह और अनप्रवाहित द्रोणी वाली **खारे पानी की छोटी झीलों** को प्लाया कहते हैं। इसमें वर्षा का पानी जमा होता है, परन्तु जल्दी ही भाप बनकर उड़ जाता है। राजस्थान के **पश्चिमी** मरूस्थलीय प्रदेश में प्लाया झीलें पायी जाती हैं। उदाहरण– **डीडवाना झील**
- **विवर्तनिका झील**– पृथ्वी में होने वाली आन्तरिक हलचलों के कारण बनी झीलें। उदाहरण– **नक्की झील**, वूलर झील, कैस्पियन सागर।
- **कालाडेरा झील**– ज्वालामुखी से निकलने वाले लावा के प्रवाह से बनी झील। उदाहरण– **पुष्कर झील**, लोनार झील (महाराष्ट्र)

☞ **नोट–** रेगिस्तान में **खारे पानी की झीलों** को **'प्लाया'** तथा तटीय प्रदेशों में स्थित खारे पानी की झीलों को **कयाल/ लेगून** कहते हैं।

- पानी की गुणवता के आधार पर राजस्थान की झीलों को दो भागों में विभाजित किया जाता है–
  1. **खारे पानी की झीलें**
  2. **मीठे पानी की झीलें**

खारे पानी की झीलें

✦ राजस्थान में खारे पानी की झीलें सर्वाधिक पायी जाती हैं, जिसके **प्रमुख कारण** निम्न हैं–

1. राजस्थान के पश्चिमी भाग का **टेथिस महासागर का अवशेष** होना।
2. दक्षिण-पश्चिमी मानसूनी हवाएँ अपने साथ कच्छ की खाड़ी से **सोडियम क्लोरायड के कणों** को राजस्थान में लाती हैं।
3. झीलों के नीचे स्थित **नमकीन चट्टानों** से केशाकर्षण पद्धति से नमक ऊपर आना।

- राजस्थान में खारे पानी की झीलें मुख्यतः **उत्तर पश्चिमी मरुस्थलीय भाग** में पायी जाती हैं।
- खारे पानी की सर्वाधिक झीलें **डीडवाना-कुचामन** जिले में हैं।
- **अमील**– नमक से संबधित अधिकारी।
- **देवल**– नमक निर्माण में लगी निजी संस्थाओं को।

❖ सांभर झील– फूलेरा तहसील (जयपुर ग्रामीण)

* यह झील जयपुर से 70 कि.मी. दूर स्थित है। इसका विस्तार **जयपुर ग्रामीण, डीडवाना-कुचामन, अजमेर** तीनों जिलों में है।
* यह भारत की **सबसे प्राचीन** खारे पानी की झील है।
* यह भारत की खारे पानी की **दूसरी सबसे बड़ी** झील है। भारत की सबसे बड़ी खारे पानी की झील **चिलका (उड़ीसा)** है, जो एक तटीय झील (लैगून) है।
* यह भारत की **अन्तःप्रवाह की सबसे बड़ी झील** है।
* क्षेत्रफल की दृष्टि से यह राजस्थान की **सबसे बड़ी झील** है।
* अपवाह क्षेत्र– 500 वर्ग कि.मी., आकार– **लगभग आयताकार,**
* लम्बाई– 32 कि.मी., चौड़ाई– 3 से 15 कि.मी. तक।
* इस झील की स्थिति 27^0 से 29^0 उत्तरी अक्षांश व 74^0 से 75^0 पूर्वी देशान्तरों के मध्य है।
* झील में गिरने वाली नदियाँ **(4)** (जलस्रोत)– **मेन्था/मेंढ़ा** (उत्तर दिशा से), **रूपनगढ़** (दक्षिण दिशा से), **खारी** (डीडवाना-कुचामन की तरफ से) व **खंडेला** (सीकर की तरफ से)
* **सर्वाधिक नमक** बहाकर लाने वाली नदी– **मेन्था**।
* देश के कुल उत्पादन का लगभग **8.70% नमक** सांभर झील से प्राप्त होता है।
* यहाँ नमक उत्पादन का कार्य **सांभर साल्ट लिमिटेड** (केन्द्र सरकार) करती है। जो **हिन्दूस्तान साल्ट लिमिटेड** की सहायक कम्पनी है। इसमें **केन्द्र की 60%** व **राज्य की 40%** हिस्सेदारी है। इसकी स्थापना 30 सितम्बर, 1964 को की गई थी।
* **क्यार**– **वाष्पोत्सर्जन पद्धति** द्वारा क्यारी बनाकर तैयार किया गया नमक।
* सांभर झील को **अंग्रेजो** ने 1869 में जयपुर व जोधपुर रियासतों से **लीज पर** लिया था।
* सांभर में **साल्ट म्यूजियम** स्थित है, जो 1870 में अंग्रेजों द्वारा निर्मित है। यह राजस्थान का **एकमात्र** साल्ट म्यूजियम है।
* **बिजोलिया शिलालेख** (1170 ई.) के अनुसार सांभर झील का निर्माण **चौहान शासक वासुदेव** ने कराया था, भौगोलिक दृष्टि से सांभर झील मूलतः **प्राकृतिक झील** है।
* गुजरात का राज्य पक्षी **राजहंस** व विरह का प्रतीक **कुरजां** पक्षी (खींचन गाँव से) यहाँ विचरण करने आते है।
* जयपुर-फुलेरा-नागौर **रेलमार्ग** इस झील से गुजरता है।
* **देश की सबसे बड़ी पक्षी त्रासदी** – **नवम्बर, 2019** में सांभर झील में हजारों पक्षियों की **'एवियन बोटुलिज्म'** नामक बीमारी से मौत हो गई थी, इस कारण सांभर झील काफी चर्चाओं में रही थी।
* **सांभर लेक मैनेजमेंट प्रोजेक्ट** – सांभर झील के प्रबन्धन, विकास एवं संरक्षण के लिए इसे प्रारम्भ किया जाएगा।(बजट- 2022)

पाली सम्भाग की झीलें

❖ नक्की झील- माउन्ट आबू (सिरोही)

- यह राजस्थान की **सबसे ऊँचाई पर** स्थित झील (1200 मीटर) है।
- यह राजस्थान की सबसे **गहरी झील** व सर्दियों में जमने वाली एकमात्र झील है। मान्यता है कि देवताओं (बालम रसिया) ने स्वयं अपने **नाखूनों से खोदकर** इसे बनाया था।
- पर्यटन की दृष्टि से यह राजस्थान की प्रसिद्ध झील है, यहाँ **नौकायन सुविधा** उपलब्ध है।
- यह गरासिया जनजाति की **पवित्र झील** है, गरासिया जनजाति के लोग अपने **पूर्वजों की अस्थियाँ** इसी झील में प्रवाहित करते हैं।
- यह **विवर्तनिका झील** का उदाहरण है। झील के पास पहाड़ी पर विभिन्न आकार की तीन चट्टानें हैं-
- **नन्दी रॉक**- शिव के बैल नंदी के आकार की,
  टॉड रॉक- मेंढ़क के आकार की,
  नन रॉक- घुंघट निकाले स्त्री के समान।
- झील के किनारे पहाड़ियों पर **रामकुण्ड** बना है। झील के पास ही **रघुनाथ मंदिर** है। झील से 1 कि.मी. दूर **हनीमून पाईन्ट** है। इसके निकट ही **सनसेट पॉईन्ट** है, जहाँ से सूर्यास्त का रमणीय दृश्य दिखाई देता है।
- रामझरोखा, हाथी गुफा, चम्पा गुफा यहीं पर हैं।
- **विवेकानन्द गुफा**- झील किनारे स्थित इस गुफा में बैठकर स्वामी विवेकानन्द ने ध्यान लगाया था।
- माउन्ट आबू में **कारा घास** (स्ट्राबिन्थेलस कैलोसम) पायी जाती है जो नक्की झील का एक प्रदूषक है।

❖ चौपड़ा झील- पाली

जोधपुर सम्भाग की झीलें

❖ बालसमंद झील- मंडोर (जोधपुर)

- इसका निर्माण 1159 ई. में प्रतिहार शासक **बालक राव** द्वारा करवाया गया था। यह एक **कृत्रिम झील** है, जो वर्तमान में जोधपुर को पेयजल आपूर्ति भी करती है।
- महाराजा विजयसिंह के समय निर्मित **गुलाब सागर** का पानी नहरों द्वारा इस झील में आता है।
- **आठ खम्भा महल**- झील के मध्य सूरसिंह द्वारा निर्मित महल।
- झील के दक्षिण में महाराजा सूरसिंह द्वारा अपनी रानी के लिए बनवाया गया **जनाना बाग** स्थित है।

❖ गुलाब सागर- जोधपुर

- जोधपुर शासक विजयसिंह की पासवान **गुलाब राय** ने 1788 ई. में इसका निर्माण करवाया था।

❖ महिला बाग का झालरा- जोधपुर

- गुलाब सागर के पास में स्थित महिला बाग झालरे का निर्माण जोधपुर शासक विजयसिंह की पासवान गुलाबराय ने करवाया था।

❖ कायलाना झील (प्रतापसागर)- जोधपुर

- यह मूलतः प्राकृतिक झील है, इस झील का वर्तमान स्वरूप 1872 ई. में **सर प्रताप** (मारवाड़ शासक जसवंतसिंह द्वितीय का भाई) द्वारा बनवाया गया था, इसलिये इसे **'प्रताप सागर'** भी कहते हैं।
- इस झील का एक हिस्सा **'तख्तसागर'** के नाम से जाना जाता है।
- झील के किनारे देश का **प्रथम मरु वानस्पतिक उद्यान** **'माचिया जैविक उद्यान'** स्थित है।
- **राजीव गाँधी लिफ्ट कैनाल** द्वारा इंदिरा गाँधी नहर का पानी इसमें डाला जाता है, जिससे **जोधपुर शहर** को पेयजल आपूर्ति होती है।
- ध्यान रहे- जोधपुर का वर्तमान स्वरूप **सर प्रताप सिंह की देन** है।

❖ उम्मेद सागर झील- जोधपुर

- इसका निर्माण जोधपुर शासक **उम्मेद सिंह** ने 1930 से 1933 ई. के मध्य करवाया था।

❖ घड़सीसर/गढ़सीसर झील- जैसलमेर

- इसका निर्माण **महारावल घड़ सिंह (घड़सी)** ने 14वीं शताब्दी में करवाया था। जैसलमेर के पूर्वी प्रवेश द्वार घड़सीसर दरवाजे के पास स्थित है। वर्षाकाल में पानी आने पर इसका पेयजल के लिए उपयोग होता है।
- झील की पाल के पास बना कलात्मक मुख्य द्वार **टीलां की पोल** कहलाता है। झील के किनारे **गजमंदिर**/गजरूपेश्वर शिवालय बना है।
- झील के किनारे पर **'जैसलमेर लोक संस्कृति संग्रहालय'** स्थित है। इस झील को **गड़ीसर तालाब** या **गड़सीसर तालाब** भी कहा जाता है।

❖ बुझ झील- जैसलमेर

- जैसलमेर के **रूपसी गाँव** के पास बनी है जिसमें कभी कभार **काकनी नदी** का पानी आता है।

❖ रामदेवरा झील- जैसलमेर

- रामदेवरा में लोकदेवता बाबा रामदेव जी के मंदिर के पास बनी इस झील को **'रामसरोवर'** भी कहते है। मान्यताओं के अनुसार इसका **निर्माण बाबा रामदेव** ने करवाया था। यहाँ कुष्ठ रोग का निवारण होता है।

❖ अमरसागर झील- जैसलमेर

- इसका निर्माण **महारावल अमरसिंह** ने 1688 ई. में करवाया था। राज्य का पहला पवन ऊर्जा संयंत्र यहीं पर लगा था।

बीकानेर संभाग की झीलें

❖ कोलायत झील- बीकानेर

- यह झील **शुष्क मरुस्थल का सुन्दर उद्यान** कहलाती है।
- यहीं पर साख्य दर्शन के प्रणेता कपिल मुनि का **आश्रम** व **मंदिर** बना है।

14 प्रमुख बाँध, सिंचाई परियोजनाएँ व जल संसाधन योजनाएँ

- जल ही जीवन है सम्पूर्ण प्रगति का आधार है। राजस्थान राज्य के लिए जल का महत्व ओर भी बढ़ जाता है क्योंकि राजस्थान का आधे से अधिक भाग **शुष्क और अर्द्धशुष्क** है। इस प्रदेश में सूखा और अकाल सामान्य है। आज भी राजस्थान में कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ अति सीमित जल उपलब्ध है।
- राजस्थान में लोक निर्माण विभाग से अलग कर 14 दिसम्बर, 1949 को **सिंचाई विभाग की स्थापना** की गई थी। अब सिंचाई विभाग का परिवर्तित नाम **'जल संसाधन विभाग'** है।
- स्वतंत्रता से पूर्व राजस्थान में केवल **4 लाख हैक्टेयर क्षेत्र** में सतही जल परियोजनाओं से सिंचाई सुविधा उपलब्ध थी, दिसम्बर 2023 तक राजस्थान में वृहत्, मध्यम एवं लघु सिंचाई परियोजनाओं (इंदिरा गाँधी नहर परियोजना सहित) से **39.20 लाख हैक्टयेर क्षेत्र** में सिंचाई की सुविधा प्रदान की गई।
  (स्रोत- प्रशासनिक प्रतिवेदन वर्ष 2023-24, जल संसाधन विभाग)
- वर्ष 2023-24 में राजस्थान में निम्न **8 वृहद् सिंचाई परियोजनाएँ** (नर्मदा नहर परियोजना, परवन सिंचाई परियोजना, धौलपुर लिफ्ट परियोजना, मरु क्षेत्र हेतु जल पुनर्गठन परियोजना **(RWSRPD)** एवं नवनेरा बाँध परियोजना **(ERCP)**, ऊपरी उच्च स्तरीय नहर, पीपलखूंट ऊपरी उच्च स्तरीय नहर एवं कालीतीर लिफ्ट परियोजना), **5 मध्यम परियोजनाएँ** (गरदड़ा, ताकली, गागरिन, ल्हासी एवं हथियादेह) तथा **41 लघु सिंचाई परियोजनाओं** का कार्य प्रगति पर है।
  (स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2023-24)
- भारत में कुल कृषि योग्य भूमि 1799.93 लाख हैक्टेयर है। राजस्थान में **254.75 लाख हैक्टेयर क्षेत्र** कृषि योग्य भूमि है, जो देश की कुल कृषि योग्य भूमि का **14.15%** है।
  (स्रोत- Rajasthan Agriculture Statistics at a Glance 2022-2023)
- राजस्थान में **15 नदी बेसिन** चिन्हित किए गए हैं। इन्हें 58 उप बेसिनों तथा 541 सूक्ष्म जलग्रहण क्षेत्र (Micro Watershade Areas) में विभाजित किया गया हैं। **(स्रोत- राजस्थान का भूगोल (सक्सेना))**
- वर्तमान में राजस्थान में **15 नदी बेसिनों** में कुल उपलब्ध सतही जल की मात्रा लगभग **158.60 लाख एकड़ फीट** (15.86 MAF) है जो देश में कुल उपलब्ध जल संसाधन का **1.16%** हिस्सा ही है।
- राजस्थान को **145 लाख एकड़ फीट** पानी पड़ौसी राज्यों से आवंटित होता है।
- देश में प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष पानी की उपलब्धता- 1700 घन मीटर
- राजस्थान में प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष पानी की उपलब्धता- 640 घन मीटर
- राजस्थान में देश के कुल भूजल संसाधन का 1.7% ही उपलब्ध है।
- देश के 98% **लवणता प्रभावित** एवं 89% **नाइट्रेट प्रभावित** गाँव व ढ़ाणियाँ राजस्थान में है। **(स्रोत- सूजस मई 2022)**
- राजस्थान का **सर्वाधिक सिंचित क्षेत्रफल** वाला जिला- **गंगानगर**
- राज्य का **न्यूनतम सिंचित क्षेत्रफल** वाला जिला- **राजसमंद**
- जिले के कृषित क्षेत्र के आधार पर सर्वाधिक सिंचित प्रतिशत वाला जिला- **गंगानगर**
- जिले के कृषित क्षेत्र के आधार पर न्यूनतम सिंचित प्रतिशत वाला जिला- **चुरू**
- राजस्थान का सर्वाधिक सिंचाई वाला हिस्सा- **पूर्वी भाग**
- राजस्थान में वर्ष 2021-22 में शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 181.29 लाख हैक्टेयर है तथा शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल 89.23 लाख हैक्टेयर है। इस प्रकार कृषि के शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल के लगभग **49.20%** हिस्से पर सिंचाई होती है। **(स्रोत- Rajasthan Agriculture Statistics at a Glance 2022-23)**
- राजस्थान में सिंचाई के प्रमुख जल स्रोत- **नदियाँ, झीलें, तालाब, कुएँ, नलकूप, नहरें।**

सिंचाई के नवीनतम आंकड़े

- कृषि विभाग की नवीनतम रिपोर्ट **Rajasthan Agriculture Statistics at a Glance 2022-23** में राजस्थान में सकल सिंचित क्षेत्र (**Gross Irrigated Area**) के निम्न आँकड़े दिये गये हैं।
- राजस्थान में सकल सिंचित क्षेत्र के **69.39% भाग** पर सिंचाई कुएँ व नलकूपों से होती है।
- **राजस्थान में कुओं से (Open Wells)- 20.10%**
- **राजस्थान में नलकूपों से (Tube Wells)- 49.29%**
- **राजस्थान में नहरों से (Canals)- 28.39%**
- **राजस्थान में तालाबों से (Tanks)- 0.33%**
- **अन्य साधनों से (Other Sources)- 1.89%**
- कुएँ व नलकूपों से **दोनों के संयुक्त आंकड़ों** के आधार पर **सर्वाधिक सिंचाई** वाला जिला- **जोधपुर**
- कुएँ व नलकूपों से **न्यूनतम सिंचाई** वाला जिला- **गंगानगर**
- **कुओं से** सर्वाधिक सिंचाई वाला जिला- **झालावाड़**

- माही परियोजना से कुल विद्युत उत्पादन- **140 मेगावाट**
- बाँसवाड़ा के **घाटोल** व **गानोडा** में विद्युत गृह बने हैं।
- **हरिदेव जोशी नहर तंत्र** (बाँसवाड़ा) का जीर्णोद्धार करवाया जाएगा।

❖ **पीपलखूँट हाईलेवल केनाल परियोजना - बाँसवाड़ा-प्रतापगढ़**

- इस परियोजना की परिकल्पना माही बेसिन के अधिशेष जल से पीपलखूँट तहसील के **16 गाँवों** की **5000 हैक्टेयर** अनकमाण्ड क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराने के साथ-साथ माही बाँध से 3.72 TMC जल जाखम बाँध में परिवर्तित करने के उद्देश्य से की गई है।
- इस परियोजना का प्रारम्भ **3 अक्टूबर, 2023** को किया गया, जिसे **2 अक्टूबर, 2026** तक पूर्ण किया जाना प्रस्तावित है।

❖ **माही अपर हाईलेवल केनाल परियोजना - बाँसवाड़ा**

- माही परियोजना बाँसवाड़ा की बांयी मुख्य नहर जिसमें जल प्रवाह का तल लेवल **228.80 मीटर** है। आदिवासी अँचल की **6 तहसीलों** (बाँसवाड़ा, बागीदोरा, आन्नदपुरी, कुशलगढ़, सज्जनगढ़ एवं गांगड़ तलाई) के गाँवों की काश्त योग्य भूमि ऊँचाई पर स्थित होने के कारण सिचाई सुविधा से वचिंत है।
- ऊँचाई पर स्थित लगभग **42 हजार हैक्टेयर क्षेत्र** में फव्वारा सिंचाई प्रणाली द्वारा सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराने हेतु माही बाँध के अधिशेष जल का उपयोग कर इस परियोजना की परिकल्पना की गई है।
- 22 मई, 2023 को इस परियोजना की शुरूआत की गई तथा 2 अक्टूबर, 2026 तक इसे पूर्ण किया जाना प्रस्तावित है।

(स्रोत- प्रशासनिक प्रतिवेदन वर्ष 2023-24, जल संसाधन विभाग)

❖ **जाखम परियोजना**- जाखम नदी पर, **अनूपपुरा** (प्रतापगढ़)

- यह राजस्थान का सबसे ऊँचा बाँध है। जो 81 मीटर ऊँचा तथा 253 मीटर लम्बा है। इस बाँध का शिलान्यास **मोहनलाल सुखाड़िया** ने किया था।
- इस बाँध का निर्माण **जनजाति उपयोजना (TSP)** के तहत हुआ है। इस परियोजना का **सर्वाधिक लाभ आदिवासियों को** मिलता है। इस पर दो लघुपन विद्युत इकाईयाँ (कुल विद्युत क्षमता 5.5 मेगावाट) हैं।

✦ **नागरिया पिकअप बाँध** - नागरिया गाँव (प्रतापगढ़) में, जाखम बाँध से 13 कि.मी. नीचे **जाखम नदी** पर बना है, इससे दो नहरें निकाली हैं जिनसे **प्रतापगढ़** व **सलूम्बर** में सिंचाई होती है।

❖ **ढ़ोलिया ग्राम सिंचाई परियोजना**- राजस्थान जल क्षेत्र पुनर्संरचना परियोजना के माध्यम से प्रतापगढ़ में **करमोई नदी** पर ढ़ोलिया ग्राम सिंचाई परियोजना तथा डूँगरपुर जिले में सोम नदी पर **भभराना व वनवासा ग्राम** सिंचाई परियोजनाओं के लिए **101.12** करोड़ रुपए का वित्तीय प्रावधान किया गया है।

❖ **सोम कमला अम्बा परियोजना**- कमला अम्बा गाँव (डूँगरपुर)

- **सोम नदी** पर निर्मित है, इससे आसपुर तहसील (डूँगरपुर) व सलुम्बर में सिंचाई होती है।

❖ **अनास नदी पर एनिकट व पुल**- तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के कार्यकाल में गराड़िया (**बांसवाड़ा**) में अनास नदी पर एनिकट व पुल बनाने के लिए 182.56 करोड़ रु. के बजट को मंजूरी दी।

- बाँसवाड़ा में अनास नदी पर **सांगडूंगरी से बोरखंडी** को जोड़ने वाले अनास पुल की आधारशिला **09 अगस्त, 2022** (विश्व आदिवासी दिवस) को रखी गई।

कोटा संभाग की परियोजनाएँ

❖ **तकली सिंचाई परियोजना**- ढाकिया गाँव (रामगंज मंडी, **कोटा**) में तकली नदी पर निर्माणाधीन है। इस परियोजना से **7800 हैक्टेयर** भूमि में सिंचाई सुविधा तथा औद्योगिक उपयोग के लिए जल उपलब्ध हो सकेगा। इस योजना के अन्तर्गत बाँध का निर्माण **जून 2023** में पूर्ण कर लिया गया।

❖ **सावन भादो परियोजना**- कोटा, (कनवास, सांगोद) अरू नदी पर निर्मित है।

❖ **संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चम्बल लिंक परियोजना** - 28 जनवरी, 2024 को नई दिल्ली में राजस्थान एवं मध्यप्रदेश सरकार एवं केन्द्र के बीच एमओयू हस्ताक्षर से बहुप्रतीक्षित पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना (ईआरसीपी) के एकीकरण सहित **संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चम्बल** (पीकेसी) लिंक परियोजना के रूप में चम्बल बेसिन की नदियों को आपस में जोड़कर इनके पानी के उपयोग का मार्ग प्रशस्त हुआ।

* केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री **श्री गजेन्द्र शेखावत**, राजस्थान के मुख्यमंत्री **श्री भजनलाल शर्मा** एवं मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री **श्री मोहन यादव** की मौजूदगी में दोनों राज्यों के जल संसाधन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिवों एवं केन्द्रीय जल संसाधन सचिव ने एमओयू पर हस्ताक्षर किए।

* पीकेसी लिंक परियोजना में राजस्थान का **2.80 लाख हैक्टेयर** क्षेत्र शामिल है।

* पहले ईआरपीसी से प्रदेश के **13 जिले** लाभान्वित होने वाले थे लेकिन अब प्रदेश के **21 जिलों** (कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़, टोंक, सवाई माधोपुर, दौसा, करौली, अलवर, धौलपुर, भरतपुर, डीग, गंगापुर सिटी, खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़, जयपुर, जयपुर ग्रामीण दूदू, ब्यावर, अजमेर एवं केकड़ी) को इसका लाभ मिलेगा।

✦ इस परियोजना के अन्तर्गत **5 बैराज व 1 बाँध** बनाया जाना प्रस्तावित है। बैराज का निर्माण मुख्यतः जल अपवर्तन हेतु एवं बाँध का निर्माण जल संग्रहण हेतु होगा।

1. **रामगढ़ बैराज** (बारां)- किशनगंज तहसील में कूल नदी पर।
2. **महलपुर बैराज** (बारां)- मंगरौल तहसील में पार्वती नदी पर।
3. **नवनेरा बैराज** (कोटा)- दीगोद तहसील में कालीसिंध नदी पर। यह बैराज **सर्वाधिक भराव क्षमता** वाला होगा, जल अपवर्तन की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होने के कारण राज्य सरकार ने इसका निर्माण शुरू कर दिया है।
4. **मेज बैराज** (बूंदी)- इन्द्रगढ़ तहसील में मेज नदी पर।
5. **राठौड़ बैराज** (सवाईमाधोपुर)- चौथ का बरवाड़ा तहसील में बनास नदी पर।
6. **डूंगरी बाँध** (सवाई माधोपुर)- खण्डार तहसील में बनास नदी पर।

➢ **राजस्थान फ्लोरोसिस नियंत्रण कार्यक्रम–** राजस्थान सरकार द्वारा फ्लोरोसिस की समस्या का समाधान करने के लिए **यूनिसेफ** की सहायता से **फ्लोरोसिस नियंत्रण कार्यक्रम** शुरू किया गया है जिसमें राजस्थान के फ्लोराईड से प्रभावित गाँवों में आवश्यकतानुसार हैंड पम्प और घरेलू स्तर पर डी. फ्लोरेशन संयत्रों की स्थापना की जा रही है।

- वर्तमान में राजस्थान के **30 जिलों** में यह कार्यक्रम संचालित है।

❖ **जनता जल योजना–**

- जनता जल योजना **जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग** की वे पेयजल परियोजनाएँ हैं, जिनको जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग द्वारा तैयार करने के उपरान्त स्वेच्छिक संगठनों/एनजीओ/ग्राम पंचायतों को सुपुर्द की जाती है।
- यह योजना **जैसलमेर** और **बीकानेर** के अलावा शेष **31 जिलों** में संचालित है। इन 31 जिलों में कुल 6523 जनता जल योजनाएँ संचालित हैं।
- इस योजना में पंचायत स्तर पर **ग्रामीण क्षेत्र** और **ढाणियों** में पानी की आपूर्ति की जाती है। पंप संचालन हेतु विद्युत खर्च संबंधी सभी खर्च ग्राम पंचायत को प्राप्त अनुदान राशि से वहन किए जा रहे हैं।

❖ **राजनीर पोर्टल–** राजस्थान में लोगों को घर बैठे **पेयजल कनेक्शन** के लिए **ऑनलाईन** आवेदन करने हेतु जलदाय विभाग द्वारा यह पोर्टल लॉन्च किया गया है।

➢ **राजस्थान इरिगेशन रीस्ट्रक्चरिंग प्रोग्राम –** बजट 2022-23 में इसे प्रारम्भ किया गया। जिसमें सिंचाई हेतु जल की उपलब्धता सुनिश्चित कर कृषकों के आर्थिक उत्थान हेतु कार्य किया जाता है। इसमें **12 जिलों** को शामिल किया गया है। आगामी वर्ष में इस कार्यक्रम में लगभग 3,600 करोड़ रु. की लागत के कार्य करवाए जाएंगे।

❖ **मिशन अमृत सरोवर–** इसका उद्देश्य देश के प्रत्येक जिले में कम से कम **75 अमृत सरोवर** (तालाबों) का निर्माण/विकास करना है, जिसके लिए राज्य का लक्ष्य **2475** है। प्रत्येक अमृत सरोवर में लगभग 10,000 क्यूबीक मीटर की जल धारण क्षमता के साथ न्यूनतम एक एकड़ (0.4 हैक्टर) का तालाब क्षेत्र होगा।

❖ **जल जन अभियान–** सिरोही जिले के आबू रोड़ में प्रजापिता **'ब्रह्म कुमारी ईश्वरीय संस्थान'** से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा इस अभियान की शुरुआत **16 फरवरी, 2023** को की गई।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस कार्यक्रम में **वर्चूअल जुड़े** और वाटर हार्वेस्टिंग के साथ पेड़ लगाने और जल संरक्षण के लिए लोगों को प्रेरित किया।

❖ **हैली बोर्न सर्वेक्षण तकनीक–** केन्द्रीय मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह ने **5 अक्टूबर 2021** को अत्याधुनिक हैली बोर्न सर्वेक्षण तकनीक लॉन्च की।

- भू-जल प्रबन्ध के लिए हैली सर्वेक्षण प्रौद्योगिकी शुरू की गई है। पहले चरण में राजस्थान, पंजाब, गुजरात व हरियाणा में सर्वेक्षण किया जा रहा है। राजस्थान के **जोधपुर** से **5 अक्टूबर** को यह सर्वे शुरू किया गया है।

❖ **मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान 2.0–** राज्य की प्रत्येक पंचायत समिति 5,000 से 8,000 हैक्टेयर क्षेत्रफल का चरणवार चयन कर **20,000 गाँवों** में जल संग्रहण एवं संरक्षण के कार्य करवाये जायेंगे।

- प्रथम चरण में राज्य के सभी जिलों की **349 पंचायत समितियों** में चयनित **5,135 गाँवों** में कार्य करवाये जायेंगे। **(स्रोत- आर्थिक समीक्षा 2023-24)**
- बजट घोषणा 2024-25 में जल संग्रहण एवं जल संरक्षण के लिए **'मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान 2.0'** को 11,200 करोड़ रुपये की लागत से पुनः प्रारम्भ किया जायेगा। इसके तहत् आगामी 4 वर्षों में 20 हजार गाँवों में 5 लाख वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर बनाये जायेंगे।

❖ **Rajasthan Irrigation Water Grid Mission-** इस मिशन के अन्तर्गत प्रदेश के समस्त जिलों में सिंचाई व्यवस्था के साथ ही जल संचय की प्रणाली विकसित करने के लिए **50 हजार करोड़** रूपये से अधिक के कार्य करवाये जायेंगे। (बजट घोषणा 2024-25)

❖ **प्रमुख संस्थाएँ –**

➢ **राजस्थान भूमिगत जल बोर्ड – जोधपुर** 1950

- जल संरक्षण एवं प्रबंधन के लिए भारत सरकार द्वारा स्थापना की गई, इसे 1955 में राजस्थान सरकार को सौंप दिया, जिसका 1978 में नाम बदलकर **'राजस्थान भू-जल विभाग'** रखा गया, जिसका मुख्य कार्यालय जोधपुर में है।

➢ **हाइड्रोलोजी एंड वाटर मैनेजमेन्ट इंस्टीट्यूट – बीकानेर** (IMTI कोटा द्वारा)

➢ **सिंचाई प्रबंधन व प्रशिक्षण संस्थान (IMTI)- कोटा**

- 1984 में **अमेरिका** की अंतर्राष्ट्रीय विकास एजेन्सी के सहयोग से स्थापित है।

➢ **राजस्थान जल विकास निगम लिमिटेड** – 25 जनवरी 1984

- मुख्यालय- **जयपुर**
- भू-जल की रासायनिक जाँच हेतु **प्रयोगशालाएँ- जयपुर, जोधपुर, उदयपुर व बीकानेर (स्रोत- प्रगति विवरण 2021-22 भूजल विभाग जोधपुर)**
- पेयजल गुणवत्ता जाँच प्रयोगशालाएँ राजस्थान के सभी 33 जिलों में कार्यरत हैं। **जयपुर** मुख्यालय पर **राज्य स्तरीय प्रयोगशाला** कार्यरत है।

- **राज्य जल नीति**- 19 सितम्बर, 1999
- **राज्य की नवीनतम भू-जल नीति**- 18 फरवरी, 2010 (राजस्थान में जल संरक्षण एवं प्रबंधन के लिए)
- **जल संरक्षण वर्ष**- देशभर में 2015-16 में मनाया गया।
- **विश्व जल दिवस** - **22 मार्च**
- **विश्व जल दिवस 2024 की थीम**- शांति के लिए जल **(Water for Peace)**
- **राष्ट्रीय जल दिवस**- 14 अप्रैल

15 राजस्थान की नहरें

इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना

➢ **उपनाम–** राजस्थान की मरुगंगा/रेगिस्तान की स्वर्ण रेखा /राजस्थान की जीवनरेखा/पश्चिम राजस्थान की जीवन रेखा।

- यह एशिया की **सबसे बड़ी मानव निर्मित नहर परियोजना** है।
- **मुख्य उद्देश्य–** रावी व व्यास नदियों के जल से राजस्थान को आवंटित **8.6 MAF पानी** में से **7.59 MAF पानी** का उपयोग कर मरुस्थलीय क्षेत्र में पेयजल व सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराना है। इस परियोजना के उद्देश्यों में सूखा प्रभावित, पर्यावरण और वन सुधार, रोजगार सृजन और पुनर्वास भी सम्मिलित हैं।
- **उद्गम– सतलज व्यास के संगम** पर स्थित **हरिके बैराज बाँध** से (फिरोजपुर, पंजाब), **1952 में बना**।
- **राजस्थान में प्रवेश– खारा खेड़ा, टिब्बी तहसील** (हनुमानगढ़) यह नहर राजस्थान में प्रवेश के समय **राजस्थान हरियाणा की सीमा पर** बनी है।
- IGNP की मुख्य नहर राजस्थान के **6 जिलों** क्रमशः **हनुमानगढ़, गंगानगर, अनूपगढ़, बीकानेर, फलौदी, जैसलमेर** से होकर गुजरती है।
- इस नहर की परिकल्पना की शुरुआत **महाराजा गंगासिंह** ने की तथा इस दिशा में पहला सार्थक कदम **महाराजा सार्दुल सिंह** ने उठाया।
- महाराजा सार्दुल सिह ने पंजाब के मेधावी इंजीनियर **कंवरसेन** को बीकानेर के मुख्य सिंचाई अभियंता के पद पर नियुक्त किया। उन्होंने राजस्थान नहर की रूपरेखा तैयार कर **'बीकानेर राज्य में पानी की आवश्यकता'** नामक एक रिपोर्ट तैयार कर 29 अक्टूबर,1948 को भारत सरकार को भेजी।
- नहर का जन्मदाता व योजनाकार– **कंवरसेन** (बीकानेर रियासत का इंजीनियर)
- विश्व बैंक की टीम व केन्द्र सरकार की स्वीकृति के बाद, इस परियोजना का शिलान्यास 31 मार्च, 1958 को **गोविन्द वल्लभ पंत (केन्द्रीय गृहमंत्री)** द्वारा किया गया।

➢ **अंतर्राज्यीय राजस्थान नहर बोर्ड – 19 दिसम्बर, 1958** को नहर परियोजना के निर्माण हेतु इस बोर्ड का गठन किया गया। इसका प्रथम अध्यक्ष **कंवर सेन** को बनाया गया।

- **कंवर सेन–** रायबहादुर कंवर सेन गुप्ता
- जन्म–1899 टोहाना (हिसार, हरियाणा)
- **पद्मभूषण से सम्मानित प्रथम व्यक्ति–** कंवर सेन, 1956

- **नहर का उद्घाटन–** 11 अक्टुबर, 1961 को उपराष्ट्रपति **सर्वपल्ली डॉ. राधकृष्णन** ने नोरंगदेसर वितरिका (रावतसर शाखा, हनुमानगढ़) में पानी छोड़कर इसका उद्घाटन किया।
- **नाम परिवर्तन–** 2 नवम्बर, 1984 को इसका नाम **राजस्थान नहर** से बदलकर **इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना** कर दिया। (31 अक्टुबर, 1984 को इंदिरा गाँधी के निधन के बाद)
- इंदिरा गाँधी नहर की कुल लम्बाई– 649 कि.मी.।
  फीडर नहर– 204 कि.मी. (**हरिके बैराज से मसीतावाली हैड** तक), **मुख्य नहर– 445 कि.मी.** (मसीतावाली से मोहनगढ़ तक)
- **राजस्थान फीडर–** 204 कि.मी., जिसका 150 कि.मी. भाग पंजाब में, 19 कि.मी. भाग हरियाणा में तथा 35 कि.मी. भाग राजस्थान में है। **(स्रोत– राजस्थान का भूगोल, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पुस्तक, हरिमोहन सक्सेना)**
- फीडर– **हरिके बैराज से मसीतावाली (हनुमानगढ़)** तक है।
- **जून 1964** में राजस्थान फीडर (204 किमी.) का निर्माण पूर्ण हुआ।

- फीडर का मुख्य कार्य– मुख्य नहर में जलापूर्ति करना है। किसी मुख्य नहर का ऐसा हिस्सा, जहाँ से पानी का कोई उपयोग नहीं किया जाता है उसे **'फीडर नहर'** कहते हैं।

- मुख्य नहर **मसितावाली (हनुमानगढ़) से मोहनगढ़ (जैसलमेर)** तक है। नहर का अंतिम छोर **मोहनगढ़** (जैसलमेर) है।
- इसको **मोहनगढ़** (जैसलमेर) से **गडरा रोड़** (बाड़मेर) तक ले जाया जाना प्रस्तावित है, जिसकी लम्बाई **165 कि.मी.** (मोहनगढ़ से गडरा रोड़) होगी। लेकिन मोहनगढ़ से लगभग 83 कि.मी. का निर्माण होने के बाद आगे का निर्माण **राष्ट्रीय मरु उद्यान** के कारण अधूरा पड़ा है इस प्रकार इंदिरा गाँधी नहर का पानी अभी तक **गडरा रोड़** तक नहीं गया है।
- नहर की वितरिकाओं की कुल लम्बाई– **9413 कि.मी.**।
  (स्रोत– सुजस मई-2022)
- लिफ्ट नहरों की कुल लम्बाई– **1521.46 कि.मी.**।
  (स्रोत– प्रगति प्रतिवेदन 2022-23 IGNP)

☞ इस परियोजना का **निर्माण दो चरणों में** पूरा हुआ है।

➢ **प्रथम चरण–** हरिके बैराज से 393 कि.मी. नहर का निर्माण। जिसमें से **पंजाब से मसीता वाली हैड** तक 204 कि.मी. फीडर नहर व **मसीतावाली से सत्तासर गाँव (बीकानेर)** तक **189 कि.मी. मुख्य नहर** का निर्माण किया गया। 3075 कि.मी. लम्बी वितरिकाओं का निर्माण किया गया।

- इस प्रथम चरण में **सूरतगढ़, अनूपगढ़, पूगल शाखाओं का निर्माण** व एकमात्र लिफ्ट नहर **कंवरसेन लिफ्ट नहर** (बीकानेर जलोत्थान नहर) का निर्माण हुआ, वर्ष 1992 में प्रथम चरण का कार्य पूर्ण हो गया था।

➢ **द्वितीय चरण– सतासर (बीकानेर)** से **मोहनगढ़ (जैसलमेर)** तक।

- इस चरण में 256 कि.मी. मुख्य नहर का निर्माण किया गया। दिसम्बर **1986** में मुख्य नहर का निर्माण पूर्ण हुआ। अब नहर का अंतिम स्थान **गडरा रोड़** (बाड़मेर) तक प्रस्तावित किया गया है (165 कि.मी. ओर बढ़ा दी)।

16 राजस्थान के उद्योग

राजस्थान का औद्योगिक परिदृश्य	
सर्वाधिक औद्योगिक इकाईयों वाला जिला	जयपुर
न्यूनतम औद्योगिक इकाईयों वाला जिला	जैसलमेर
राज्य में सर्वाधिक मध्यम व वृहद औद्योगिक इकाईयाँ	जिला- अलवर स्थान- भिवाड़ी
सर्वाधिक लघु औद्योगिक इकाईयों वाला जिला	जयपुर व अलवर
न्यूनतम वृहद औद्योगिक इकाईयों वाला जिला	करौली
सर्वाधिक पंजीकृत औद्योगिक इकाईयाँ	जयपुर, जोधपुर
सबसे कम पंजीकृत औद्योगिक इकाईयाँ	जैसलमेर, बारां
राजस्थान का सबसे बड़ा औद्योगिक नगर	जयपुर
राजस्थान का सबसे छोटा औद्योगिक नगर	करौली
सर्वाधिक बहुराष्ट्रीय औद्योगिक इकाईयाँ	भिवाड़ी (खैरथल-तिजारा)
शुन्य उद्योग जिले	जैसलमेर, बाड़मेर, चुरू, सिरोही

राज्य में सकल राज्य मूल्य वर्धन का उद्योगों में योगदान		
विवरण	वर्ष 2022-23	वर्ष 2023-24
सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA) में स्थिर (2011-12) कीमतों पर उद्योगों का योगदान	28.38%	29.84%
सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA) में प्रचलित कीमतों पर उद्योगों का योगदान	27.42%	28.21%
स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2023-24		

- **वर्ष 2023-24 में राजस्थान के सकल राज्य मूल्य वर्धन** (GSVA) में **स्थिर कीमतों** पर **उद्योग क्षेत्र** का योगदान-29.84%
- **वर्ष 2023-24 में राजस्थान के सकल राज्य मूल्य वर्धन** (GSVA) में **प्रचलित कीमतों** पर **उद्योग क्षेत्र** का योगदान-28.21%
- वर्ष 2023-24 में राजस्थान में **स्थिर कीमतों** (2011-12) पर सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA) में **विनिर्माण क्षेत्र का योगदान**-16.34%
- वर्ष 2023-24 में राजस्थान में **प्रचलित कीमतों** पर **सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA)** में **विनिर्माण क्षेत्र का योगदान**-11.92%
- **उद्योग क्षेत्र** के अंतर्गत खनन एवं उत्खनन, विनिर्माण, विद्युत, गैस, जलापूर्ति एवं अन्य उपयोगी सेवाएँ तथा निर्माण क्षेत्र शामिल है।

औद्योगिक क्षेत्रों के उपक्षेत्रों का प्रचलित मूल्यों पर वर्ष 2023-24 (द्वितीय अग्रिम अनुमान) में योगदान	
विनिर्माण	42.27%
निर्माण	35.26%
खनन एवं उत्खनन	11.99%
विद्युत, गैस, जलापूर्ति एवं अन्य उपयोगी सेवाएँ	10.48%

- औद्योगिक दृष्टि से राजस्थान की गणना **पिछड़े राज्यों में** होती है।

✦ राजस्थान में **31 मार्च, 2023** तक **238 वृहद् उद्योग** कार्यरत हैं।

- **सर्वाधिक वृहद् स्तरीय उद्योग- भिवाड़ी** (77)
  द्वितीय स्थान- अलवर (21), **भीलवाड़ा** (21)
  तीसरा स्थान- कोटा (12)

(स्रोत-प्रगति प्रतिवेदन 2023-24 उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, राजस्थान)

☞ **नोट-** उद्योग एवं वाणिज्य विभाग के प्रगति प्रतिवेदन 2023-24 में 33 जिलों के अनुसार ही आँकड़े जारी किये गये हैं।

❖ **उद्यम स्थापित करने हेतु प्रक्रियाओं का सरलीकरण (ईज ऑफ डूइंग बिजनेस)-** राज्य सरकार द्वारा व्यवसायों और उद्योगों की स्थापना के लिए नियामक प्रक्रिया को युक्ति संगत बनाने के लिए निरंतर प्रयास किए गए हैं।

- उद्योग संवर्द्धन एवं आंतरिक व्यापार विभाग राज्यों के वार्षिक व्यापार सुधार कार्य योजना जारी करते हैं और राज्यों के लिए **ईज ऑफ डूइंग बिजनेस रैंकिंग** जारी करता है।

✦ **बिजनेस सुधार प्लान 2020- इसमें राजस्थान** को निष्पादन **एस्पायर श्रेणी** में सम्मिलित किया गया है।

✦ **बिजनेस सुधार प्लान 2024-** इसमें **कुल** 344 सुधार बिन्दु सम्मिलित हैं, जिन्हें दो भागों में विभक्त किया गया है-

- **भाग-अ** में 11 केन्द्रीय मंत्रालयों को सम्मिलित करने वाले 57 सुधार बिन्दु।
- **भाग-ब** में राज्य/केन्द्र शासित प्रदेशों से संबंधित 287 व्यवसाय केन्द्र सुधार बिन्दु को सम्मिलित किया गया है।

(स्रोत- आर्थिक समीक्षा 2023-24)

✦ **Industrial Policy 2024- Ease of Doing business (EoDB)** एवं **Sustainability** आधारित यह नीति लायी जायेगी। इस नीति के माध्यम से थीम बेस्ड इंडस्ट्रीयल पार्क की स्थापना व **Hassle Free Goods Transportation** उपलब्ध कराने के साथ **रिसर्च** एवं **डवलपमेंट** (R&D) तथा **ग्रीन टेक्नॉलोजी** को बढ़ावा दिया जायेगा। (बजट घोषणा 2024-25)

❖ निर्यात-

- राजस्थान में वित्तीय वर्ष 2023-24 में कुल निर्यात **83,704.24 करोड़ रु.** का हुआ है।
- राजस्थान से सर्वाधिक निर्यात होने वाली **शीर्ष वस्तुएँ** निम्न है-

क्र.सं.	वर्ष 2023-24 में राजस्थान से निर्यात	
1.	इंजीनियरिंग वस्तुएँ	19.82%
2.	रत्न व आभूषण	13.36%
3.	धातुएँ	11.78%
4.	कपड़ा	10.54%
5.	हस्तशिल्प	9.54%

- **एग्रो फूड पार्क–** राजस्थान में **रीको** द्वारा **4 कृषि खाद्य पार्क** की स्थापना की जा चुकी है–
  1. **रानपुरा (कोटा)– 139.80 हेक्टेयर**
  2. **बोरनाड़ा (जोधपुर ग्रामीण)– 193.54 हेक्टेयर**
  3. **अलवर– 185.94 हेक्टेयर**
  4. **उद्योग विहार (गंगानगर)– 81.14 हेक्टेयर**
- **ग्रीनटेक मेगा फूड पार्क–** रूपनगढ़ (**अजमेर**)
  यह राजस्थान का **पहला** मेगा फूड पार्क है।
- मेगा फूड पार्क– **मथानिया** (जोधपुर ग्रामीण) **(बजट घोषणा 2020-21)**
- मेगा फूड पार्क– **पलाना (बीकानेर) (प्रस्तावित)**
  - इसके लिए खाद्य प्रसंस्करण, उद्योग मंत्रालय भारत सरकार ने स्वीकृति जारी कर दी है। श्रीराम मेगा फूड पार्क प्राइवेट लिमिटेड द्वारा इसे 50 हैक्टेयर में स्थापित किया जाएगा।
- **मिनी फूड पार्क**– कृषि जिंसो एवं उनके उत्पादों के व्यवसाय एवं निर्यात को बढ़ावा देने के लिए पाली, जैसलमेर, करौली, झालावाड़, बाड़मेर, जालौर, बीकानेर, दौसा, सवाईमाधोपुर और नागौर में मिनी फूड पार्क बनाने का निर्णय लिया है।
- **मिनी एग्रो पार्क– निवाई** (टोंक) में बनेगा। (बजट 2022)
- **कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र– तिंवरी (जोधपुर ग्रामीण)**
  इसे रीको द्वारा 33 हैक्टेयर भूमि पर विकसित किया गया है।

- **राजस्थान का प्रथम स्पाईस पार्क** (मसाला पार्क)**– रामपुरा भाटियान** (जोधपुर ग्रामीण) **7 अप्रैल, 2012 को** अशोक गहलोत द्वारा उद्घाटन
- राजस्थान का **द्वितीय स्पाईस पार्क – रामगंज मंडी (कोटा)**
  यह देश का **सातवाँ स्पाईस पार्क** है।
- **स्टोन पार्क** (आयामी पत्थर)– **विशनोदा** (धौलपुर), **मंडोर** (जोधपुर), **सिकन्दरा** (दौसा), **मंडाना** (कोटा), **मासलपुर** (करौली)
- **बायो टेक्नोलॉजी पार्क**– सीतापुरा (जयपुर ग्रामीण), चोपांकी (भिवाड़ी, खैरथल-तिजारा)
- **एपैरल पार्क– महल** (जगतपुरा, जयपुर) यहाँ वस्त्र निर्माण की निर्यातक इकाईयाँ स्थापित होगी।
- **एपैरल पार्क– कारोला (भिवाड़ी, खैरथल-तिजारा)**
- **अर्थ स्टेशन**– EPIP **सीतापुरा** (जयपुर ग्रामीण) व **बोरनाड़ा** (जोधपुर ग्रामीण)
- **साईबर पार्क– जोधपुर** (रीको द्वारा स्थापित)
- **सिरेमिक्स पार्क– खारा** (बीकानेर)
- **सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क – कनकपुरा** (जयपुर)
- **सूचना प्रौद्योगिकी पार्क– EPIP सीतापुरा** एवं **रामचन्द्रपुरा** (जयपुर ग्रामीण)
- **रीको द्वारा स्थापित पुष्प पार्क** – खुशखेड़ा (खैरथल-तिजारा)
- **वर्ल्ड ट्रेड पार्क– जयपुर**
- **फिनटेक पार्क– जोधपुर**
- **राजीव गाँधी फिनटेक डिजिटल इंस्टीट्यूट – जोधपुर**
  तकनीकी उद्योगों के लिए यूवा विशेषज्ञ उपलब्ध कराने के लिए इसकी स्थापना की गई है।
- **होजियरी कॉम्प्लेक्स – चोपांकी** (खैरथल-तिजारा)
- **ऑटोमोबाईल कॉम्प्लेक्स– बाड़मेर**
- **चमड़ा कॉम्प्लेक्स – मानपुरा माचेड़ी** (जयपुर ग्रामीण) **सीतापुरा** (जयपुर ग्रामीण), **भिवाड़ी** (खैरथल-तिजारा)
- **ऊन** (वूलन) **कॉम्प्लेक्स – नर्बद खेड़ा (ब्यावर)**
- **इलेक्ट्रॉनिक्स कॉम्प्लेक्स**–
  → **इलेक्ट्रॉनिक्स हार्डवेयर टेक्नोलॉजी पार्क– कूकस** (जयपुर ग्रामीण)
  → **कोटा इलेक्ट्रोनिक्स कॉम्प्लेक्स– कोटा**
- **ऑटो कम्पोनेंट (सहायक पार्टस) सेन्टर – पथरेड़ी** (भिवाड़ी, खैरथल-तिजारा)
- **DRDO उद्योग अकादमिक उत्कृष्टता केन्द्र** – जोधपुर
- **लघु खनिज कॉम्प्लेक्स– दोहिन्दा (राजसमंद), मित्रपुरा (दौसा), करौली, सवाईमाधोपुर**
- राज्य का पहला **राईस कलस्टर– बूँदी**। चावल उद्योग को विकसित करने के लिए स्थापित किया गया है।
- **गोटा कलस्टर**– अजमेर।
- **पिछवाई पेंटिग कलस्टर** – ब्यावर।
- **सिल्क व वुडन पेंटिग कलस्टर** – किशनगढ़।
- **ब्लू पॉटरी के लिए सेंटर ऑफ एक्सीलेंस** – जयपुर
  बजट 2023-24 में इसकी घोषणा की गई है।
- **ग्रामीण व शहरी हाट**– दस्तकारों/बनुकरों/स्वयं सहायता समूह एवं लघु उपक्रमियों के उत्पादों के प्रदर्शन एवं विक्रय की दृष्टि से राज्य में **12 ग्रामीण हाट** एवं **4 शहरी हाट** स्थापित किए गए हैं।
  → **ग्रामीण हाट**– भरतपुर, झुंझुनूं, भीलवाड़ा, कोटा, बीकानेर, दौसा, चित्तौड़गढ़, राजसमंद, जैसलमेर, उदयपुर।

☞ **नोट– अलवर** व **पुष्कर** में ग्रामीण हाट हेतु भूमि उपलब्ध है, जिसकी डीपीआर तैयार की गई है।

→ **शहरी हाट**– उद्यम प्रोत्साहन संस्थान द्वारा दिल्ली हाट की तर्ज पर **जोधपुर, जयपुर व अजमेर** में अरबन हाट की स्थापना की गई है। **सीकर** हाट निर्माणाधीन है। **(स्रोत– प्रगति प्रतिवेदन 2023-24 उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, राजस्थान)**

- **केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियान्त्रिकी अनुसंधान संस्थान** (CEERI)– पिलानी (झुंझुनूं)
- ✓ **सेन्ट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ प्लास्टिक इंजिनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी** (CIPET)– जयपुर
- ✓ **वुडन वेयर सर्विस सेन्टर** – जोधपुर
- ✓ **नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी** (NIFT)– जोधपुर
  स्थापना– 2010
- ✓ **फुटवियर डिजाइन एंड डवलपमेन्ट इंस्टिट्यूट** – जोधपुर
- ✓ **नेशनल ट्रेनिंग सेन्टर फॉर वुड टेक्नोलॉजी व डिजाईन** – जोधपुर
- ✓ **हैण्डलूम डिजायन डवलपमेन्ट एंड ट्रेनिंग सेन्टर** – नागौर

➢ **नीति के प्रमुख उद्देश्य–** राज्य के हस्तशिल्पियों के उत्पादों को निर्यात योग्य बनाना एवं **अंतरराष्ट्रीय स्तर** पर पहचान दिलाना एवं निर्यात में राज्य की भागीदारी बढ़ाना, विलुप्त होती परंपरागत हस्तकलाओं को पुनर्जीवित करना, हस्तशिल्प के क्षेत्र में आगामी **5 वर्षों** में 50 हजार नए रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाना है।

❖ **Rajasthan-One District, One Product Policy 2024-** राज्य के प्रत्येक जिले को **Export Hub** बनाने की दृष्टि से यह पॉलिसी लायी जायेगी। इसके क्रियान्वयन पर प्रति वर्ष **100 करोड़ रूपये** का भार आयेगा। (बजट घोषणा 2024-25)

✦ **Garment and Apparel Policy-** बजट घोषणा 2024-25 में प्रदेश में **Textile** (वस्त्र) संबंधित उद्योग को और ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए पृथक **Garment and Apparel Policy** लायी जायेगी।

❖ **एक जिला एक उत्पाद–** इसका मुख्य उद्देश्य प्रत्येक जिले से निर्यात क्षमता वाले उत्पादों और सेवाओं की पहचान करना और उन्हें बढ़ावा देना तथा **प्रत्येक जिले** को एक संभावित निर्यात केन्द्र के रूप में बदलना।

- राज्य के सभी जिलों में सम्बन्धित जिला कलेक्टरों की अध्यक्षता में जिला स्तरीय निर्यात प्रोत्साहन समितियों **(DEPC)** का गठन किया गया है।

एक जिला एक उत्पाद के अन्तर्गत चिह्नित जिलेवार उत्पाद

क्र. सं.	जिला	उत्पाद का नाम
1.	अजमेर	ग्रेनाईट एवं मार्बल–स्लेब्स, टाइल्स और सामग्री
2.	अलवर	अभियांत्रिकी उत्पाद (ऑटोमोबाईल पार्ट्स)
		भारतीय मिष्ठान (अलवर मावा/मिल्क केक आदि)
3.	अनूपगढ़	कॉटन बॉल्स
4.	बालोतरा	वस्त्र
5.	बांसवाड़ा	ग्रेनाईट एवं मार्बल–स्लेब्स और टाइल्स
		सिन्थेटिक यार्न और फेबरिक
6.	बारां	कृषि उत्पाद (सोयाबीन आदि)
7.	बाड़मेर	कशीदाकारी
		ब्लॉक प्रिंटिंग वस्तुएँ
8.	ब्यावर	क्वार्टज एवं फेल्सपार पाउडर
9.	भरतपुर	कृषि और प्रसंस्करण उत्पाद (खाद्य तेल, शहद आदि)
10.	भीलवाड़ा	वस्त्र
11.	बीकानेर	बीकानेरी नमकीन
		ऊनी कारपेट यार्न
		सिरेमिक उत्पाद
12.	बूँदी	चावल
13.	चित्तौड़गढ़	ग्रेनाईट एवं मार्बल–स्लेब्स और टाइल्स
14.	चूरू	काष्ठ उत्पाद
15.	दौसा	दरी (गलीचे)
		पत्थर उत्पाद
16.	डीडवाना–कुचामन	मकराना मार्बल एवं ग्रेनाईट

एक जिला एक उत्पाद के अन्तर्गत चिह्नित जिलेवार उत्पाद

क्र. सं.	जिला	उत्पाद का नाम
17.	डीग	पत्थर संबंधी उत्पाद
18.	धौलपुर	स्कीम्ड मिल्क पाउडर
		स्टोन टाइल्स और स्लेब्स
19.	दूदू	ब्ल्यू पोटरी
20.	डूँगरपुर	ग्रेनाइट एवं मार्बल–स्लेब्स और टाइल्स
21.	गंगापुर सिटी	भारतीय मिष्ठान (खीरमोहन आदि)
22.	हनुमानगढ़	कृषि उत्पाद (चावल, कपास आदि)
23.	जयपुर	जेम्स एवं ज्वैलरी
		गारमेंट्स, फर्नीचर, खिलौने एवं अभियांत्रिकी वस्तुएँ
		सेवाओं का निर्यात
24.	जयपुर (ग्रामीण)	ब्लॉक प्रिंटिंग वस्तुएँ
		कृषि उपकरण
25.	जैसलमेर	पीला मार्बल स्लेब्स
26.	जालोर	ग्रेनाइट स्लेब एवं टाइल्स
		मोजड़ी जूतियाँ
27.	झालावाड़	सन्तरा
28.	झुंझुनूं	काष्ठ हस्तकला उत्पाद
29.	जोधपुर	फर्नीचर एवं हस्तकला उत्पाद
30.	जोधपुर (ग्रामीण)	बलुआ पत्थर नक्काशी उत्पाद
31.	करौली	बलुआ पत्थर– स्लेब, टाईल्स एवं उत्पाद
32.	केकड़ी	ग्रेनाइट एवं मार्बल– स्लेब्स और टाइल्स
33.	खैरथल–तिजारा	अभियांत्रिकी उत्पाद (ऑटोमोबाइल पार्ट्स इत्यादि)
34.	कोटा	कोटा डोरिया
35.	कोटपूतली–बहरोड़	अभियांत्रिकी उत्पाद (ऑटोमोबाइल पार्ट्स इत्यादि)
36.	नागौर	हाथ के उपकरण
37.	नीमकाथाना	फेल्ड्सपार खनिज और उत्पाद
38.	पाली	मेहन्दी
39.	फलौदी	नमक
		सेन्ना/सोनामुखी उत्पाद
40.	प्रतापगढ़	थेवा कला
41.	राजसमन्द	ग्रेनाइट एवं मार्बल– स्लेब्स और टाइल्स
		टेराकोटा
42.	सलूम्बर	मार्बल–स्लेब्स और टाइल्स
43.	सांचौर	मसाले
44.	शाहपुरा	फड़ चित्रकला
45.	सवाई माधोपुर	पर्यटन
46.	सीकर	फर्नीचर–एंटिक
47.	सिरोही	मार्बल वस्तुएँ
48.	श्रीगंगानगर	किन्नू
49.	टोंक	स्लेट स्टोन टाइल्स
50.	उदयपुर	ग्रेनाइट एवं मार्बल–स्लेब्स और टाइल्स

17 राजस्थान के खनिज संसाधन

- खनिज सम्पदा की दृष्टि से राजस्थान की गिनती देश के सम्पन्न राज्यों में होती है। देश के खनिज मानचित्र पर राजस्थान महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। राजस्थान में खनिजों में काफी विविधता पायी जाती है इसलिए राजस्थान को **'खनिजों का अजायबघर/खनिजों का संग्रहालय'** कहते हैं।
- राजस्थान में सर्वाधिक खनिज **अरावली पर्वतमाला** व **पठारी क्षेत्र** से निकाले जाते हैं।
- राजस्थान में **81 प्रकार** के खनिज पाये जाते हैं, जिनमें से वर्तमान में **58 खनिजों का उत्खनन** हो रहा है।

(स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2023-24)

- राजस्थान में वर्तमान में खनन पट्टों का आवंटन **ई-निलामी बोली प्रक्रिया** द्वारा किया जा रहा है। राजस्थान में प्रधान खनिजों के **148 खनन पट्टे** व अप्रधान खनिजों के **16,817 खनन पट्टे** व **17,454 खदान लाईसेन्स** जारी किए गए हैं।

(स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2023-24)

- **प्रधान खनिज व अप्रधान खनिज क्या है?-**

✦ **प्रधान खनिज-** 1960 के खनिज रियायती नियम **(MCR)** के अन्तर्गत आने वाले खनिज प्रधान खनिज माने जाते हैं, प्रधान खनिज के लिए रॉयल्टी व नियमों का निर्धारण केन्द्र सरकार द्वारा किया जाता है।

✦ **अप्रधान खनिज-** अप्रधान खनिज रियायती नियम **(MMCR)** के अन्तर्गत आने वाले खनिज अप्रधान खनिज माने जाते हैं, इन खनिजों के लिए आवंटन व रॉयल्टी के नियम राज्य सरकार निर्धारित करती है। केन्द्र सरकार ने **2015 में जिप्सम**, बेराइटस, डोलोमाइट, क्वार्टज, फेल्सपार, माइका, चाईना क्ले सहित **31 प्रधान** खनिजों को अप्रधान खनिजों की सूची में डाला है, अब इन खनिजों के आवंटन व रॉयल्टी के नियम राज्य सरकार निर्धारित करती है।

✦ **खान एवं भू-विज्ञान विभाग-** राजस्थान में खनिजों की खोज एवं उनके व्यवस्थित दोहन के लिए खान एवं भू-विज्ञान विभाग की स्थापना 1949 में की गई, जिसका **मुख्यालय उदयपुर** में है तथा पंजीकृत **कार्यालय जयपुर** में है।

✦ **खान एवं भू-विज्ञान निदेशालय -** उदयपुर

✦ **राजस्थान राज्य खनिज अन्वेषण न्यास- जयपुर**

✦ **राजस्थान राज्य खनिज विकास निगम (RSMDC)-** 27 सितम्बर, 1979 को स्थापना। 20 फरवरी, 2003 को **RSMDC** का विलय **'राजस्थान राज्य खान व खनिज लिमिटेड' (RSMML)** में कर दिया गया।

✦ **'राजस्थान राज्य खान व खनिज लिमिटेड' (RSMML)-** 30 अक्टुबर, 1974 को इसकी स्थापना उदयपुर में की गई। पहले इसे 1947 में **'बीकानेर जिप्सम लिमिटेड'** के नाम से स्थापित की गई थी, जिसे कम्पनी अधिनियम के तहत् 1974 में **'राजस्थान राज्य खान व खनिज लिमिटेड'** के नाम से स्थापना की गई। जिसका **मुख्यालय उदयपुर** में है तथा पंजीकृत **कार्यालय जयपुर** में है।

- राजस्थान खान एवं खनिज लिमिटेड द्वारा स्टील ऑथोरिटी ऑफ इण्डिया के साथ **हल्की सिलिका लाइमस्टोन** आपूर्ति के लिए दीर्घकालीन अनुबंध किए गए हैं।
- **RSMML (Rajasthan State Mines and Minerals)** का मुख्य कार्य राज्य में किफायती तकनीकों का उपयोग करते हुए खनिज सम्पदा का दोहन करना और खनिज आधारित परियोजनाओं को बढ़ावा देना है। कम्पनी की मुख्य गतिविधियों को **4 भागों** में बांटा गया है-

1. स्ट्रेटजिक बिजनेस यूनिट एवं प्रोफिट सेन्टर- **रॉक फॉस्फेट, झामरकोटड़ा (उदयपुर)**
2. स्ट्रेटजिक बिजनेस यूनिट एवं प्रोफिट सेन्टर-जिप्सम **(बीकानेर)**
3. स्ट्रेटजिक बिजनेस यूनिट एवं प्रोफिट सेन्टर-लाईमस्टोन **(जोधपुर)**
4. स्ट्रेटजिक बिजनेस यूनिट एवं प्रोफिट सेन्टर- लिग्नाईट **(जयपुर)**

(स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2023-24)

❖ **प्रमुख तथ्य-**

✦ **अप्रधान/गौण खनिजों के उत्पादन** में राजस्थान का स्थान- **प्रथम**।

✦ भारत में **संसूचित खानों की दृष्टि से** राजस्थान का स्थान- **8वाँ**
प्रथम स्थान- **मध्यप्रदेश**

✦ खनिजों की **किस्मों की दृष्टि से** राजस्थान का स्थान- **प्रथम**

✦ **खनिज भण्डारों (उपलब्धता) के आधार पर** राजस्थान का स्थान- **द्वितीय** (प्रथम- **झारखंड**)

(स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2022-23)

✦ वर्ष 2021-22 के आंकड़ों (परमाणु व ईंधन खनिजों को छोड़कर) के अनुसार **खनिज उत्पादन मूल्य** की दृष्टि से राजस्थान का स्थान- **तीसरा**
ओडिशा (44.11%), **छतीसगढ़** (17.34%),
राजस्थान (14.10%)

✦ **अलौह धातु के उत्पादन** में मूल्य की दृष्टि से राज. का स्थान- **प्रथम**

✦ **लौह धातु के उत्पादन में मूल्य की दृष्टि से** राज. का स्थान- **चौथा**।

✦ वर्ष 2023-24 में राजस्थान में स्थिर कीमतों (2011-12) पर **सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA)** में **खनन क्षेत्र का योगदान**-3.21%

✦ वर्ष 2023-24 में राजस्थान में प्रचलित कीमतों पर **सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA)** में **खनन क्षेत्र का योगदान**-3.38%

(स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2023-24)

☞ विभिन्न खनिजों के उत्पादन में **राजस्थान की स्थिति-**

✦ राजस्थान **सीसा-जस्ता अयस्क** (100%), **सेलेनाईट** (100%), **वुलेस्टोनाईट**(100%), **जास्पर**(100%), **तामड़ा/गारनेट** (100%) का एकमात्र उत्पादक राज्य है।

- पन्ने का उपयोग- **आभूषण बनाने** में।
- **पन्ना मंडी** व **पन्ना नगरी**- जयपुर (पन्ने की पॉलिशिंग व प्रोसेसिंग का कार्य होने के कारण)
- **पन्ना के भंडार- कालागुमान** (राजसमंद) (1943 में पहली बार खोजा गया), **गोगुंदा व टिक्की** (उदयपुर), राजगढ़, गुडास व बुबानी (अजमेर) में पन्ने के भंडार है।
  वर्तमान में भारत में पन्ने का खनन कार्य बंद है।
  (स्रोत- **Indian Minerals Year Book 2021** फरवरी 2023 **Edition**)

- **ग्रीन फायर बेल्ट**- ब्रिटेन की **माइन्स मैनेजमेन्ट लिमिटेड कम्पनी** द्वारा **बुबानी व मुहामी** (अजमेर) से **गांव गुढ़ा** (राजसमंद) तक 221 कि.मी. लम्बी फाइनग्रेड पन्ने की खोजी गयी विशाल पट्टी को 'ग्रीन फायर बैल्ट' नाम दिया गया है।

हीरा

- हीरे का सर्वाधिक भण्डार व उत्पादन- **रूस**।
- विश्व में हीरा कटिंग व पॉलिशिंग उद्योग में प्रथम स्थान- **भारत**।
- भारत में हीरे की प्रमुख खान- **पन्ना** व **सतना** (मध्यप्रदेश)।
- हीरा मंडी- **मुम्बई**।
- राजस्थान में हीरे व जवाहरातों के लिए प्रसिद्ध शहर- **जयपुर**।
- डायमंड कटिंग व पॉलिशिंग उद्योग का प्रमुख केन्द्र- **सूरत** (गुजरात)
- भारत में **शत-प्रतिशत हीरा उत्पादन** मध्यप्रदेश के **पन्ना व सतना** से ही होता है।
- **केसरपुरा व मानपुरा** (प्रतापगढ़) से नगण्य मात्रा में हीरा प्राप्ति के अनुमान है।
- हाल ही के भू-सर्वेक्षणों में बाड़मेर जिले की **'मालाणी रायोलाइटस'** की चट्टानों से हीरा प्राप्त होने की सम्भावना व्यक्त की गयी है।

तामड़ा/गारनेट

- तामड़ा (जैम वैराइटी) के उत्पादन में **राजस्थान का एकाधिकार** है। लाल व गहरे कत्थई रंग का यह खनिज **'फिरोजा/लालमणि/रक्तमणि'** के नाम से प्रसिद्ध है।
- यह पारदर्शी खनिज है जिसका उपयोग आभूषण बनाने में होता है इसमें लोहा व एल्यूमिनियम का मिश्रण होता है।
- तामड़ा/गारनेट दो प्रकार का होता है- 1. **अब्रेसिव वैराइटी**
  2. **जैम वैराइटी**
- **जैम वैराइटी** का उत्पादन केवल **राजस्थान** में ही होता था, भारत में जैम वैराइटी का उत्पादन वर्ष 2018-19 से बन्द है।
- जैम वैराइटी तामड़ा उत्पादन में राजस्थान में प्रथम स्थान- **टोंक**
- अब्रेसिव वैराइटी के उत्पादन में **प्रथम स्थान राजस्थान** का है। वर्ष 2019-20 व 2020-21 में गार्नेट (एब्रेसिव वैराइटी) का 100% उत्पादन राजस्थान से हुआ है।
- अब्रेसिव वैराइटी की राजस्थान में **5 सक्रिय खानें** है- अजमेर (2), भीलवाड़ा (2), टोंक (1)।
- अब्रेसिव वैराइटी के उत्पादन में राजस्थान में प्रथम स्थान- **भीलवाड़ा**
  (स्रोत- **Indian Minerals Year Book 2021** जनवरी 2023 **Edition**)

✦ प्रमुख प्राप्ति क्षेत्र-

- **टोंक- राजमहल, जनकपुरा, कुशालपुरा, कल्याणपुर, गाँवरी, देवखेड़ा**
- **अजमेर- सरवाड़ व खरखारी**
- **केकड़ी- बांदनवाड़ा**
- **भीलवाड़ा- ददिया, देवरी**
- **शाहपुरा- गोकुलपुरा, कमलपुरा, बलीया खेड़ा**।
- **सीकर- बागेश्वर**
- **नीमकाथाना- महवा**
- **झुँझुनूँ-**

सुलेमानी पत्थर

- **अकीक/गोमद** के नाम से भी प्रसिद्ध सुलेमानी पत्थर एक अर्द्धदुर्लभ पत्थर है जिसमें राजस्थान का **एकाधिकार** है जो मुख्यतया झालावाड़, कोटा, चित्तौड़गढ़ एवं बाँसवाड़ा में पाया जाता है।

जिप्सम- (Gypsum)

- जिप्सम शुष्क, अर्द्धशुष्क तथा ऊसर मिट्टी में पाया जाने वाला परतदार खनिज है। इसके अन्य नाम- **हरसौठ/सेलखड़ी/गोदंती**
- **उपयोग**- जिप्सम से **अमोनियम सल्फेट** नामक रासायनिक खाद बनायी जाती है जो क्षारीय भूमि में होने वाली सेम की समस्या के समाधान के लिए प्रयोग की जाती है।
- **अन्य उपयोग-प्लास्टर ऑफ पेरिस** बनाने (सर्वाधिक प्रसिद्ध स्थल-जयपुर), सीमेंट उद्योग, रंग उद्योग, गंधक का अम्ल बनाने, चीनी मिट्टी के बर्तन बनाने, प्लास्टर बोर्ड बनाने, कागज बनाने व कीटाणुनाशक बनाने में।
- **भारत में सर्वाधिक जिप्सम भंडार वाला राज्य- राजस्थान** (81%)
- भंडारों की दृष्टि से द्वितीय स्थान- जम्मू कश्मीर (14%)
- जिप्सम उत्पादन में **राजस्थान का एकाधिकार** (99%) है
  गुजरात व **जम्मू कश्मीर** (नगण्य)
  (स्रोत-Indian Minerals Year Book 2020 जुलाई 2021 Edition)
- **राजस्थान में जिप्सम उत्पादन वाले जिले** - बीकानेर, नागौर, बाड़मेर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, गंगानगर व जालौर।

✦ **नागौर क्षेत्र- गोठ-मांगलोद, भदवासी, जोधियासी, पिलनवासी,** धाकोरिया, मांलगू, मंगोल, भदाना आदि।

✦ **बीकानेर- लूणकरणसर, जामसर, बल्लर, पूगल, धीरेरा, कावनी,** हरकासर, कनोई, कोलायत, कायमवाला डेर, जग्गासर, दुलमेरा

✦ **गंगानगर- सूरतगढ़,** तोलानिया, किशनपुरा, नोलखी।

✦ **अनूपगढ़- विजयनगर**, घड़साना।

✦ **जैसलमेर- मोहनगढ़, नाचना**, लखरौर, हमीरवाली ढ़ाणी,

- **राजस्थान स्टेट पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड** - स्थापना 10 जुलाई, 2008 को, यह **RSMML** की सहयोगी कम्पनी है, जो राजस्थान में पेट्रोलियम के अन्वेषण, उत्पादन, वितरण व परिवहन आदि गतिविधियों का संचालन करती है।

- **राजस्थान में मुख्यतः 4 पेट्रोलीफेरस (पेट्रोलियम सम्भाव्य) बेसिन** है। जो 15 जिलों के **1,50,000 वर्ग किमी. क्षेत्र** में विस्तृत है।
  1 **बाड़मेर- सांचौर बेसिन**- बाड़मेर, सांचौर व जालौर जिले
  2 **जैसलमेर बेसिन**- जैसलमेर जिला
  3 **बीकानेर-नागौर बेसिन**-बीकानेर, चुरू, हनुमानगढ़, गंगानगर, नागौर जिले
  4 **विंध्यन बेसिन**- कोटा, बूँदी, बारां, झालावाड़ जिले तथा भीलवाड़ा एवं चित्तौड़गढ़ का कुछ हिस्सा
  (स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2023-24)

- राजस्थान में कच्चे तेल का सर्वाधिक उत्पादन- **बाड़मेर**।

✦ प्रमुख प्राकृतिक तेल प्राप्ति क्षेत्र-

- **बाड़मेर-** सादाझुण्ड, कवास, गुढामालानी
- **बालोतरा-** कोसलू, बायतु, नगाणा।
- **जैसलमेर-** सादेवाला, तनोट, बाघेवाला से टावरीवाला, चिन्नेवाला टिब्बा।
- **बीकानेर**-
- **गंगानगर**- बींझबायला
- **अनूपगढ़**- रावला मंडी, नानूवाला

✦ **बाघेवाला से टावरीवाला** - यहाँ भारी तेल के भंडार मिले हैं, वेनेजुएला की कम्पनी **PDVSA** व **ऑयल इंडिया लिमिटेड** द्वारा **बाघेवाला (जैसलमेर)** से वित्तीय वर्ष 2023-24 में लगभग **1,66,936 बैरल कच्चे तेल** का दोहन किया गया। वर्तमान में यहाँ से **570 बैरल** प्रतिदिन भारी तेल (बी.ओ.पी.डी.) का उत्पादन किया जा रहा है। **(स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2023-24)**

✦ **गुढामालानी (बाड़मेर)-** यहाँ से विश्व में सबसे कम गहराई पर उत्तम श्रेणी का पेट्रोल मिला है।

✦ **बायतु** (बालोतरा)- गैसोलिन की मात्रा अधिक होने से वायुयानों का ईंधन मिला है।

✦ **ONGCL** के सर्वे में **नाल बड़ी** (बीकानेर) एवं **सालासर** (चुरू) में भारी खनिज तेल के संकेत मिले हैं।

✦ केयर्न वेदांता लिमिटेड के नवीनतम आकलन के अनुसार बाड़मेर-सांचौर बेसिन में लगभग 205 मिलियन बैरल कच्चे तेल के भण्डार निहित हैं।

- राज्य सरकार के प्रयासों से प्राकृतिक संपदा के अन्वेषण, विकास एवं दोहन कार्य हेतु लगभग **60,000 वर्ग किमी. भूमि** को चिन्हित किया गया है। वर्तमान में राजस्थान में कुल **14 PEL** (पेट्रोलियम अन्वेषण लाइसेंस) कच्चे तेल एवं प्राकृतिक गैस के अन्वेषण कार्य हेतु स्वीकृत है। **12 PML** (पेट्रोलियम खनन पट्टे) में विकास एवं दोहन का कार्य प्रगति पर है।

➢ पेट्रोलियम खनन पट्टों की सूची निम्न प्रकार है-

1.	मनहेरा टिब्बा (जैसलमेर)	O.N.G.C.L.
2.	तनोट-डांडेवाला (जैसलमेर)	ऑयल इंडिया लिमिटेड
3.	घोटारू विस्तार (जैसलमेर)	O.N.G.C.L.
4.	चिन्नेवाला-टीबा (जैसलमेर)	O.N.G.C.L.
5.	बाघेवाला (जैसलमेर)	ऑयल इंडिया लिमिटेड
6.	मंगला क्षेत्र (बालोतरा)	O.N.G.C.L./केयर्न वेदांता लि.
7.	भाग्यम-शक्ति (बालोतरा)	O.N.G.C.L./केयर्न वेदांता लि.
8.	कामेश्वरी-वेस्ट	O.N.G.C.L./केयर्न वेदांता लि.
9.	एस.जी.एल. डवलपमेंट एरिया	O.N.G.C.L./फोकस एनर्जी
10.	साउथ खरातार	O.N.G.C.L.
11.	चिन्नेवाला (जैसलमेर)	O.N.G.C.L.
12.	बाखरी टिब्बा (जैसलमेर)	ऑयल इंडिया लिमिटेड

(स्रोत- प्रगति प्रतिवेदन 2023-24 पेट्रोलियम विभाग, राजस्थान)

✦ नवीनतम आवंटित क्षेत्र-

→ **बाड़मेर बेसिन-** इस बेसिन में तेल व गैस की खोज हेतु एक नया ब्लॉक राज्य सरकार द्वारा **30 नवम्बर, 2022** को गेल इंडिया लिमिटेड को स्वीकृत किया गया। **(स्रोत- आर्थिक समीक्षा 2022-23)**

→ **जैसलमेर बेसिन-** इस बेसिन में ONGCL को प्राकृतिक गैस के उत्पादन हेतु एक पी.एम.एल. घोटारू एक्सटेंशन पुनः प्रदान किया गया है।

- पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय द्वारा इस बेसिन में तेल और गैस खोज हेतु **दो नये ब्लॉक ऑयल इंडिया लिमिटेड** एवं **मेघा इंजीनियरिंग एवं इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड** को आंवटित किये गये और तत्पश्चात् राज्य सरकार द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई है।
  (स्रोत- आर्थिक समीक्षा 2023-24)

✦ बाड़मेर-सांचौर बेसिन में केयर्न वेदांता लिमिटेड द्वारा अब तक कुल 38 तेल व गैस क्षेत्रों की खोज की गई है, जिनका विवरण निम्न प्रकार है-

■ **मंगला**- जोगासर गाँव (बालोतरा) एनबी-1 नामक कुआं, यहाँ 2004 में तेल के विशाल भंडार मिले थे। इसे विगत 3 दशकों में देश की सबसे बड़ी भूमिय खोज माना गया है।

- वसुंधरा राजे व राम नायक ने 10 फरवरी, 2004 को इसे **'मंगला'** नाम दिया। 29 अगस्त, 2009 को **प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह** ने वाल्व घूमा कर व्यावसायिक तेल उत्पादन की शुरुआत की तथा यह तेल क्षेत्र **केयर्न एनर्जी** द्वारा खोजा गया है।
- यह राजस्थान में **सर्वाधिक तेल उत्पादन वाला क्षेत्र** है।

■ **ऐश्वर्या**- बायतु क्षेत्र (बालोतरा) में, यहाँ केयर्न एनर्जी ने तेल भंडारों की खोज की थी, मार्च 2013 में उत्पादन शुरू हुआ।

■ **सरस्वती**- कोसलू क्षेत्र (बालोतरा), यहाँ तेल क्षेत्र की खोज का काम केयर्न एनर्जी ने किया है। यहाँ से जुलाई 2011 में उत्पादन शुरू हुआ।

■ **रागेश्वरी ऑयल**- अडेल क्षेत्र (बाड़मेर), यहाँ से केयर्न एनर्जी ने गैस उत्पादन प्रारम्भ किया है 2012 को उत्पादन शुरू हुआ।

■ **कामेश्वरी**- अडेल (बाड़मेर), अप्रैल 2017 से तेल उत्पादन का कार्य प्रारम्भ हुआ।

18 राजस्थान में ऊर्जा संसाधन

- ऊर्जा या शक्ति हमारे दैनिक जीवन की आवश्यकता है, खाना पकाने से लेकर यातायात के साधन जैसे- रेल, बस, गाड़ी, मोटरसाईकिल, हवाई जहाज, सहित भौतिक संसाधन जैसे- पंखा, फ्रीज, रेडियो, टेलीविजन, उद्योग, पर्यटन, कृषि आदि सभी में ऊर्जा का महत्त्व है। वर्तमान युग **औद्योगिक युग** है, जिसका मुख्य आधार ही शक्ति संसाधन हैं।
- आज के औद्योगिक विकास के लिए और मनुष्य के अस्तित्व के लिए शक्ति के संसाधन अपरिहार्य हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् देश में विद्युत उत्पादन एवं आपूर्ति को विनियमित करने हेतु **बिजली आपूर्ति अधिनियम 1948** पारित किया गया। इसके पश्चात् विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में विद्युत उत्पादन बढ़ाने हेतु विभिन्न परियोजनाएँ स्थापित की गई।
- 1948 में देश में **विद्युत आपूर्ति अधिनियम 1948** लागू किया गया।
- विद्युत/ऊर्जा को **समवर्ती सूची** में शामिल किया गया है।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के समय राजस्थान में **15 विद्युत गृह** थे जिनकी उत्पादन क्षमता 13.27 MW थी। उस समय 26 शहरों व 16 गाँवों को ही विद्युत प्राप्त होती थी।
- **1 जुलाई, 1957** को **राजस्थान राज्य विद्युत मंडल** (RSEB) की स्थापना की गई।

❖ **राजस्थान विद्युत नियामक आयोग** का गठन- 2 जनवरी, 2000 प्रथम अध्यक्ष- **अरुण कुमार।**

- कार्य- राजस्थान में विद्युत उत्पादन, प्रसारण एवं वितरण कंपनियों को लाइसेन्स प्रदान करने एवं राज्य में विद्युत की दरें निर्धारित करने का कार्य राजस्थान राज्य विद्युत नियामक आयोग द्वारा ही किया जाता है।

❖ **राजस्थान विद्युत क्षेत्र सुधार अधिनियम 1999**- राज्य के विद्युत तंत्र में सुधार करने के लिए 1 जून, 2000 को लागू किया गया।

- इसके तहत् **राजस्थान राज्य विद्युत मंडल** (RSEB) का विभाजन कर राजस्थान में 19 जुलाई, 2000 को **5 नई कम्पनियों** का गठन किया गया।

1. **राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड** - मुख्यालय **जयपुर।** राजस्थान सरकार की सभी **विद्युत उत्पादन परियोजनाओं पर नियंत्रण** रखने एवं राज्य में विद्युत उत्पादन के लिए उत्तरदायी।
2. **राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड** - मुख्यालय जयपुर। 765 के.वी., 400 के.वी., 220 के.वी. एवं 132 के.वी. विद्युत प्रसारण संबंधी लाइनों, सब स्टेशनों का निर्माण एवं परिचालन व संचालन का कार्य।
3. **जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड**- जयपुर, 12 जिलों में विद्युत वितरण का कार्य करती है।
4. **अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड**- अजमेर, 11 जिलों में विद्युत वितरण का कार्य करती है।
5. **जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड**- जोधपुर, 10 जिलों में विद्युत वितरण का कार्य करती है।

❖ **राजस्थान ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड** (RUVNL) - 4 दिसम्बर, 2015 विद्युत के थोक क्रय, विक्रय संबंधी कार्यों के लिए गठित की गई है।

- 11वीं व 12वीं **पंचवर्षीय योजना** में सर्वोच्च प्राथमिकता **ऊर्जा** को दी गई थी।

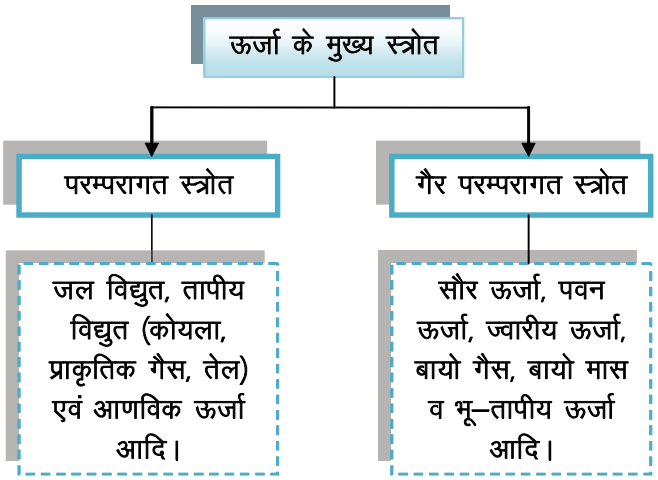

❖ **अनवीकरणीय स्रोत**(Non-Renewable Energy Resources) - ऊर्जा के वे स्रोत जिनका एक बार उपयोग करने के बाद पुनः उपयोग में नहीं ले सकते और न ही पुनः उससे ऊर्जा प्राप्त की जा सके, **अनवीकरणीय स्रोत** कहलाते हैं। इनके भंडार सीमित होते हैं। जैसे- **तापीय विद्युत** (कोयला, प्राकृतिक गैस, तेल) एवं **आणविक (परमाणु) ऊर्जा** आदि।

❖ **नवीकरणीय स्रोत**(Renewable Energy Resources)- ऊर्जा के वे स्रोत जिनका एक बार उपयोग करने के बाद पुनः उपयोग में ले सकते हैं और पुनः उनसे ऊर्जा प्राप्त की जा सके, **नवीकरणीय स्रोत** कहलाते हैं। इनके भंडार असीमित होते हैं। जैसे- जल विद्युत, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, बायो गैस, बायो मास व भूतापीय ऊर्जा आदि।

✦ **सौर ऊर्जा**- सूर्य के प्रकाश से प्राप्त ऊर्जा।
✦ **पवन ऊर्जा**- तीव्र गति से चलने वाली हवाओं से उत्पन्न ऊर्जा।
✦ **बायोगैस ऊर्जा**- जानवरों के मल-मुत्र से वायु रहित अवस्था में अपघटन से जीवाणुओं की क्रिया से प्राप्त एक ज्वलनशील गैस है। इसमें सर्वाधिक मात्रा मिथेन की होती है।
✦ **बायोमास ऊर्जा**- कचरा, धान की भूसी एवं सरसों की भूसी से प्राप्त ऊर्जा।
✦ **ज्वारीय तरंग ऊर्जा**- समुद्री तरंगों एवं ज्वारभाटे से उत्पन्न ऊर्जा।
✦ **भू-तापीय ऊर्जा**- भू-गर्भीय पदार्थों की ऊष्मा से उत्पन्न ऊर्जा। राजस्थान में इसकी सर्वाधिक सम्भावनायें **माउंट आबू** में है।

आणविक विद्युत परियोजनाएँ

✦ राजस्थान परमाणु शक्ति गृह – रावतभाटा (चित्तौड़गढ़)

- राणा प्रताप सागर बाँध के किनारे स्थित है। **नाभिकीय ऊर्जा निगम** (NPC) द्वारा संचालित है। कनाडा की सहायता से स्थापित है। 1965 में प्रारम्भ, 16 दिसम्बर, **1973 को उत्पादन शुरू हुआ।**
- **युरेनियम 235 पर** आधारित परियोजना है।
- यह देश का दूसरा (प्रथम– तारापुर, महाराष्ट्र) व **राजस्थान का पहला परमाणु विद्युत गृह** है।
- रियक्टरों की संख्या की दृष्टि से यह भारत का सबसे बड़ा परमाणु बिजलीघर है (6 रियक्टर स्थापित हैं)
- दाबित भारी पानी (Pressurised heavy water) किस्म के रियक्टर की श्रृंखला में **देश का पहला बिजलीघर** है।
- यहाँ 6 इकाईयाँ कार्यरत हैं। कुल उत्पादन क्षमता– **1180 MW**
- जिसमें से राजस्थान का हिस्सा– **412.74 MW**

I इकाई – 100 MW, (बंद) 16 दिसम्बर, 1973
II इकाई – 200 MW, 1 अप्रैल, 1981
III इकाई – 220 MW, 1 जून, 2000
IV इकाई – 220 MW, 23 दिसम्बर, 2000
V इकाई – 220 MW, 4 फरवरी, 2010
VI इकाई – 220 MW, 31 मार्च, 2010

7वीं व 8वीं इकाईयाँ (700–700 MW) निर्माणाधीन हैं।

(स्रोत– ऑफिसियल बेवसाईट NPCIL)

- **न्यूक्लियर फ्यूल कॉम्प्लेक्स** – देश के दूसरे न्यूक्लियर फ्यूल कॉम्प्लेक्स की स्थापना रावतभाटा (चित्तौड़गढ़) में 09 सितम्बर, 2017 को की गई। इसमें प्रतिवर्ष 500 टन यूरेनियम फ्यूल बंडल बनेंगे। **देश का प्रथम** न्यूक्लियर फ्यूल कॉम्प्लेक्स **हैदराबाद** में है।
- **यह** एशिया का सबसे बड़ा 'यूरेनियम फ्यूल' कॉम्पलेक्स होगा।
- इस कॉम्पलेक्स के माध्यम से देश में **700–700** मेगावाट के परमाणु रिएक्टर के लिए भविष्य में 50 साल तक बनने वाले यूरेनियम फ्यूल बंडल बनाने का कार्य किया जाएगा।

- **पिंक हाइड्रोजन संयंत्र**– स्वच्छ न्यूक्लियर एनर्जी का उपयोग कर ग्रीन हाउस गैस के इमिशन को कम करने के लिए 'पिंक हाइड्रोजन संयंत्र' **रावतभाटा (चित्तौड़)** में स्थापित किया जा रहा है।
- यह संयंत्र **न्यूक्लियर क्षेत्र** का पहला पायलट प्रोजेक्ट है।

✦ नरौरा परमाणु शक्ति गृह– नरौरा (जिला बुलंदशहर, UP)

- N.T.P.C. द्वारा संचालित, 1980 में स्थापित।
- कुल उत्पादन क्षमता– **440** MW (220×2)
- राजस्थान का हिस्सा– **10%** (44 MW)
- यह देश का **चौथा परमाणु बिजलीघर** है।

✦ माही बाँसवाड़ा परमाणु बिजली घर – बाँसवाड़ा

- इसमें 700–700 MW क्षमता की 4 इकाईयाँ लगाई जाएगीं। इसे माही बाँध से जलापूर्ति की जाएगी।
- यह राजस्थान का दूसरा परमाणु बिजलीघर होगा।
- इसके लिए बांसवाड़ा से रतलाम मार्ग पर बारी, आडीभीत, रेल कटुम्बी, सजवानिया व खंडियादेव गाँवों की भूमि अधिग्रहित की गई है।

राजस्थान के गैर–परम्परागत स्रोत

1. **राजस्थान ऊर्जा विकास अभिकरण** –(REDA) **21 जनवरी, 1985**, जयपुर, राजस्थान में गैर–परम्परागत ऊर्जा स्रोतों के विकास व उपकरणों को बढ़ावा देने के लिए।
2. **राजस्थान स्टेट पॉवर कॉर्पोरेशन लिमिटेड** –(RSPCL) जयपुर। 1995 में स्थापना, इस उपक्रम द्वारा गैर–परम्परागत ऊर्जा उत्पादन संयंत्रों की स्थापना की जाती है। इसका 2002 में **राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम में विलय** कर दिया गया।
3. **राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम लिमिटेड**–(RRECL-Rajasthan Renewable Energy Corporation Limited) 9 अगस्त, 2002 को **RSPCL** और **REDA** का विलय कर इसकी स्थापना की गयी। मुख्यालय– **जयपुर**।

- वर्तमान में यह संस्था राजस्थान में गैर–परम्परागत ऊर्जा स्रोतों से ऊर्जा उत्पादन, ऊर्जा संरक्षण, विकास व उपकरणों को बढ़ावा देने का कार्य कर रही है। यह संस्था भारत सरकार के नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय की **नोडल एजेन्सी** के रूप में भी कार्य करती है।

सौर ऊर्जा

- देश में सौर ऊर्जा की सर्वाधिक सम्भावना वाला राज्य– **राजस्थान**
- 2030 तक देश में 500 गीगावॉट रिन्यूएबल एनर्जी उत्पादन के राष्ट्रीय लक्ष्य को हासिल करने में **राजस्थान** बड़ी भूमिका में है।
- अक्षय ऊर्जा पार्टल के अनुसार जून 2024 तक देशभर में स्थापित कुल 84.2 गीगावॉट क्षमता में से राजस्थान **22.41 गीगावाट** (22,415. 220 MW) सौर ऊर्जा स्थापित क्षमता के साथ **प्रथम स्थान** पर है।
- **नवीकरण ऊर्जा मंत्रालय भारत सरकार की रिपोर्ट** के अनुसार सौर ऊर्जा की **स्थापित क्षमता** में राजस्थान देशभर में **प्रथम स्थान** पर है।
- **अक्षय ऊर्जा पोर्टल** (नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय) भारत सरकार से **जून 2024** तक के प्राप्त आंकड़ों के अनुसार–
- देश में सौर ऊर्जा की संस्थापित क्षमता– **84,231.61 मेगावाट**
- सौर ऊर्जा की संस्थापित क्षमता में राजस्थान का स्थान– **प्रथम**

द्वितीय स्थान– **गुजरात**

मेगावाट, पवन 8100 मेगावाट एवं हाइड्रो 3300 मेगावाट) का उत्पादन सुनिश्चित करने हेतु कार्य प्रारम्भ किया गया है।

- मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा द्वारा **10 मार्च, 2024** को **RVUNL** एवं केन्द्रीय उपक्रमों- **NTPC, COAL India Limited, NLC India limited** के मध्य **joint venture undertaking** बनाकर **3325 मेगावाट कोयला** एवं **लिग्नाइट** आधारित परियोजनाएँ स्थापित करने हेतु **MOU** पर हस्ताक्षर किये गये।

✦ **3 सोलर पार्क-** निजी क्षेत्र के माध्यम से अक्षय ऊर्जा के उत्पादन को गति देते हुए **50 हजार मेगावाट** से अधिक उत्पादन क्षमता स्थापित करने की दिशा में निम्न **3 सोलर पार्क** विकसित किये जाएंगे-

1. पूगल सोलर पार्क, बीकानेर
2. छत्तरगढ़ सोलर पार्क, बीकानेर
3. बोडाना सोलर पार्क, जैसलमेर

❐ **ऊर्जा परियोजनाओं को वित्त पोषण के लिए समझौता -**

- 10 मार्च, 2024 को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने ऊर्जा क्षेत्र में राज्य सरकार और विभिन्न केन्द्रीय पीएसयू के मध्य विभिन्न एमओयू किये।
- इसके लिए जोइन्ट वेन्चर कंपनियों का गठन किया जायेगा। इन परियोजनाओं में राज्य सरकार की हिस्सेदारी 26% तथा केन्द्रीय पीएसयू कंपनियों की हिस्सेदारी 74% रहेगी।

❖ **कोल इण्डिया लिमिटेड के साथ एमओयू-** कोल इण्डिया लिमिटेड और RVUNL के मध्य 2 अलग-अलग जोइन्ट वेंचर (JV) की स्थापना की जायेगी।

1. **तापीय परियोजना के लिए-** इसके तहत् कालीसिन्ध तापीय परियोजना, झालावाड़ में 800 मेगावाट इकाई की स्थापना की जायेगी।
2. **अक्षय ऊर्जा परियोजना के लिए -** इसके तहत् लगभग 2500 मेगावाट क्षमता की सौर ऊर्जा परियोजना, पम्प स्टोरेज परियोजना और पवन ऊर्जा परियोजना की स्थापना की जायेगी।

❖ **NTPC के साथ एमओयू-** NTPC ग्रीन एनर्जी और **RVUNL** के मध्य अक्षय ऊर्जा परियोजना की स्थापना के लिए संयुक्त उपक्रम (जोइन्ट वेंचर) स्थापित किया जायेगा। इसके तहत् 25,000 मेगावाट की सोलर/विण्ड/हाइब्रिड परियोजनाओं की स्थापना की जायेगी।

❖ **पावर ग्रीड कॉर्पोरेशन के साथ एमओयू-** विद्युत प्रसारण परियोजनाओं की स्थापना के लिए पावर ग्रीड कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड एवं राजस्थान विद्युत प्रसारण निगम के मध्य जोइन्ट वेंचर की स्थापना की जायेगी।

प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

1. राजस्थान रिन्यूएबल एनर्जी पॉलिसी, 2023 के अनुसार 2029-30 तक सौर, पवन व हाइब्रिड विद्युत परियोजनाओं के लक्ष्य हैं

सौर	पवन व हाइब्रिड
(1) 75,000 MW	- 15,000 MW
(2) 70,000 MW	- 10,000 MW
(3) 65,000 MW	- 15,000 MW
(4) 60,000 MW	- 10,000 MW

विकल्प (3) **(RPSC AEN -2024)**

2. राजस्थान सरकार ने 'राजस्थान विण्ड एण्ड हाइब्रिड एनर्जी पॉलिसी' कब लागू की? **18 दिसम्बर, 2019** **(RPSC AEN -2024)**
3. सूची-I **(ऊर्जा के स्रोत)** को सूची-II **(क्षेत्र)** से सुमेलित करते हुए नीचे दर्शाए गये विकल्पों में से सही कूट का चयन कीजिए:

A. तापीय ऊर्जा	i. अमर सागर
B. सौर ऊर्जा	ii. बायतू
C. प्राकृतिक गैस	iii. सूरतगढ़
D. पवन ऊर्जा	iv. भड़ला

कूट : **A-iii, B-iv, C-ii, D-i** **(RPSC AEN -2024)**

4. निम्नलिखित में से कौनसा राजस्थान में एक गैस-आधारित ऊर्जा संयत्र नहीं है? गिरल (बालोतरा-बाड़मेर)/धौलपुर/अन्ता (बारां)/रामगढ़ (जैसलमेर)

गिरल (बालोतरा-बाड़मेर) **(Curator -2024)**

5. प्रधानमंत्री सूर्योदय योजना के अंतर्गत राजस्थान में कितने घरों में सोलर प्लांट्स स्थापित करने का लक्ष्य है? 10 लाख से अधिक/लगभग 2 लाख/5 लाख से अधिक/लगभग 3 लाख

5 लाख से अधिक **(Curator -2024)**

6. सबसे बड़ा थर्मल पावर स्टेशन कौन-सा है?
सुरतगढ़ थर्मल/कोटा थर्मल/गिरल थर्मल/बरसिंगसर थर्मल

सुरतगढ़ थर्मल **(Raj. Police (L-1) -2024)**

7. राजस्थान के जैसलमेर जिले में प्रारम्भ की गई प्रथम पवन ऊर्जा परियोजना का नाम है- **(Asst. Pro. Geo. -2024)**

अमर सागर पवन ऊर्जा परियोजना **(स्टेटिक ऑफिसर- 2024)**

8. वार्षिक रिपोर्ट 2022-23 के अनुसार, सर्वाधिक संचयी सौर ऊर्जा क्षमता राज्य में पाई जाती है- राजस्थान/कर्नाटक/गुजरात/तमिलनाडु

राजस्थान **(Asst. Pro. Geo. -2024)**

9. राजस्थान में निम्नलिखित में से कौन सा प्राकृतिक गैस पर आधारित विद्युत गृह है? बरसिंगपुर/छबड़ा/चित्तौड़गढ़/अन्ता

अन्ता **(स्टेटिक ऑफिसर- 2024)**

10. हाल ही में राजस्थान सरकार ने ग्रीन हाइड्रोजन नीति, 2023 को मंजूरी दी है। राज्य सरकार ने किस वर्ष तक 2000 KT प्रति वर्ष ऊर्जा उत्पादन का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है? **2030** **(Asst. Pro.- 2024)**
11. लिग्नाइट पर आधारित ताप विद्युत संयंत्र स्थित हैं-
गिराल तथा बाँसवाड़ा/छाबड़ा तथा सूरतगढ़/कवाई तथा दानपुर/गुढ़ा गाँव तथा गिराल

गुढ़ा गाँव तथा गिराल **(Asst. Pro.- 2024)**

12. इनमें से कौन सा प्राकृतिक संसाधन गैर नवीकरणीय संसाधन माना जाता है। इमारती लकड़ी (टिम्बर)/जीवाश्म ईंधन/सौर ऊर्जा/पवन ऊर्जा/अनुत्तरित प्रश्न

जीवाश्म ईंधन **(RAS PRE- 2023)**

19 पर्यटन

- पर्यटन उद्योग को **निर्धूम उद्योग** (धुँआ रहित) कहते हैं।
- यह उद्योग बिना पूंजी निवेश के करोड़ों रुपए की विदेशी मुद्रा का अर्जन करता है ऐसा माना जाता है कि भारत में आने वाला प्रत्येक पाँचवां पर्यटक राजस्थान भ्रमण के लिए अवश्य आता है। पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान **अग्रणी राज्यों** में से एक है और भारत के सबसे आकर्षक स्थलों में से एक है।
- राजस्थान **इतिहास, सौन्दर्य एवं त्याग की त्रिवेणी** है। यहाँ पग-पग पर वीरों ने जन्म लिया है यहाँ पर कई वीरों ने अपनी मृत्यु के बाद भी अपने कर्म और यश को इस प्रकार से छोड़ा है कि विश्व के पर्यटन मानचित्र पर राजस्थान के कई स्थानों का नाम आता है इसी कारण राजस्थान को **सैलानियों का स्वर्ग** कहते है।

✦ पर्यटन का महत्त्व -

- विदेशी मुद्रा का अर्जन होता है।
- सांस्कृतिक एवं कलात्मक धरोहर का संरक्षण होता है।
- रोजगार उपलब्धि का साधन है।
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि होती है।

- **विश्व पर्यटन दिवस** - 27 सितम्बर
- **विश्व पर्यटन दिवस 2023 की थीम- पर्यटन और हरित निवेश** (Tourism And Green Investments)
- **भारतीय पर्यटन दिवस** - 25 जनवरी
- भारतीय पर्यटन दिवस 2024 की थीम- **स्टेबल जर्नी, टाइमलैस मैमोरी (सतत् यात्राएँ, कालातीत यादें)**

- पर्यटन को समर्पित बजट- **2002-03 (राजस्थान सरकार)**
- **UNO द्वारा वर्ष 2017** को '**अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन वर्ष**' के रूप में मनाया गया।
- भारत का पर्यटन स्लोगन- **अतिथि देवो भवः**।
- राजस्थान का **पर्यटन लोगो (पधारो म्हारे देश)** 1993 में लांच किया गया था, उसके बाद- 2008 में- **'कलरफुल राजस्थान'**
- 15 जनवरी, 2016 को- **'जाने क्या दिख जाये'**
- **30 जनवरी, 2019** को पुनः **'पधारो म्हारे देश'** को राजस्थान का पर्यटन लोगो बना दिया गया है।
- ✦ राज्य में पर्यटन के प्रचार-प्रसार हेतु 2 मास्टर विज्ञापन फिल्में **'राजस्थान लगे कुछ अपना सा'** एवं **'रोमांस ऑफ राजस्थान'** 04 अगस्त, 2023 को **जयपुर** में लॉन्च की गई। **(स्रोत-आर्थिक समीक्षा 2023-24)**
- राजस्थान के पर्यटन विभाग का **पंचवाक्य- राजस्थानः भारत का अतुल्य राज्य।**
- **रंग श्री द्वीप** एवं **Island of Glory**- जयपुर को (डॉ. सी.वी. रमन ने कहा)
- **ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इंडिया** (पश्चिमी भारत की यात्रा) नामक पुस्तक के लेखक- **कर्नल टॉड।**

- राजस्थान में पर्यटन को **उद्योग का दर्जा** देने की सिफारिश **मोहम्मद युनूस समिति** ने 1989 में की। इन्हीं की सिफारिश पर 4 मार्च, 1989 को पर्यटन को **निर्धूम उद्योग** का दर्जा दिया गया है। पर्यटन को उद्योग का दर्जा देने वाला **राजस्थान** देश का पहला राज्य है। राजस्थान में पर्यटन को जन उद्योग का दर्जा- 2004-05।

✦ पर्यटन एवं हॉस्पिटैलिटी क्षेत्र को उद्योग का पूर्ण दर्जा-

- **प्रारम्भ- 18 मई, 2022** (स्रोत-DIPR Website)
- वर्षों से पर्यटन क्षेत्र को उद्योग का दर्जा देने की मांग की जा रही थी। **वर्ष 1989** से अब तक इस तरह की कई घोषणाएँ की गई हैं, लेकिन वास्तविक रूप से उद्योग का दर्जा नहीं मिल पाया था।
- राज्य सरकार द्वारा इस क्षेत्र को सम्बल प्रदान करने के दृष्टिकोण से **ट्यूरिज्म** एवं **हॉस्पिटैलिटी** सेक्टर को इंडस्ट्री सेक्टर के रूप में पूर्ण मान्यता दी गई है। अब इससे भविष्य में इस क्षेत्र पर इंडस्ट्रियल नोर्म्स के अनुसार ही गवर्नमेंट टैरिफ एवं लेवीज देय होंगे।

राजस्थान में पर्यटकों का आगमन

	विदेशी पर्यटक	देशी पर्यटक	कुल पर्यटक
वर्ष 2022	3.97 लाख	1083.28 लाख	1087.25 लाख
वर्ष 2023	17 लाख	1790.52 लाख	1807.52 लाख
वृद्धि/कमी	+ 328.52 %	+ 65.29%	+ 66.25%

- राजस्थान में सर्वाधिक **विदेशी पर्यटकों** वाला जिला- **जयपुर** (8,72,887) द्वितीय स्थान पर- **उदयपुर** (2,13,824) तृतीय स्थान पर- **जोधपुर** (1,32,259)
- राजस्थान में सर्वाधिक देशी पर्यटकों वाला जिला- **सीकर** (2,63,36,316) द्वितीय स्थान पर- **जयपुर** (2,01,22,184) तृतीय स्थान पर- **अजमेर** (1,56,41,130)
- राजस्थान में सर्वाधिक विदेशी पर्यटकों के आगमन वाला महीना- **नवम्बर**
- राजस्थान में न्यूनतम विदेशी पर्यटकों के आगमन वाला महीना- **जून**
- राजस्थान में सर्वाधिक देशी पर्यटकों के आगमन वाला महीना- **मार्च**
- राजस्थान में न्यूनतम देशी पर्यटकों के आगमन वाला महीना- **जनवरी**

(स्रोत- प्रगति प्रतिवेदन पर्यटन विभाग राजस्थान 2023-24)

☞ **नोट-** अन्तर्राष्ट्रीय बिजनेस पत्रिका फोर्ब्स द्वारा जारी **वर्ष 2023** की घूमने के लिए **23 बेस्ट टूरिज्म लोकेशन** में भारत से **एकमात्र राज्य राजस्थान** को शामिल किया गया है।

✦ पर्यटन परिपथ-

- **पर्यटन परिपथ** (सर्किट)- राजस्थान सरकार द्वारा प्रकाशित गाइड मेप ऑफ राजस्थान (2005) के अनुसार राजस्थान को **10 पर्यटन सर्किट्स** में बाँटा गया है। ये सर्किट निम्न प्रकार से हैं-

- **5 फरवरी, 2020** को यूनेस्को की महानिदेशक **ऑड्रे अजोले** द्वारा **वर्ल्ड हैरिटेज सिटी का प्रमाण-पत्र** नगरीय विकास मंत्री **शांति धारीवाल** को जयपुर में सौंपा।

बजट घोषणा 2024-25

❖ **महाराणा प्रताप ट्यूरिस्ट सर्किट** – महाराणा प्रताप के जीवन से जुड़े विभिन्न स्थलों चावण्ड, हल्दीघाटी, गोगुन्दा, कुम्भलगढ़, दिवेर, उदयपुर आदि को सम्मिलित करते हुए **100 करोड़** की लागत से महाराणा प्रताप ट्यूरिस्ट सर्किट विकसित किया जायेगा।

❖ **मुख्यमंत्री पर्यटन कौशल विकास कार्यक्रम**– इस कार्यक्रम के तहत् आगामी **2 वर्ष** में **20 हजार युवाओं** व लोक कलाकारों को गाईड/होस्पिटेलिटी/पारम्परिक कला का प्रशिक्षण देकर रोजगार योग्य बनाया जायेगा।

✦ **सशस्त्र बल म्यूजियम**– भारतीय फौज में राजस्थान के युवाओं के शौर्य व बलिदान को सम्मान देने के लिए प्रदेश में **'आर्मड् फोर्सेज म्यूजियम'** की स्थापना के लिए डीपीआर बनाई जायेगी।

- राज्य की अर्थव्यवस्था में पर्यटन का महत्त्वपूर्ण योगदान है। सकल राज्य घरेलू उत्पाद **(GSDP)** में पर्यटन की प्रत्यक्ष व परोक्ष हिस्सेदारी कुल **5.6 प्रतिशत** है। राज्य में लगभग 20 लाख परिवार पर्यटन क्षेत्र से किसी-न-किसी रूप में जुड़े हुए हैं।

✦ **नवीन पर्यटन नीति**– प्रदेश में पर्यटन विकास को गति देने के लिए नवीन पर्यटन नीति लायी जायेगी। साथ ही राजस्थान पर्यटन विकास बोर्ड का गठन करते हुए **Rajasthan Tourism Infrastructure and Capacity Building Fund (RTICF)** बनाया जायेगा। इसके अन्तर्गत 2 वर्षों में 20 प्रमुख पर्यटन स्थलों पर विभिन्न विकास कार्य करवाये जायेंगे।

✦ **UNESCO Heritage Site**- जयपुर के परकोटा क्षेत्र एवं स्मारकों के लिए **Jaipur Walled City Heritage Development Plan** बनाकर **100 करोड़ रूपये** के कार्य करवाये जायेंगे।

✦ **Lesser Known Tourism Site**- रामगढ़ क्रेटर साइट-**बारां,** सांभर झील क्षेत्र-**जयपुर** एवं झामरकोटड़ा व जावर-**उदयपुर** को विकसित करने पर **30 करोड़ रूपये** व्यय किये जायेंगे।

✦ **अयोध्या** एवं **काशी** विश्वनाथ की तर्ज पर **खाटूश्याम जी** (सीकर) को भव्यता प्रदान करने के लिए **100 करोड़ रूपये** राशि का प्रावधान कर कार्य करवाये जायेंगे।

➢ निम्न पर्यटन स्थलों को **Eco-Tourism Site** के रूप में विकसित किया जायेगा- **बस्सी अभयारण्य, सांभर झील, शेरगढ़ अभयारण्य, खींचन कंजर्वेशन रिजर्व, मनसा माता कंजर्वेशन रिजर्व**

पुरस्कार एवं सम्मान-

➢ वर्ष 2023 व 2024 में राजस्थान को पर्यटन के क्षेत्र में राजस्थान को निम्न पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए-

✦ **कॉर्डेनास्ट रीडर्स च्वाइस अवॉर्ड, 2023**- राजस्थान पर्यटन निगम की प्रदेश में चलने वाली शाही ट्रेन **'पैलेस ऑन व्हील्स'** को दुनिया की **दूसरी सर्वश्रेष्ठ** लक्जरी ट्यूरिस्ट ट्रेन का खिताब मिला है।

✦ **बेस्ट डोमेस्टिक डेस्टिनेशन स्टेट अवॉर्ड, 2023**- ट्रेवल प्लस लीजर की ओर से दिसम्बर, 2023 में इंडियाज बेस्ट अवॉर्ड 2023 प्रदान किए गए, जिसमें राजस्थान को **'बेस्ट डोमेस्टिक डेस्टिनेशन स्टेट अवॉर्ड'** प्रदान किया गया।

✦ **टूरिज्म एण्ड सर्वे अवॉर्ड, 2023** - फरवरी 2023 में नई दिल्ली में राजस्थान को बेस्ट **'इमर्जिंग डेस्टिनेशन और मॉस्ट सीनिक रोड़'** अवॉर्ड के लिए चुना गया।

- इण्डिया टुडे ग्रुप ने विभिन्न मानकों के आधार पर राजस्थान को इन पुरस्कारों के लिए चुना है। देश की सबसे दर्शनीय सडकों की श्रेणी में **'उदयपुर से जोधपुर'** सड़क को अवॉर्ड मिला है।

✦ **बेस्ट विलेज ट्यूरिज्म** - विश्व पर्यटन दिवस, 2023 पर भारत मण्डपम् में केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय द्वारा उदयपुर के **मेनार गाँव** को **'बेस्ट विलेज ट्यूरिज्म'** का सिल्वर एवं करौली जिले के **नौरंगाबाद गाँव** को कांस्य पदक प्रदान किया गया।

✦ ट्रेवल लीजर इण्डियाज बेस्ट अवॉर्ड, 2023 नई दिल्ली में- **18 दिसम्बर, 2023** को **'बेस्ट डोमेस्टिक स्टेट'** अवॉर्ड।

✦ **23, दिसम्बर, 2023** को कोन्डेनास्ट रीडर्स ट्रेवल अवॉर्ड, 2023 द्वारा राजस्थान पर्यटन को **'फेवरेट इण्डियन स्टेट फॉर रोड ट्रिप्स'** अवॉर्ड दिया गया।

✦ **23, दिसम्बर, 2023** को कोन्डेनास्ट रीडर्स ट्रेवल अवॉर्ड, 2023 द्वारा राजस्थान पर्यटन को **'फेवरेट लीजर डेस्टीनेशन इन इण्डिया'** अवॉर्ड दिया गया।

✦ ओ.टी.एम. मुम्बई में **10 फरवरी, 2024** को **'डेकोरेशन एण्ड डिजाइन'** अवॉर्ड।

✦ **इण्डियन रेस्पोन्सीबल टूरिज्म स्टेट सम्मिट एण्ड अवार्ड्स**- रेस्पोन्सीबल एण्ड सस्टेनेबल पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए **26 फरवरी, 2024** को **जयपुर** में इस सम्मिट का आयोजन किया गया। जिसमें उत्कृष्ट कार्य करने वाले **17 होटलों,** गेस्ट हाऊसों, होमस्टे, ट्रेवल एजेन्सियों/ऑपरेटरों आदि को सम्मानित किया गया।

राजस्थान की प्रमुख सफारी

बैलून सफारी- बूँदी।
लॉयन सफारी- नाहरगढ़ (जयपुर)
केमल सफारी- सम गाँव (जैसलमेर)
टाईगर सफारी- रणथम्भौर व सरिस्का।
होर्स सफारी- पुष्कर (अजमेर)
एलिफेन्ट सफारी- आमेर (जयपुर)
वॉटर सफारी- चम्बल नदी (कोटा)
डंकी सफारी- शेखावाटी।
बाईसिकल सफारी- केवलादेव (भरतपुर)

20 राजस्थान में परिवहन के साधन

➢ सामान्यतः परिवहन के 4 प्रकार होते हैं-
1. सड़क परिवहन 2. रेल परिवहन
3. वायु परिवहन 4. पाइप लाईन परिवहन

❖ सड़क परिवहन-

✦ क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान देश का **सबसे बड़ा राज्य** है। पिछले कुछ वर्षो में राजस्थान में सड़कों व राष्ट्रीय राजमार्गो का पर्याप्त विकास हुआ है। प्रशासनिक दृष्टि से राजस्थान वर्तमान में 50 जिलों, 426 तहसीलों व 365 विकास खण्ड़ों में विभक्त है।

✦ विश्व में सड़क निर्माण की कला का सर्वप्रथम आविष्कार **जॉन मेंकाडम (स्कॉटलैण्ड)** ने किया था।

✦ **सड़क निर्माता**- अफगान बादशाह **शेरशाह सूरी** को सड़क निर्माता कहा जाता है, जिसने बंगाल के ढाका से वाराणसी, आगरा, दिल्ली होते हुये लाहौर और वहाँ से क्वेटा (पाकिस्तान) तक **ग्रांड ट्रंक रोड़** बनवाई।

✦ 1949 में राजस्थान में **सड़कों की कुल लम्बाई** 13,553 कि.मी. थी। उस समय सड़कों का घनत्व **3.96 कि.मी.** प्रति 100 वर्ग कि. मी. था।

✦ वर्तमान में वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार कुल 43264 गाँवों में से 31 मार्च, 2023 तक **39,448 गाँव (91.17%)** सड़कों से जुड़ चुके हैं, कुल 11281 ग्राम पंचायतों में से **11266 ग्राम पंचायत** सड़कों से जुड़ चुकी हैं। **(स्रोत-वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन, PWD, राजस्थान 2023-24 पेज नंबर- 162,163)**

31 मार्च, 2023 तक राजस्थान में सड़कों की स्थिति-	
सड़क का प्रकार	**31 मार्च, 2023 तक लम्बाई**
राष्ट्रीय राजमार्ग	10790 किमी
राज्य राजमार्ग	17349 किमी
मुख्य जिला सड़कें	14173 किमी
अन्य जिला सड़कें	67952 किमी
ग्रामीण सड़कें	191547 किमी
कुल योग	301811 किमी

स्रोत- वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन 2023-24, PWD, राजस्थान

✦ राजस्थान में **सार्वजनिक निर्माण विभाग की डामर सड़कों की सर्वाधिक लम्बाई वाला जिला** - **बाड़मेर (12934 कि.मी.)** **जोधपुर** (12113 कि.मी.)

✦ राजस्थान में **सार्वजनिक निर्माण विभाग की डामर** सड़कों की **न्यूनतम लम्बाई वाला जिला**- **सिरोही (2363 कि.मी.)** **धौलपुर** (2427 कि.मी.)

(स्रोत-वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन, PWD राजस्थान 2023-24, पेज नंबर- 85)

✦ राजस्थान में सड़कों से जुड़े **सर्वाधिक गाँव वाला जिला**- **गंगानगर (2209 गाँव),** **उदयपुर** (2172 गाँव)

✦ राजस्थान में सड़कों से जुड़े **न्यूनतम गाँव वाला जिला**- **सिरोही (458 गाँव),** **जैसलमेर** (591 गाँव)

✦ सड़कों से जुड़े **सर्वाधिक ग्राम पंचायत मुख्यालयों वाला जिला**- **बाड़मेर (685 ग्रा.पं.),** **उदयपुर** (647 ग्रा.पं.)

✦ सड़कों से जुड़े **न्यूनतम ग्राम पंचायत मुख्यालयों वाला जिला** - **कोटा (156 ग्रा.पं.),** **सिरोही** (169 ग्रा.पं.)

(स्रोत- वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन, सार्वजनिक निर्माण विभाग, राजस्थान 2023-24 पेज नं. 162,163)

✦ मार्च 2023 तक **राजस्थान में सड़क** घनत्व- **88.19 किमी.** /100 वर्ग किमी

✦ **राष्ट्रीय स्तर** पर सड़क घनत्व- **165.24 किमी.**
(स्रोत- Basic Road Statistics Of India, 2018-19)

✦ राजस्थान में सड़क घनत्व प्रति लाख व्यक्ति- **440.28 किमी** (2011 की जनगणना के अनुसार)
(स्रोत- वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन, PWD, राजस्थान 2023-24)

राष्ट्रीय राजमार्ग

✦ इनका संचालन **केन्द्र सरकार** द्वारा किया जाता है एवं निर्माण व रखरखाव का कार्य **'भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण' (NHAI)** करता है, राष्ट्रीय राजमार्ग देश की कुल सड़क संबंधी माँग की 40 प्रतिशत आवश्यकता को पूरा करते हैं। जो मुख्यतः बंदरगाहों, विदेशी राजमार्ग, राज्य व केन्द्रशासित प्रदेशों की राजधानियों, बड़े औद्योगिक व पर्यटन केन्द्रों तथा सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों को आपस में जोड़ते हैं।

✦ राजस्थान में वर्तमान में **राष्ट्रीय राजमार्गो** की संख्या- **50**

☞ **नोट**- राजस्थान में राष्ट्रीय राजमार्गो की संख्या 50 ही है, **PWD** विभाग के वार्षिक प्रतिवेदन रिपोर्ट 2023-24 में NH की सूची में 54 क्रमांक तक दिए गए हैं। इनमें 4 NH को रिपीट (NH 25, NH 58, NH 162, NH 552) लिखा गया है।

✦ राजस्थान में NH की कुल लम्बाई- **10790 कि.मी.**

✦ भारत में NH की **सर्वाधिक लम्बाई वाला राज्य** - **महाराष्ट्र** (18459 KM)
द्वितीय स्थान- **उत्तरप्रदेश** (12270 कि.मी.)
तीसरा स्थान- **राजस्थान (10790 किमी)**

✦ भारत में NH की **न्यूनतम लम्बाई वाला राज्य**-**गोवा**(299 KM)
द्वितीय न्यूनतम **लम्बाई वाला राज्य**- **सिक्किम** (709 KM)

✦ राजस्थान में प्रति 1000 वर्ग कि.मी. पर राष्ट्रीय राजमार्ग की औसत लम्बाई **34.2 कि.मी.** है तथा प्रति 1 लाख जनसंख्या पर राष्ट्रीय राजमार्गो की लम्बाई **15.74 कि.मी.** है।
(स्रोत-Annual Report, 2022-23 NHAI)

- इस नीति के अंत तक पंजीकृत होने वाले श्रेणीवार नए वाहनों में से **15%** दुपहिया इलेक्ट्रिक वाहनों, **30%** तिपहिया इलेक्ट्रिक वाहनों तथा **5%** चौपहिया इलेक्ट्रिक वाहनों के पंजीयन का लक्ष्य रखा गया है।
- राजस्थान में पिछले एक दशक में पंजीकृत वाहनों की संख्या 125% बढ़कर मार्च 2021 के अन्त में 2.02 करोड़ हो गयी है।
- वर्ष 2022 तक प्रत्येक 1 हजार गैर-विद्युत वाहनों पर 25 विद्युत वाहन (EV) बेचे गये हैं।

सड़क विकास में कार्यरत विभिन्न संस्थाएँ

➢ **सीमा सड़क संगठन (BRO)**- मई 1960 में।
- यह संगठन **रक्षा मंत्रालय के अधीन** कार्य करता है इसका मुख्यालय **दिल्ली** में है। अन्तर्राष्ट्रीय सीमावर्ती जिलों में सड़कों का निर्माण का कार्य करता है यह संगठन 18 परियोजनाएँ चला रहा है।

➢ **राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम (RSRTC)**- इसकी स्थापना **1 अक्टूबर 1964** को सड़क परिवहन निगम अधिनियम 1950 के अधीन की गई थी। मुख्यालय- **जयपुर**।
- **RSRTC** राजस्थान में राजकीय बस सेवा (रोड़वेज) संचालन का कार्य करती है।

➢ **राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड** - 1974, जयपुर।
- यह संस्था कृषि मंडियों को गाँवों से जोड़ने के लिए सड़कों का निर्माण व मरम्मत का कार्य करती है।

➢ **राजस्थान राज्य सड़क विकास एवं निर्माण निगम लिमिटेड (RSRDC)- Rajasthan State Road Development and Construction corporation Ltd**- 8 फरवरी, 1979 को **'राजस्थान स्टेट ब्रिज लिमिटेड'** के नाम से इस कंपनी की स्थापना की गई थी। 19 जनवरी, 2001 को इसका नाम 'राजस्थान राज्य सड़क विकास एवं निर्माण निगम लिमिटेड' कर दिया गया। इसका मुख्य कार्य राजस्थान में सड़कों, भवनों व पुलों का निर्माण करना है।

➢ **राष्ट्रीय कृषि व ग्रामीण विकास बैंक (NABARD)**- 12 जुलाई, 1982 को स्थापना, इसका प्रधान मुख्यालय- **मुम्बई**। विभिन्न राज्यों व केन्द्रशासित प्रदेशों में 31 क्षेत्रीय कार्यालय संचालित हैं। यह कृषि व ग्रामीण क्षेत्र के विकास व आधारभूत विकास के लिए सड़कों का निर्माण करता है।

➢ **भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI)**- 1988
- राष्ट्रीय राजमार्ग व एक्सप्रेस वे का निर्माण व रख रखाव का कार्य करने वाली संस्था है। इसकी स्थापना भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण अधिनियम 1988 के अन्तर्गत फरवरी **1995** में की गई है। इस प्राधिकरण के वर्तमान प्रमुख **संतोष कुमार यादव (IAS)** हैं।

➢ **रिडकोर (Road Infrastructure Development Company Of Rajasthan) अक्टुबर 2004** में। राजस्थान सरकार व **आई. एल. और एफ. एस.** की 50:50 की भागीदारी से गठित कम्पनी है।
- मुख्यालय- **जयपुर**। वर्तमान में इस कम्पनी द्वारा मेगा हाईवे परियोजनाओं का संचालन किया जा रहा है।

✦ **आई. एल. एण्ड एफ. एस. (Infrastructure Lezing and financial services)**- का गठन **1987 में** निजी क्षेत्र में किया गया था।

✦ **राजस्थान राज्य बस टर्मिनल विकास प्राधिकरण-**
- राजस्थान विधानसभा द्वारा अप्रैल 2015 में अधिनियम बनाकर इसकी स्थापना की गई है। 1 जुलाई, 2015 से इस अधिनियम को लागू किया गया। इस प्राधिकरण का गठन **25 अगस्त, 2015** को किया गया। **1 अध्यक्ष व 10 सदस्य** होंगे। इस प्राधिकरण का कार्य राजस्थान के **बस टर्मिनलों को आधुनिक बनाना** है।

✦ **Centre of Excellence for Road and Building Construction-** बजट 2023-24 में कम लागत में उच्च गुणवत्ता के सड़क एवं भवन निर्माण संबंधी अनुसंधान के लिए **जयपुर** में इसकी स्थापना की घोषणा की गई।

✦ **इंस्टीट्युट ऑफ ड्राइविंग ट्रेनिंग एंड रिसर्च - रेलमगरा** (राजसमंद) भारत सरकार के सहयोग से कुशल चालक तैयार करने व चालकों को प्रशिक्षण देने के लिए खोला गया है।

बजट घोषणा 2024-25

✦ **इलेक्ट्रिक बसें-** जीवाश्म ईंधन की बचत के लिए पब्लिक ट्रांसपोर्ट में इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने के लिए इंटर स्टेट के साथ-साथ **जयपुर, जोधपुर, उदयपुर व कोटा** जैसे बड़े शहरों में **1000 इलेक्ट्रिक बसें** उपलब्ध करायी जायेंगी।

✦ **रोडवेज किराये में छूट-** प्रदेश के 60 से 80 वर्ष तक के आयु के **वरिष्ठ नागरिकों** को राज्य की सीमा में रोड़वेज बसों में दी जा रही वर्तमान छूट 30 प्रतिशत से बढ़ाकर **50 प्रतिशत** की जायेगी।

- **सड़क निर्माण-** प्रदेश में 5 वर्षों में **53 हजार किलोमीटर** लम्बाई की सड़कों का निर्माण **लगभग 60 हजार करोड़ रूपये** का व्यय कर विकसित किया जाएगा।

✦ **Public Transport System-** प्रदेश में आमजन को सस्ती, सुरक्षित एवं आधुनिकतम यातायात सुविधा उपलब्ध कराने हेतु राजस्थान रोडवेज द्वारा आगामी **दो वर्षों** में **500 बसें** क्रय करने के साथ ही **800** और बसें सर्विस मॉडल पर ली जायेगी, जिनमें **300 इलेक्ट्रिक** बसें भी शामिल की जायेगी।

- शहरी ट्रांसपोर्ट सेवाओं के विस्तार एवं सुदृढ़ीकरण के लिए **जयपुर, जोधपुर, अजमेर, उदयपुर, भरतपुर, कोटा** एवं **बीकानेर** शहरों में **City Transport** के लिए चरणबद्ध रूप से **GCC मॉडल** आधारित **300 इलेक्ट्रिक** बसें क्रय की जाएगी। ई-बसों के सुगम संचालन हेतु **25 करोड़ रूपये** व्यय कर **Modern Shelter cum Charging Stations** स्थापित किए जायेंगे।

✦ **ITMS-** पीएम गति शक्ति योजना के अन्तर्गत जयपुर-दिल्ली (NH-48) एवं जयपुर-भरतपुर (NH-21) राजमार्गों के साथ ही **4 स्टेट हाइवे** पर Intelligent Traffic Management System लागू किया जायेगा।

वायु परिवहन

- वायु परिवहन **संघ सूची** का विषय है अतः इसके विकास एवं विस्तार की पूर्ण जिम्मेदारी केन्द्र सरकार के हाथों में होती है। 1 अगस्त, 1953 को **वायु परिवहन** का **राष्ट्रीयकरण** किया गया।
- राजस्थान में सर्वप्रथम फ्लाइंग क्लब- **जोधपुर,** 1929 में, **महाराजा उम्मेदसिंह** ने प्रारम्भ किया।
- **एयरफोर्स फ्लाईग कॉलेज** - जोधपुर,
- **नागर विमानन निगम**- इसकी स्थापना राजस्थान सरकार द्वारा 20 दिसम्बर, 2006 को की गयी।
- वर्तमान में राजस्थान में हवाई पट्टियाँ- **22**
- वर्तमान में राजस्थान में हवाई अड्डे- **10** (4 नागरिक एवं 6 सैन्य हवाई अड्डे व 2 प्रस्तावित है)

❖ राजस्थान के हवाई अड्डे

- **सांगानेर हवाई अड्डा**- जयपुर, राजस्थान का **पहला** व देश का **14 वां** अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है।
  - यह **भारतीय विमानपत्तन प्राधिकर**ण **(AAI)** के अधीन है।
  - यहाँ से फरवरी 2002 को पहली **अन्तर्राष्ट्रीय उड़ान दुबई** के लिए उड़ी थी। हवाई अड्डे को **अंतर्राष्ट्रीय दर्जा** 29 दिसम्बर, 2005 को तथा अधिसूचना **फरवरी 2006 में** जारी की गई थी।
  - **4जी वाई-फाई सुविधा** देने वाला यह देश का पहला एयरपोर्ट है।

☞ **नोट**- जयपुर हवाई अड्डे को अडानी ग्रुप को लीज पर दिया गया है।

- **यह हवाई अड्डा पूर्णतया सौर ऊर्जा से विद्युतीकृत है।**
- **जयपुर** अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के **Terminal Capacaity 50 लाख** से बढ़ाकर **70 लाख** यात्री प्रति वर्ष की जायेगी।

- **महाराणा प्रताप हवाई अड्डा - डबोक (उदयपुर)**
- **कोटा हवाई अड्डा**- कोटा, 18 अगस्त, 2017 को यहाँ से जयपुर के लिए हवाई सेवा प्रारम्भ की गई।
- **ग्रीन फिल्ड एयरपोर्ट कोटा**- राजस्थान सरकार ने जुलाई 2021 में केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्रालय को ग्रीन फिल्ड एयरपोर्ट बनाने के लिए **शम्भुपुरा (कोटा)** में 1250 एकड़ भूमि निःशुल्क आंवटित की है।
  - यह राजस्थान का पहला ग्रीन फिल्ड एयरपोर्ट होगा।
- **किशनगढ़ हवाई अड्डा - किशनगढ़** (अजमेर)
  यह हवाई अड्डा एयरपोर्ट ऑथोरिटी ऑफ इण्डिया के अधीन है। 11 अक्टुबर, 2017 को इसका उदघाटन हुआ। व्यावसायिक उड़ानें 1 अप्रैल, 2019 (किशनगढ़- अहमदाबाद) को शुरू की गई।
  यह राजस्थान का **नवीनतम हवाई अड्डा** है।
- **सूरतगढ़ हवाई अड्डा - सूरतगढ़** (गंगानगर)
  यह भूमिगत हवाई अड्डा है। **भारतीय वायुसेना** के अधीन है।
- **नाल हवाई अड्डा - बीकानेर**
  यह भूमिगत हवाई अड्डा है। **भारतीय वायुसेना** के अधीन है। अब यहाँ से नागरिक उड़ानें भी संचालित हो रही है।
- **जैसलमेर हवाई अड्डा - जैसलमेर**
  भारतीय वायुसेना के अधीन है, यहाँ **भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण** ने नया टर्मिनल बनाया है। सितम्बर 2017 से यहाँ से हवाई सेवायें शुरू कर दी गई हैं।
- **उत्तरलाई हवाई अड्डा - बाड़मेर**
  यह हवाई अड्डा **भारतीय वायुसेना** के अधीन है। रक्षा मंत्रालय ने इस एयरफोर्स स्टेशन को नागरिक हवाई अड्डा बनाने की मंजूरी दी है। यह राज्य का **आठवाँ सिविल एयरपोर्ट** होगा।
- **रातानाड़ा हवाई अड्डा - जोधपुर। भारतीय वायुसेना** के अधीन है यहाँ से भी नागरिक उड़ानें संचालित होती हैं।
- **फलौदी हवाई अड्डा** - फलौदी
  भारतीय वायुसेना के अधीन है।
- **कोटकासिम** (खैरथल-तिजारा)- में दिल्ली मुम्बई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर के तहत यहाँ **ग्रिनफिल्ड एयरपोर्ट** बनाया जाना प्रस्तावित है।
- **कोलाना (झालावाड़)** में हवाई अड्डा बनाया जाना प्रस्तावित है।

☞ **नोट**- इनमें से 7 **हवाई अड्डों (जयपुर, जोधपुर, कोटा, बीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर, किशनगढ़) को** व्यावसायिक हवाई अड्डों की श्रेणी में रखा जाता है यहाँ से नागरिक उड़ाने संचालित की जा रही हैं।

- राजस्थान के कुल **22 हवाई पट्टियों** में से **4 हवाई पट्टी** निजी क्षेत्र की हैं
  1. **कांकरोली** (जे.के. ग्रुप) 2. **पिलानी** (बिड़ला ग्रुप)
  3. **वनस्थली, टोंक** (वनस्थली विद्यापीठ) 4. **बारां** (अडानी ग्रुप)
  शेष **18 हवाई पट्टियाँ** राज्य सरकार के अधीन हैं।
- **रीजनल कनेक्टिविटी स्कीम (उड़ान)- केन्द्र सरकार** की इस योजना के तहत **विभिन्न एयरलाइन्स** को आमंत्रित कर राजस्थान के प्रमुख शहरों को **हवाई सम्पर्क सेवा शुरू** की जा रही है।

☞ **यह भी जानिए-**

- **ग्रीन फील्ड हवाई अड्डा**- जब पुराने हवाई अड्डे से दूर नए स्थल पर नवीन हवाई अड्डे का निर्माण किया जाता है तो उसे **'ग्रीन फील्ड हवाई अड्डा'** कहा जाता है। इसका निर्माण तब किया जाता है जब पुराने हवाई अड्डे में विस्तार द्वारा यातायात को सुगम बनाने की संभावना नहीं रह जाती है।
- यहाँ ग्रीन फील्ड परियोजना ऐसी परियोजनाओं को कहा जाता है जो बिल्कुल नए रूप में शुरू की गई हों, तथा उन पर पहले से किए गए कार्य का कोई प्रभाव नहीं हो। भारत के प्रमुख ग्रीन फील्ड हवाई अड्डे है जैसे कि राजीव गाँधी अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डा (शमशाबाद) हैदराबाद व बंगलुरू अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा (देवनहल्ली) है।

- **हेलीकॉप्टर जॉयराइड**- राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) द्वारा प्रायोगिक तौर पर 'हेलीकॉप्टर जॉयराइड' की शुरुआत **सम** (जैसलमेर) से की जा रही है।
- **उड़ान प्रशिक्षण अकादमी** - किशनगढ़
  - एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इण्डिया की FTO यानी **उड़ान प्रशिक्षण संगठन नीति** के तहत यहाँ नई फ्लाइंग ट्रेनिंग एकेडमी खुलेगी।

21 राजस्थान की जनगणना–2011

- भारत में सबसे पहले मौर्य काल के प्रसिद्ध ग्रन्थ कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में उस समय के जन्म मृत्यु के आँकड़े रखे जाने का प्रमाण मिलता है, यह भारत में जनगणना के सम्बन्ध में **प्रथम लिखित प्रमाण** है। इसके बाद में अबुल फजल द्वारा लिखित 'आईने अकबरी' में भी जनगणना का उल्लेख मिलता है।
- जनगणना से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर सरकार आगामी **दस वर्षों** की नीतियों व योजनाओं का निर्माण करती है। जनगणना जनसंख्या सम्बन्धी आँकड़ों का प्रमुख स्रोत है इससे सूक्ष्म स्तर पर ग्राम एवं ढाणी तक की जानकारी मिल जाती है। सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धर्म, मातृभाषा, राज्य, जिला, तहसील, नगर, गाँव आदि के **आधारभूत आँकड़े** जनगणना के माध्यम से ही प्राप्त होते हैं।
- भारत में सबसे पहले जनगणना– 1872 ई. में लार्ड मेयो के काल में हुई थी।
- परन्तु प्रथम व्यवस्थित जनगणना– 1881 ई. में लार्ड रिपन के समय।
- राजस्थान में भी जनगणना 1872 ई. में ब्रिटिश शासनकाल में ही प्रारम्भ हो गयी थी परन्तु यह अव्यवस्थित व अनियमित थी।
- मुहणौत नैणसी की पुस्तक 'मारवाड़ रा परगना री विगत' में उस समय की **मारवाड़ रियासत** के प्रत्येक गाँव की जनसंख्या का विवरण दिया गया है इसी कारण मुहणौत नैणसी को 'राजस्थान में जनगणना का 'अग्रज' कहा जाता है।
- ध्यान रहे– जनगणना संघ सूची का विषय है।
- मार्च 2011 में हुई जनगणना भारत की 15वीं जनगणना थी।
  स्वतंत्रता के पश्चात– 7वीं जनगणना थी।

जनसंख्या (Population)

- राजस्थान की **कुल जनसंख्या**– 6.86 करोड़ (6,85,48,437)
  भारत की जनसंख्या का– 5.67%
- राजस्थान की जनसंख्या विश्व की जनसंख्या का लगभग 1.6% है। राजस्थान की जनसंख्या थाईलैण्ड (6.90 करोड़), फ्रांस (6.71 करोड़) के लगभग बराबर है।
- **जनसंख्या की दृष्टि से राजस्थान का स्थान** – 7 वाँ
- ध्यान रहे– 2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या की दृष्टि से राजस्थान का 8वाँ स्थान था, लेकिन जून 2014 में आन्ध्रप्रदेश से तेलंगाना पृथक होने से राजस्थान का 7 वाँ स्थान हो गया है।
- राजस्थान का **सर्वाधिक जनसंख्या वाला जिला** – जयपुर (66.26 लाख)
- जो राजस्थान की कुल जनसंख्या का **9.67%** है।
- जनसंख्या की दृष्टि से **पाँच सबसे बड़े जिले**–
  जयपुर (66.26 लाख)
  जोधपुर (36.87 लाख) अलवर (36.74 लाख),
  नागौर (33.07 लाख), उदयपुर (30.68 लाख)
- राजस्थान का **न्यूनतम जनसंख्या वाला जिला** – जैसलमेर (6.7 लाख),जो राजस्थान की कुल जनसंख्या का 0.98% है।
- जनसंख्या की दृष्टि से **पाँच सबसे छोटे जिले**–
  जैसलमेर (6.70 लाख)
  प्रतापगढ़ (8.68 लाख, सिरोही (10.36 लाख)
  बूँदी(11.11 लाख), राजसमंद (11.57 लाख)

राजस्थान की जनगणना का एक तुलनात्मक अध्ययन

	2001 की जनगणना	2011 की जनगणना	राजस्थान का स्थान	अंतर
कुल जनसंख्या	5,65,07,188	6,85,48,437	7वाँ	1,20,41,249
		पुरूष– 3,55,50,997		
		महिला– 3,29,97,440		
जनसंख्या वृद्धि दर	28.4%	21.3%	8 वाँ (मणिपुर की संशोधित जनगणना जारी होने के बाद 9वां स्थान)	7.10 की कमी
लिंगानुपात	921	928	22 वाँ	7 की वृद्धि
जनघनत्व	165	200	19 वाँ	35 की वृद्धि
0–6 आबादी	1,06,51,002	1,06,49,504 (15.54%)	--	
0–6 लिंगानुपात	909	888	25 वाँ	21 की कमी
साक्षरता	60.41%	66.11%	26वाँ	5.70 की वृद्धि
पुरूष साक्षरता	75.7%	79.20%	19वाँ	3.5 की वृद्धि
महिला साक्षरता	43.9%	52.12%	27वाँ	8.22 की वृद्धि

बाँसवाड़ा (10.8%)

✦ राजस्थान के दो जिलों में **कमी आयी**– बाड़मेर (-2.5%)
चूरू (-0.8%)

❖ पुरुष साक्षरता –

✦ पुरुष साक्षरता की दृष्टि से **राजस्थान का स्थान**– 19वाँ

☞ **नोट**– 1951 में राजस्थान की पुरुष साक्षरता **13.88%** थी, जो 2011 में **79.20%** हो गई है।

✦ **सर्वाधिक पुरुष साक्षरता** वाले जिले– झुंझुनूं (86.9)
कोटा (86.3)
जयपुर (86.1)
सीकर (85.1)
भरतपुर (84.1)

✦ **न्यूनतम पुरुष साक्षरता** वाले जिले– प्रतापगढ़ (69.5)
बाँसवाड़ा (69.5)
सिरोही (70.0)
जालौर (70.7)
बाड़मेर (70.9)

❖ महिला साक्षरता–

✦ **महिला साक्षरता की दृष्टि से राजस्थान का स्थान** – 27वाँ

✦ ध्यान रहे– **बिहार** महिला साक्षरता में देशभर में सबसे निचले पायदान पर है, राजस्थान का देश में नीचे से दूसरा स्थान है।

☞ **नोट**– 1951 में राजस्थान की महिला साक्षरता **2.66%** थी, जो 2011 में **52.12%** हो गई है।

✦ सर्वाधिक महिला साक्षरता वाले जिले– कोटा (65.9%)
जयपुर (64.0%)
झुंझुनूं (61.0%)
गंगानगर (59.7%)
सीकर (58.2%)

✦ न्यूनतम महिला साक्षरता वाले जिले– जालौर (38.5%)
सिरोही (39.7%)
जैसलमेर (39.7%)
बाड़मेर (40.6%)
प्रतापगढ़ (42.4%)

कार्यशील जनसंख्या–

✦ राजस्थान में कार्य सहभागिता दर– **43.60%**

✦ भारत में कार्य सहभागिता दर– **39.8%**

✦ कार्यशील **जनसंख्या (कार्य सहभागिता दर) के प्रतिशत की दृष्टि** से राजस्थान का देश में स्थान– 11वाँ

✦ **सर्वाधिक कार्यशील जनसंख्या** वाला जिला– जयपुर

✦ **न्यूनतम कार्यशील जनसंख्या** वाला जिला– जैसलमेर

✦ सर्वाधिक कार्यशील जनसंख्या प्रतिशत वाला जिला– प्रतापगढ़ (55.50%), चित्तौडगढ़ (52.0%), बाँसवाड़ा (51.0%)

✦ न्यूनतम कार्यशील जनसंख्या प्रतिशत वाला जिला– जयपुर (37.20%) द्वितीय स्थान– सीकर (37.60%) कोटा (38.40%)

✦ राज्य जनसंख्या नीति – 20 जनवरी, 2000, **वी.एस. व्यास समिति** की रिपोर्ट के आधार पर **मुख्यमंत्री अशोक गहलोत** द्वारा राजस्थान की प्रथम जनसंख्या नीति 20 जनवरी, 2000 को जारी की गयी। राजस्थान आन्ध्रप्रदेश के बाद दूसरा राज्य है जिसने स्वयं की जनसंख्या नीति घोषित की है। (**स्रोत–आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट, 2021-22**)

❖ जीवन प्रत्याशा रिपोर्ट – भारत के महापंजीयक और जनगणना आयुक्त कार्यालय के नमूना पंजीकरण प्रणाली **(Sample Registration System)** द्वारा यह रिपोर्ट जारी की गई है।

● इस रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2015- 2019 के दौरान जन्म के समय राजस्थान की जीवन प्रत्याशा 69.0 वर्ष रही। वर्ष 2016-20 के दौरान जन्म के समय राजस्थान की जीवन प्रत्याशा 69.4 वर्ष हो गई है।

● वहीं 1970-75 में राजस्थान की जन्म के समय जीवन प्रत्याशा 48.4 वर्ष थी।

स्वास्थ्य सूचक राजस्थान

वर्ष	2019	2020
अशोधित जन्म दर*	23.7	23.5
अशोधित मृत्यु दर**	5.7	5.6
शिशु मृत्यु दर#	35	32

* प्रति हजार मध्यवर्षीय जनसंख्या में जीवित जन्मों की संख्या
** प्रति हजार मध्यवर्षीय जनसंख्या में मृत्युओं की संख्या
# प्रति हजार जीवित जन्मों में शिशु मृत्युओं की संख्या

मातृ मृत्यु दर (एमएमआर) संकेतक

क्र.सं.	संकेतक	राजस्थान	
		एसआरएस (2017–19)	एसआरएस (2018–20)
1.	मातृ मृत्यु दर (एमएमआर) (प्रति लाख जीवित जन्म)	141	113

स्रोत– आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2023–24

प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुये महत्वपूर्ण प्रश्न

1. जनगणना 2011 के अनुसार, राजस्थान में कितने जिलो में 30% से अधिक जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर दर्ज की गई?
5/3/2/4
2 (असिस्टेंट प्रोफेसर भूगोल–2024)

2. सूची–I को सूची–II से सुमेलित कीजिये तथा सही उत्तर का चयन नीचे दिये कूट से कीजिये–

(जिला)	(जिले की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जाति–2011 जनगणना (प्रतिशत))
a. करौली	i. 17.77
b. बीकानेर	ii. 21.87
c. भरतपुर	iii. 20.88
d. अलवर	iv. 24.31

a-iv, b-iii, c-ii, d-i (असिस्टेंट प्रोफेसर भूगोल–2024)

22 क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम

❖ मुख्यमंत्री क्षेत्रीय विकास योजना-

- यह योजना वर्ष 2022 में यह योजना प्रारंभ की गयी है।
- योजनान्तर्गत प्रदेश के **दुर्गम, दूरस्थ** एवं **पिछड़े** सहित राज्य के संपूर्ण क्षेत्र में व्यवस्थित आधारभूत संरचना एवं ग्रामीण विकास के लिए प्रदेश की भौगोलिक-आर्थिक-सामाजिक स्तर पर क्षेत्रीय भिन्नताओं, आवश्यकताओं तथा संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए समग्र विकास करना है। इस योजना में कुल बजट प्रावधान 100 करोड़ रु. है।

❖ बीस सूत्री कार्यक्रम 2006 -

- बीस सूत्री कार्यक्रम की शुरुआत 1975 में की गई थी तथा वर्ष 1982, 1986, 2006 में पुनः संचरित किया गया। जो 1 अप्रैल, 2007 से लागू हुआ।
- इस कार्यक्रम का **मूल उद्देश्य** पिछड़े एवं निर्धन व्यक्तियों के जीवन स्तर में सुधार करना है।
- इस कार्यक्रम के अन्तर्गत **गरीबी हटाओ जनशक्ति**, **किसान को सहयोग,** श्रमिक कल्याण, खाद्य सुरक्षा, **सबके लिए आवास**, शुद्ध पेयजल, **जन-जन का स्वास्थ्य, सबके लिए शिक्षा**, अनुसूचित जाति, जनजाति, अल्पसंख्यक एवं अन्य पिछड़ा वर्ग कल्याण, **महिला कल्याण,** बाल कल्याण, युवा विकास, **बस्ती सुधार,** पर्यावरण संरक्षण एवं वन वृद्धि सामाजिक सुरक्षा, **ग्रामीण सड़क**, ग्रामीण ऊर्जा, पिछड़ा क्षेत्र विकास आदि बिन्दु सम्मिलित है।

❖ मगरा क्षेत्र विकास कार्यक्रम-

- राजस्थान का दक्षिणी मध्य भाग, जो कि पहाड़ी क्षेत्र से घिरा हुआ है, विशेषतः **ब्यावर, भीलवाड़ा, पाली, चित्तौड़गढ़ एवं राजसमंद** जो जनजाति क्षेत्र के अन्तर्गत नहीं आता है, **मगरा क्षेत्र** के नाम से जाना जाता है। मगरा क्षेत्र विकास कार्यक्रम 2005-06 में शुरू किया गया, जो उक्त 5 जिलों के 1746 **गाँवों** में क्रियान्वित है।
- इसका सम्पूर्ण वित्त पोषण राज्य सरकार द्वारा किया जाता है।
- **उद्देश्य**- इस क्षेत्र के निवासियों के आर्थिक एवं सामाजिक स्तर में सुधार लाना।

❖ डांग क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम-

- बीहड़ क्षेत्र तथा संकुचित घाटी युक्त दस्यु ग्रस्त क्षेत्र को **डांग क्षेत्र** के नाम से जाना जाता है।
- यह कार्यक्रम 1994-95 में राजस्थान के 8 जिलों में 21 पंचायत समितियों के 357 ग्राम पंचायतों में प्रारम्भ किया गया था।
- यह कार्यक्रम वर्ष 2005-06 से पुनः प्रारंभ किया गया है। वर्तमान में 9 जिलों (सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर, गंगापुर सिटी, कोटा, बूँदी, बारां, झालावाड़, व भरतपुर) के 2192 गाँवों में संचालित है।

➢ मुख्य उद्देश्य- इस क्षेत्र का आर्थिक-सामाजिक विकास करना, डाकुओं से मुक्ति दिलाना व पर्यावरण का विकास करना।
स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2023-24

❖ सीमान्त क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम (BADP)-

- सातवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान भारत सरकार द्वारा एक विशेष कार्यक्रम के रूप में सीमावर्ती क्षेत्र विकास कार्यक्रम वर्ष 1993-94 से लागू किया गया। यह कार्यक्रम 100 प्रतिशत केन्द्र सरकार द्वारा वित्त पोषित है।
- प्रारम्भ यह कार्यक्रम राज्य के 4 सीमावर्ती जिलों के **16 खंडों** में क्रियान्वित था। वर्तमान में यह राज्य के 5 सीमावर्ती जिलों (बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, गंगानगर व अनूपगढ़) के 16 खंडों में क्रियान्वित किया जा रहा है।

➢ मुख्य उद्देश्य- आधारभूत ढांचे के विकास और सीमावर्ती आबादी के मध्य सुरक्षा की भावना को बढ़ावा देने के माध्यम से सीमावर्ती क्षेत्रों में संतुलित विकास को सुनिश्चित करना।
स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2023-24, राजस्थान की अर्थव्यवस्था, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

❖ मेवात क्षेत्र विकास कार्यक्रम-

- **अलवर** एवं **भरतपुर** जिले का मेव बाहुल्य क्षेत्र जो 'मेवात क्षेत्र' के नाम से जाना जाता है, उसके विकास हेतु राज्य सरकार द्वारा वर्ष 1986-87 से 'मेवात क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम' प्रारम्भ किया गया है।
- यह कार्यक्रम अलवर व भरतपुर के 14 विकास खण्डों में क्रियान्वित किया जा रहा था, वर्तमान में 3 जिलों (अलवर, भरतपुर, खैरथल-तिजारा) के 807 गाँवों में क्रियान्वित किया जा रहा है।

➢ **मुख्य उद्देश्य**- मेवात क्षेत्र के लोगों के लिए आवश्यक आधारभूत सुविधाओं तथा अतिरिक्त रोजगार के अवसरों का सृजन कर क्षेत्र के आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करना तथा मेवात क्षेत्र में रहने वाले लोगों के जीवन स्तर में गुणात्मक सुधार लाना।

❖ अरावली विकास कार्यक्रम-

- 1974-75 से प्रारम्भ, इसमें राजस्थान के 16 जिलों के 120 विकास खण्डों का 41,447 **वर्ग किमी.** व अन्य पहाड़ी क्षेत्रों का 11,786 किमी. क्षेत्र शामिल किया गया है। यह जापान के (**OECF ओवरसीज इकोनोमिक कॉर्पोरेशन फंड**) की सहायता से चलाया जा रहा है।

➢ **मुख्य उद्देश्य**- पर्यावरण संरक्षण, परिवेश सन्तुलन, मरूक्षेत्र के पूर्वी भाग में विस्तार पर नियंत्रण, वनों की कटाई पर रोक, पशुचारण पर नियंत्रण आदि।

23 राजस्थान के प्रमुख अनुसंधान केन्द्र

राजस्थान के प्रमुख अनुसंधान केन्द्र			
क्र.सं.	नाम अनुसंधान केन्द्र	स्थान	विशेष विवरण
1	केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI)	जोधपुर	इसकी स्थापना 1959 में ऑस्ट्रेलिया व यूनेस्को के सहयोग से की गई। वर्तमान में काजरी के 5 उपकेन्द्र (बीकानेर, जैसलमेर, पाली, भुज व लद्दाख) हैं। काजरी का मुख्य कार्य राजस्थान में शुष्क व अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में वनों का विकास, मरूस्थल की रोकथाम, शोध व अध्ययन का कार्य करना है।
2	शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (AFRI)	जोधपुर	इसकी स्थापना भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् द्वारा 30 जून, 1987 में जोधपुर में की गई। 1988 में इसका नाम 'आफरी' रखा गया। इसका मुख्य कार्य राजस्थान, गुजरात, दादर नगर हवेली तथा दमन दीव (केन्द्रशासित प्रदेश) में शुष्क व अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में वानिकी संबंधी अनुसंधान करना है।
3	राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान केन्द्र	सेवर (भरतपुर)	इसकी स्थापना 8वीं पंचवर्षीय योजना में 20 अक्टुबर, 1993 को की गई। फरवरी 2009 में इसका नाम बदलकर 'राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान निदेशालय' कर दिया गया है।
4	राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र	तबीजी (अजमेर)	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा 2000 में स्थापित।
5	केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र उद्यानिकी (बागवानी) अनुसंधान केन्द्र(NRCAH)	बीछवाल (बीकानेर)	स्थापना– 1993 में
6	खजूर अनुसंधान केन्द्र	बीकानेर	स्थापना– 1978 में
7	बेर अनुसंधान केन्द्र	बीकानेर	
8	राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केन्द्र	जोड़बीड़ (बीकानेर)	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् ने 'ऊष्ट्र परियोजना निदेशालय' की स्थापना 5 जुलाई, 1984 को बीकानेर में की थी। जिसे 20 सितम्बर, 1995 को क्रमोन्नत कर 'राष्ट्रीय ऊष्ट्र अनुसंधान केन्द्र' नाम दिया गया।
9	राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र	जोड़बीड़ (बीकानेर)	राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र का मुख्यालय हिसार (हरियाणा) में है, लेकिन इसका एक परिसर जोड़बीड़ (बीकानेर) में स्थित है। 1989 में बीकानेर में राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र के इस उप परिसर की स्थापना की गई।
10	कपास सुधार परियोजना केन्द्र	गंगानगर	स्थापना– 1967
11	केन्द्रीय कृषि फार्म	सूरतगढ़ (गंगानगर)	15 अगस्त, 1956 को रूस की सहायता से स्थापना। यह एशिया का सबसे बड़ा कृषि फार्म है।
12	केन्द्रीय कृषि फार्म	जैतसर (अनूपगढ़)	1962 में कनाडा की सहायता से स्थापना।
13	पश्चिम क्षेत्रीय बकरी अनुसंधान केन्द्र	अविकानगर (टोंक)	
14	भैंस प्रजनन एवं अनुसंधान केन्द्र	वल्लभनगर (उदयपुर)	राजुवास (बीकानेर) द्वारा संचालित है।
15	केन्द्रीय भेड़ व ऊन अनुसंधान केन्द्र	अविकानगर (टोंक)	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा 1962 में स्थापना।
16	मत्स्य सर्वेक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र	उदयपुर	स्थापना– 1958
17	बाजरा अनुसंधान केन्द्र	गुढ़ामालानी (बाड़मेर)	27 सितम्बर, 2023 को उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ द्वारा शिलान्यास

25 राजस्थान में जनजातियाँ

- राजस्थान का **दक्षिणी** एवं **दक्षिणी पूर्वी भाग** जनजाति बहुल क्षेत्र है। राजस्थान में मुख्यतः **भील, मीणा, गरासिया, सहरिया, कथौड़ी** व **डामोर** जनजातियाँ पायी जाती हैं। राजस्थान भारत के 4 प्रमुख जनजाति बहुल राज्यों में आता है।
- **वर्ष 2011 की जनगणना** के अनुसार राजस्थान में जनजाति की आबादी **92,38,534** है। जो राजस्थान की कुल जनसंख्या का **13.48%** है।
- जनजाति **जनसंख्या के आधार पर** राजस्थान का देश में **चौथा स्थान** है। राज्य की कुल जनसंख्या में **प्रतिशत के हिसाब** से राजस्थान का देश में **13वाँ स्थान** है।

- **नोट-** 1951 में राजस्थान में जनजाति आबादी **3.36 लाख** थी, जो राजस्थान की उस समय की कुल जनसंख्या की **2.04%** थी।

- **प्रतिशत की दृष्टि** से भारत में सर्वाधिक जनजातियाँ **मिजोरम (94.4%)** में है, तथा **जनसंख्या की दृष्टि** से सर्वाधिक जनजाति आबादी **मध्यप्रदेश** (153.1 लाख) में है।
- राजस्थान में **सर्वाधिक** जनजाति जनसंख्या वाले जिले-
  उदयपुर (15.25 लाख) **बाँसवाड़ा** (13.73लाख)
- राजस्थान में **न्यूनतम** जनजाति जनसंख्या वाले जिले-
  बीकानेर (7779) **नागौर** (10412)
- राजस्थान में प्रतिशत की दृष्टि से **सर्वाधिक जनजाति प्रतिशत** वाले जिले- **बाँसवाड़ा (76.4%), डूँगरपुर (70.8%)**
- राजस्थान में प्रतिशत की दृष्टि से **न्यूनतम जनजाति प्रतिशत** वाले जिले- **नागौर (0.3%), बीकानेर (0.3%)**
- राजस्थान में जनसंख्या की दृष्टि से **जनजातियों का क्रम-**
  मीणा (43.46 लाख), **भील** (41 लाख), **गरासिया** (3.14 लाख), **सहरिया** (1.11 लाख), **डामोर** (91.5 हजार)

❖ मीणा जनजाति-

- संख्या की दृष्टि से मीणा जनजाति **राजस्थान की सबसे बड़ी जनजाति** है। मीणा जनजाति राजस्थान के मुख्यतः **उदयपुर, सलूम्बर, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, प्रतापगढ़, दौसा, सवाईमाधोपुर, गंगापुर सिटी व करौली** जिलों में पायी जाती है।
- इनकी राजस्थान में लगभग **43,45,528** (2011 के अनुसार) आबादी है। जो राजस्थान की कुल जनजातियों का लगभग **47%** है।
- राजस्थान में **सर्वाधिक** मीणा जनजाति की संख्या वाले जिले **उदयपुर** (7,17,696), **जयपुर** (4,67,364) व **प्रतापगढ** (4,47,023) **करौली** (3,23,342) **व अलवर**(2,73,327) हैं।
  (स्रोत- जनगणना विभाग, भारत सरकार।)
- **मीणा शब्द** का शाब्दिक अर्थ **मत्स्य/मछली** होता है। मीणा जाति की उत्पत्ति भगवान **विष्णु के मत्स्यावतार** से मानी जाती है। मीणा जनजाति के लिए **मछली का माँस** खाना निषेध है। मुनि मगन सागर ने अपने ग्रन्थ **'मीणा पुराण'** में मीणा जाति को भगवान **मीन का वंशज** बताया है। मीणाओं का उल्लेख **मत्स्य पुराण** में भी मिलता है।
- आमेर रियासत में कछवाहों का शासन प्रारम्भ होने से पहले इस इलाके पर **मीणाओं का शासन** था। आमेर रियासत में नये राजा के राज्यारोहण के मौके पर **मीणा सरदार** द्वारा ही राजतिलक किया जाता था।
- **कर्नल जेम्स टॉड** ने इनका मूल निवास **'कालीखोह पर्वतमाला'** (अजमेर, आगरा के मध्य) माना है।
- मीणा जनजाति के भाट के अनुसार मीणों में **13 पाल, 32 तड़** तथा **5200 गोत्र** पाए जाते हैं।
- मीणा जनजाति की **दो उपजातियाँ** (वर्ग) है।
  1. जमींदार मीणा 2. चौकीदार मीणा
- **रावत मीणा- अजमेर जिले** में सर्वाधिक निवास करते हैं।
- **सुरतेवाल मीणा-** मीणा जाति के पुरूष द्वारा **दूसरी जाति की स्त्री** से शादी पर उत्पन्न संतान सुरतेवाल कहलाते हैं।

❖ भील जनजाति-

- भील जनजाति संख्या की दृष्टि से राजस्थान की **दूसरी बड़ी जनजाति** है। भील राजस्थान की **सबसे प्राचीन जनजाति** है।
- भील शब्द द्रविड़ भाषा के **'बील'** का अपभ्रंश है जिसका अर्थ है- **तीर कमान**। ऐसा माना जाता है कि धनुष बाण चलाने में प्रवीण होने के कारण ही सम्भवतः यह जाति **भील** नाम से प्रसिद्ध हुई।
- कुशलगढ़ स्थान पर **कुशला भील**, डूंगरपुर पर **डूंगरिया भील**, बांसवाड़ा पर **बांसिया भील** तथा कोटा पर **कोटिया भील** शासकों का शासन था।
- राजस्थान के दक्षिण क्षेत्र, दक्षिण पश्चिम क्षेत्र में भील आबादी सर्वाधिक पायी जाती है। राजस्थान के **बाँसवाड़ा, डुँगरपुर, उदयपुर, सलूम्बर, भीलवाड़ा, शाहपुरा** व **सिरोही** जिलों में भील सर्वाधिक पाये जाते हैं।
- राजस्थान में भीलों की कुल संख्या लगभग **41,00,264** है। जो राजस्थान की कुल जनजातियों का लगभग **44.3%** है।
- राजस्थान में भीलों की सर्वाधिक आबादी वाले जिले-
  बाँसवाड़ा (13,39,679) **डूँगरपुर** (6,86,981)
  उदयपुर (6,52,005) **प्रतापगढ़** (99,429)
- **भीलों की उत्पत्ति** के बारे में विभिन्न **विद्वानों के मत** निम्न प्रकार हैं-
  कर्नल टॉड ने - **वनपुत्र** (जंगली शिशु) की संज्ञा दी है।
  रिजले एवं **क्रुक** - **द्रविड़ों से उत्पत्ति**
  थॉमसन - **गुजराती**
- **रोने** ने अपनी पुस्तक **Wild Tribes of India** में भीलों का मूल स्थान **मारवाड़** बताया है।
- **जी. एस. थॉमसन** ने **'भीली व्याकरण'** नामक पुस्तक लिखी है।

❖ गरासिया जनजाति-

- राजस्थान में जनसंख्या की दृष्टि से जनजातियों में गरासिया **तृतीय स्थान** पर हैं। इनकी कुल आबादी **3,14,194** है, जो राजस्थान की कुल जनजातियों का लगभग **3.4%** है।